प्रेम से वंचित

मैं आखिरी बार रोई उसके लिए"
इस तरह कुछ तो मरा था उस दिन मेरे लिए वो,
या उसके लिए

खामोशी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Khamoshi 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-669-1

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: August 2026

समर्पण

ये किताब उन सभी प्रेमी प्रेमिकाओं को समर्पित है। जो प्यार से बहुत दूर रहना चाहते हैं। मगर जब प्यार में पड़ते हैं सीधे गहराई में पहुंच जाते हैं। अपना मान सम्मान सब एक शख्स पर न्योछावर कर देते हैं। और फिर विरह वियोग से कभी निकल नहीं पाते।

प्रस्तावना

ये कहानी एक ऐसी लड़की की है जो प्यार से दूर रहना चाहती है। फिर कोई खुद चलके उसके क़रीब आता है। उसके दिल में प्यार जगाता है। प्रेम के सागर की तह तक ले जा के "वो किसी और से प्यार करता है" ये बताता है।

सारा संसार जब एक शख्स में समेट दिया जाए। फिर उसके बिना जिया जाए। तो कैसा फील होता है?

विरह वेदना में इंसान रोज मौत से मुलाकातें करता है।

बिना किसी के सहयोग के कैसे कैसे वो खुद को संभालती है। और जीवन पथ पर आगे बढ़ती है।

लेखक परिचय

मेरा लेखन ही मेरी पहचान है। और मेरी हर कहानी में मैं मिलूंगी थोड़ी थोड़ी। ये मेरा पहला उपन्यास है। तो मुझसे आपकी ये पहली मुलाक़ात होगी। आपको मेरी ये कहानी कहीं ना कहीं अपनी जैसी लगेगी।

अगर आपको ये किताब अच्छी लगे तो बने रहिएगा मेरे साथ। हम फिर मिलेंगे साहित्य की इसी दुनिया में।

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 1

अध्याय 2 18

अध्याय 3 37

अध्याय 4 51

अध्याय 5 68

अध्याय 6 76

अध्याय 7 93

अध्याय 8 107

अध्याय 9 124

अध्याय 10 140

अध्याय 11 155

अध्याय 12 175

अध्याय 13 194

अध्याय 14 204

अध्याय 15 215

अध्याय 16 228

अध्याय 1

एक ओला गाड़ी द्वारिका सेक्टर 21 के DSG चौक पर रेड लाइट पर रुकी है। उसमें ड्राइवर के अलावा चार लोग हैं। व्याख्या, साधना, मेघा, मेघा का बीएफ रितेश। मेघा और रितेश में किसी बात को लेके आपस में बहस हो रही है। साधना: "शुक्र है ये आ तो गया, मेरा वाला तो आते आते बैग वापस उठा ले गया।"

व्याख्या: "चला गया तो तुमने...?"

साधना: "मैं कभी उसके पीछे नहीं जाती लौट गया लौट जा, मुझे जाना है मैं जाऊंगी भाड़ में जा, ऐसी नौटंकी मुझे पसंद नहीं।"

साधना: "व्याख्या तेरा वाला भी ऐसे ही करता है क्या?, हां तू ने कुछ बताया नहीं अभी तक अपने बीएफ के बारे में।"

"क्या बताऊं यार जाने दो।"

"ऐसे कैसे बता ना।"

"जाने दो ना यार।"

"नहीं, व्याख्या आज बताओ ना, मैंने कभी पूछा है पहले! आज पूछ रहीं हूं बता दे।"

"यार पांच साल पीछे भेजना चाह रही हो मुझे, शादी हो गई है उसकी।"

"कब?"

"तीन साल पहले।"

"उसके बाद और कोई!"

"नहीं अब कभी नहीं होगा कोई।"

"तो उसने किसी और से शादी क्यों की?"

"अरे, यार जाने दो ना गुजरी बातों को याद क्या करना! जो हो गया वो हो गया।"

"सॉरी यार तुझे हर्ट...।"

"ऐसा भी नहीं है स्ट्रांग हूं इतनी तो उस दर्द ने ही स्ट्रांग बना दिया है शायद अब मैं बिना इमोशनल हुए पूरी कहानी बता सकती हूं फ़िर भी अपने दिल को थोड़ी सी तकलीफ़ तो होगी ज़रूर होगी।"

"तो रहने दे फ़िर।"

"नहीं यार, ये ही तो उसकी हरकतें थी। मैं सोच समझ कर बातों को लबों तक लाती थी और वो तभी बोल देता रहने दो, कॉल काट देता।"

"कहां का था वो? तुम मिले कब थे ?"

लॉकडाउन हटे हुई अभी एक दो महीने ही हुए थे वैसे भी पिछला टाइम बड़ी कंफ्यूजन में बीता था। और मैं भी और टाइम यूं बिताना नहीं चाह रही थी। तब ही मेरी फ्रेंड राशि की कॉल आई, "व्याख्या चलोगी जॉब करने नोएडा?"

"कौन बता रहा था?"

"जीजू हैं वो करते हैं।"

"क्या है कैसी है जॉब?"

"तुम बात कर लेना।"

मैंने बात की हम आए। नोएडा रुके, चार पांच दिन रोज़ इंटरव्यू के लिए जाते कुछ नहीं हुआ। राशि रोज बोलती यहां कुछ नहीं हुआ तो फिर सैक्टर 16 चलेंगे विशाल भाई रहते हैं उन्होंने मेरे साथ ITI की थी।

मैंने राशि को बोला, "बात कर लो तो उन्हीं से, यहां सैलरी भी कम ही बताते हैं। वहां तो ज्यादा है तो वहीं चलेंगे मुझे अभी पैसों की ज़रूरत है।"

राशि बोली, "लेकिन वो शहर मुझे पसंद नहीं है, मैं यहीं चाहती हूं तीसरी बार आई हूं यहां कुछ नहीं होता मेरा पता नहीं क्यों। इस बार भी नहीं हुआ तो मैं यहां कभी ट्राई नहीं करूंगी।"

मैं बोली "सिटी कैसी भी हो काम सही और सैलरी सही होनी चाहिए बात कर लेना उस से।"

उसने की कॉल, वो बोला "हां आ जाओ, मैं अभी मनाली आया हुआ हूं।"

"रूम का भी बोल देती।"

"हां बोल रहे थे सब इंतज़ाम है।"

राशि रोज़ रोज़ बोलती एक बार और ट्राई कर लें यहीं। अब मेरा मन वहां इंटरव्यू के लिए भी नहीं कर रहा था। मैं रोज बोल रही थी उस से वहीं चलो। वो रोज रोज कल, कल कर रही थी। फिर उस दिन मैं पीछे पड़ गई आज तो चलना ही है। चलो अपने विशाल भाई से बोल दो हम आ रहे हैं। वो बोली, तुम बोल दो वो थोड़ा ऐसा ही है बोलेगा तुम तो रोज़ रोज़ बोलती हो। राशि ने उसके पास कॉल की शाम के 5 पांच बज चूके थे।

बोला, "अब लेट नहीं होगा! मगर कोई नहीं आ जाओ।

(उसने अपने दोस्त का नंबर दिया था।) पहुंच कर उसके पास कॉल कर लेना वो तुम्हें रूम तक पहुंचा देगा।"

हम रात के 11 बजे पहुंचे थे उसका फ्रेंड शिवम लेने आया हमको। उसके कोविड वैक्सीन लगी थी उसी दिन उसकी तबियत खराब थी फिर भी वो लेने आया। हम दूसरे बस स्टॉप पर उतरे थे इसकी वज़ह से उसे ज्यादा चलना पड़ा था। उसने खाना भी बनाके रखा था।

तीसरे दिन विशाल वापस आया। खाना पीना लॉबी में ही खाते थे वो। और एक चार पाई भी पड़ी थी हम दोनों तो लॉबी में ही रहते थे ज्यादातर तो।

उसने पूछा "इतना लेट कैसे हो गए थे आने में?"

राशि बोली, "हो गए थे बस का पता नहीं था ना।"

उसने मेरी तरफ देखते हुए पूछा– "मुझे देखा है तुमने कभी?"

मैंने मना कर दिया जबकि मैंने उसे देखा था।

"एक बार वो अपनी जीएफ के साथ ITI आया था अपने कुछ डॉक्यूमेंट्स लेने तब देखा था। कविता ने परिचय कराया था उसका मुझसे।"

हम रूम पर रह रहे थे। विशाल मार्किट में होता या हम बाहर होते तो वो कॉल मेरे फोन पर ही करता। (मेरे नंबर से राशि ने कॉल की थी उसका रिचार्ज खत्म हो गया था, तब से।) मैं उसकी कॉल देखते ही राशि को फोन दे देती, लो विशाल की कॉल है। मैं बिल्कुल नहीं बोलती थी उस से कोई बात होती जॉब की या रूम की तो राशि से बुलवाती थी। मैं नए लोगों से जल्दी से खुलके बोल नहीं पाती हूं। वो अपना बनाता खाता और ड्यूटी चला जाता। उसकी नाइट ड्यूटी थी हम भी रूम पर ही थे। दिन में वो लॉबी में पड़ी चार पाई पर ही सोता था। फोन पर बात करता हम सुनते थे।

एक दिन राशि बोली “कविता को तो जानती हो ना तुम? बहुत प्यार करती थी इस से, ये देखो अब दूसरी लड़की से बात करता है।“

(राशि को भी शायद एहसास हो गया था वो मेरी तरफ़ अट्रेक्ट हो गया है।)

वो वीडियो कॉल पर बात करता था शायद उन्होंने लड़की देखी हो विडियो में। ऐसे अकड़के ही बोलता था सब से चाहे उसकी मम्मी होती या कोई, क्या है सो रहा हूं, बाद में बात करना। खुद ही कॉल करता तब भी छल्ला कर ही बोलता था। मैं सोचती ये सच में बहुत ही नकचढ़ा सा है। रूम देखने की बोलती राशि से। वो बोली, "जॉब तो मिल जाने दो पहले, मैंने बोला है शिवम को वो देख रहा है।"

विशाल ही हमें ज्वाइनिंग के लिए लेके गया किसी की बाइक पर, इंटरव्यू से वापस आते में बोला, "सौ रुपए हैं किसी के पास? पेट्रोल डलवाना है।"

मैंने दिए।

वहां कुछ नहीं हुआ दूसरी जगह ले गया। वहां ज्वाइनिंग हो गई अपने लिए पोस्ट पूछा, वैकेंसी नहीं थी।

एच आर बोल रहा था मुझसे कि "फोटोग्राभी, और शूटिंग करोगी?"

उसने मुझसे बिना पूछे ही मना कर दिया "नहीं ये नहीं करेगी"।

जबकि मेरा मन था बहुत। मैं फोटोहोलिक हूं। जब तो हमें जिसमें उसने लगाया उसी डिपार्टमेंट में जॉब की। बाद में उसे बोलती रहती थी फोटोग्राफी वाली जो बोल रहे थे वहां हो तो बता देना।

दूसरे दिन ही शिवम से बोला रूम का, तो उसने बोला "शाम को सामान पहुंचा देंगे तुम्हारा, रूम जो देखा है वहीं।"

"ओके।"

शाम को हम सामान पैक कर रहे थे, खाना बनाने ही वाले थे विशाल आया सामान उठा के चल दिए। "चलो तुम्हें पहुंचा के आएं।"

खाने का भी नहीं पूछा हमारे पास पैसे भी नहीं थे ज्यादा। आटा वगैरह मंगाया था वो तो यहीं छोड़ दिया। मुझे पहले से ही भूख लग रही थी। अच्छा हुआ नेहा ने खाना बना के रखा था। दूसरे दिन उसने मेरे पास ही मैसेज किया "भाभी किराए का बोल रही थी।"

"कितना देना है?"

"हज़ार कर देना।"

राशि ने और मैंने मिल के 15 सौ सेंड कर दिए। उसने कुछ पूछा भी नहीं।

एक महीने बाद नेहा की फ्रेंड गई एक दूसरी ऑफिस में इंटरव्यू देने तो मैं भी चली गई ट्राई मारने। दोनों को ही पता नहीं था कैसे जाना है। फिर मैंने विशाल से ही एड्रेस पूछा।

मैंने इंटरव्यू दिया ट्रेनिंग ली। डिपार्टमेंट में गई, वो सामने से आ रहा था उसे देख कर मैं एक दम से शॉक्ड हो गई! (ये यहां फिर मिल गया।) उसने मुझे देखते ही अपने पास बुलाया मेरा आईडी कार्ड देखा फिर बोला, "सिस्टम सीख लेना अच्छे से।"

वो देखता स्माइल करके बोलता इधर आओ। एक दो दिन तो मैं चुपचाप चली जाती। जैसे ही एहसास हुआ ये ऐसे ही बुलाता है, फिर कोई काम बता देता है। वो बुलाता तो मैं कहने लगी, क्या है? (थोड़े से एटीट्यूड में बोलती) वो मुस्कुरा कर बोलता था, ये काम करो, (कोई भी काम बता देता था।) एक दिन एक सीनियर ने

हार्ड काम दे दिया बोला– "वो नहीं कर पाएगी, अभी नहीं देना चाहिए ना उसे इतना हार्ड काम।" (थोड़े गुस्से में बोला था)।

एक दिन में बिंदी लगा के गई, सिस्टम की आड़ से झांक कर देख रहा था, चौंक कर बोला "आज तो बिंदी, अच्छी लग रही हो।"

मैंने कोई रिप्लाई नहीं किया ना मुस्कुराई। वो सीनियर था और मैं पहली बार बाहर जॉब करने गई थी तो वैसे भी थोड़ा डर और हेजिटेशन रहता था।

अगर मुझसे कुछ आता नहीं था तो एक सीनियर थे रमेश नाम के। उनसे ही पूछती थी। कोई मिस्टेक हो जाती तो उनको ही बताती थी। वो बिना कुछ बोले, बताते और गलती को सही कर देते थे। इसलिए मैं हमेशा उनको ही बताती थी। उसको मैंने कभी कुछ नहीं पूछा ना कभी गलती बताई। मुझे देखता हंस जाता मेरी भी आदत थी किसी जानने वाले को देखती तो स्माइल आ जाती, वैसे नॉर्मली सबके ही आ जाती है। लेकिन मुझे लगता है मेरी इसी आदत ने फंसा दिया मुझे। मैं दूसरे फ्लोर पर होती, तो देखने आता। एक दिन मुझे फीवर आ रहा था। उसने रेखा से पूछा "उसे क्या हुआ है? तबियत सही नहीं लग रही उसकी।"

जिस दिन दिखाई नहीं देती तो पूछता, मैसेज करके "आज दिखी नहीं थी कहां थी?"

मैं मैसेज पर कभी रिप्लाई कर देती थी बस इसलिए कि, नहीं तो बोलेगा बहुत मतलबी हैं। उसने वैसे भी राशि को बोला था कि "व्याख्या तो बात भी नहीं करती है।" वो बोली थी मेरे को कि "बात कर लिया कर कभी कभी विशाल से, बोल रहे थे "बहुत मतलबी है वो तो, कॉल भी नहीं उठाती।"

मैं रिप्लाई देने लगी थी बस।

"व्याख्या हमें ऐसा लग रहा है कोई तुझे लाइक कर रहा है!" नेहा ने मेले में चुटकी लेते हुई कहा।

दाल में कुछ काला तो मुझे भी लग रहा है। वो इतनी बार व्याख्या, व्याख्या जो करे जा रहा था "ये खाओगी? वो लोगी?" मुझे इतना ज्यादा अपनापन पसंद नहीं एक दो मुलाकातों में। मैं तो बोलना भी पसंद नहीं कर रही थी। पहली बार में ही मैं इंसान

की परख कर लेती हूं। और मुझे एहसास हो गया कि "इसे जो व्याख्या नाम का नशा शराब की तरह चढ़ रहा है ये पेशाब की तरह उतर जाएगा"

मैं "तो कोई उम्रभर साथ निभाए या ज़िंदगी में ही ना आए" वाले सिद्धांत वाली लड़की। ये मिस्टर हमारी तरफ़ अट्रेक्ट हो चुके हैं ये पता तो हमें उनके फ्लैट में रह रहे थे तब ही चल गया था इसलिए हमने जल्दी से जल्दी रूम चेंज करने की कोशिश की। रूम चेंज करने से क्या होता साला किस्मत फिर ले आई उसी के पास। मुझे नहीं पता था वो इसी ऑफिस में जॉब करता है। मेले में जाने के लिए भी वो हमारे रूम पर बुलाने आया था। मैं कुछ काम कर रही थी तो मेरा वेट भी किया आधे घंटे।

एक दिन, मैं ऑफिस के लिए तैयार हो रही थी उसकी कॉल आई

"गॉड सिटी आ जाओ।"

मैं अकड़ कर बोली, "क्यों आऊं?"

"ऑफिस से रेखा, पायल वगैरह आए हैं वैक्सीन लगवाने, रेखा बोल रही थी तुम भी जाओगी इसलिए कॉल की। उसके पास नंबर नहीं है तुम्हारा। तुम भी चलना।"

"कहां आ रहे हैं वो सब?"

"गॉड सिटी घूम रहे हैं इधर ही आ जाओ।"

"ओके।"

पायल, पूजा, मानस, अजय, रेखा, विशाल इतने लोग थे पायल वीडियो बनाने में लगी थी उसके इंस्टाग्राम पर 50K फॉलोवर थे।

रेखा देखते ही बोली "आ गई तू! सर बोल रहे थे मना कर रही है वो।"

सब अपने अपने फोटो क्लिक कर रहे थे पायल ने मेरी चांदी की वाली पहनकर फोटो लिए फिर मुझे दे दी। मैंने हाथ में ही रख ली थी। बाहर आ कर पायल ने याद दिलाया तो मेरे हाथ में एक ही बाली थी बस। विशाल सुन कर भी सबको बोलने लगा चलो। पायल ने बताया उसे, सर व्याख्या की बाली गिर गई है। फिर भी नहीं बोला चलो ढूंढने, किसी लड़की ने भी नहीं बोला। मैं संकुचाती रह गई जाऊं ना

जाऊ ढूंढने। एक जो बची, उसे आज भी संभाल के रखा है मैंने। जब भी हाथ लगती है, मैं गॉड सिटी पहुंच जाती हूं, उन सबके साथ।

वहां से आते में विशाल बोला चलो मेरे रूम पर चाय पानी…, पनीर बनाते हैं। तुम भी चलो व्याख्या। मैं चली गई उसने पनीर खुद बनाया। हम कमरे में थे सब। मुझे आवाज़ देके बुलाया किचेन में। व्याख्या, (बहुत प्यार से नाम लिया उसने मेरा 'व्याख्या') "तुम आटा गूंथ लोगी सबके लिए पूड़ी का?"

"हां।"

मेरे किचेन में आते ही तीनों लड़कियां आ गई किचेन में। मिलके पूड़ी सेंकी बर्तन भी साफ़ किए। फिर खाना खाया। तभी पहली बार खाया था उसका बना हुआ पनीर बहुत टेस्टी था। सबको अच्छा लगा। मुझे उस दिन बुखार था थोड़ा थोड़ा। वो सब बातें कर रहे थे। मैं दीवार से सिर लगा कर आंखे बंद करके बैठी थी।

विशाल रेखा को बोला "उसको नींद आ रही है बोल दो लेट के सो जाएगी तबियत सही नहीं लग रही है उसकी।"

फिर मैं सबको अपने रूम पर ले आई विशाल ही कोल्ड ड्रिंक लाया था।

वो ऑफिस मेरे साथ ही बस में आने जाने लगा था। मुझे रोड़ क्रॉस कराके जाता मेरा हाथ पकड़ कर, जो मैं पकड़ने नहीं देती थी। बस से उतर कर मैं उसे इग्नोर करती हुई तेजी से जाती तो वो भी झट से मेरे सामने आके बोलता – "दिखाई नहीं दे रहा ना! इग्नोर कर रही हो। मैं इधर खड़ा वेट कर रहा हूं देख के भी उधर से आई।"

मैं फिर भी धीरे धीरे वहां से निकल आती। उसे देखते ही तेजी से उसकी नजरों से बचते हुए निकलना चाहती।

"एक दिन उसने मुझसे पूछा तुम्हारा बीएफ है?"

"हां हैं चार।"

“पांचवां मुझे भी बना लो।”

“नो नीड।”

वो वीडियो कॉल करता मैं नॉर्मल कॉल करके पूछती, "बोलो।"

कुछ ना कुछ बात निकाल ही लेता "कोई ज़रूरत हो तो बता देना। कोई कुछ बोलता तो नहीं है ऑफिस में?"

"नहीं कोई कुछ नहीं बोलता।"

फिर उसने एक दिन बोला "फ्रेंडशिप करोगी मेरे से?"

"फ्रेंडशिप करोगी! दोस्ती कोई जानबूझ कर की जाती है! वो तो हो जाती है धीरे धीरे। वैसे तो हम दोस्त ही हैं। दोस्ती का मतलब एक दूसरे की प्रॉब्लम में उसका साथ देना। और मैं हमेशा तैयार हूं कभी कोई प्रॉब्लम हो तो खुल के बता सकते हैं आप।"

फिर वो अपनी बातें शेयर करने लगा। मैं नॉर्मल बातें कर लेती थोड़ी बहुत। वो बार बार कविता का नाम लेता था।

मैंने पूछा, "तुम कविता को इतना मिस करते हो तो बात क्यों नहीं करते उससे?"

"मन नहीं करता, करता है मगर नहीं करता और वो बहुत कुछ बोल गई है मुझको।"

"तुम इतनी दुःखी क्यों रहती हो? एक बार मुझे टाइम दे कर देखो सब सही कर दूंगा मैं।"

एक दिन उसने बोला, "मैंने जब से तुमको देखा है तब से लाइक करता हूं तुम्हें।"

"तुम इतने हैंडसम हो तुम्हें तो कितनी लड़कियां लाइक करती हैं, मेरे बारे में ऐसा कुछ मत सोचना।"

"हां ये सच है मुझे बहुत लड़कियां लाइक करती हैं मगर मैं तुम्हें लाइक करता हूं। मुझे बाकी लड़कियों में कोई इंटरेस्ट नहीं है।"

"लेकिन मैं तुम्हें सिर्फ दोस्त मानती हूं। और दोस्ती हमेशा निभाऊंगी। उस से ज्यादा कुछ नहीं। और तुम कुछ और सोचना भी नहीं। ओके।"

मेरा स्टेट्स रिप्लाई किया उसने “सॉरी”

“सॉरी किस लिए?”

“कल मैं बोला था इसीलिए लगाई हो ने ये?

(ओ ऊपर वाले, भले मुझे ऊपर उठा ले।

मगर इस निर्दयी, इश्क़ से बचा ले।।)

(मैंने कोई रिप्लाई नहीं दिया बस घूर के देखा उसे थोड़ा।)

बोला “ठीक है अब नहीं बोलूंगा कुछ।”

उसने बोलना छोड़ दिया मैं सोचने लगी मैंने कहीं ज्यादा तो नहीं बोल दिया। तब मुझे उसकी आदत सी हो गई फील हुई लेकिन अगले ही पल दिल ने कहा अच्छा है पीछा तो छूटा। मैं बहुत खुश हुई।

तीसरे दिन बस में वो फिर आ कर बैठ गया मेरे पास, पूछ कर "मैं बैठ सकता हूं?"

मैं कुछ बोली नहीं खिसक कर जगह दे दी, सोचा बस पास बैठने से क्या होगा। मैं सोचने लगी इसका नंबर ब्लॉक कर दूं। नहीं खुदगर्ज समझेगा मुझे। मैं ऐसे ही हैंडल कर लूंगी।

बस स्टॉप पर जूस की दुकान थी। जिस दिन उसका ऑफ होता उस पर बैठा मेरे आने का वेट करता। मेरे उतरते ही पास आ कर बोलता जूस पीते हैं। कुछ खाते हैं।

नहीं बोलती हुई मैं रोड़ क्रॉस करने लगती तो मेरे साथ साथ रोड़ क्रॉस करके बोलता। "ठीक है तो मैं जा रहा हूं।"

मैं बस पलट के देख लेती। इतना भी रूड होना नहीं चाहती थी ना मैं। और आज तक हो भी नहीं पाई।

फिर वो सबसे मेरे बारे में बातें करने लगा नेहा भी बोल रही थी, "अच्छा लड़का है विशाल, व्याख्या ऐसे किसी को इग्नोर नहीं मारते।"

पाखी भी बोली, "तुम ज्यादा इतराती हो कुछ।"

"मतलब?"

"कोई इतने प्यार से बात करता है, तुम मुंह डेढ़ा करती हो।"

अब मेरे मन में भी उथल पुथल होने लगी उसे ले कर।

फिर मैंने उसकी एक्स से पूछा। "क्या तुम दोनों अब भी बात करते हो?"

मैंने सिर्फ इसलिए पूछा क्योंकि मैं उसे जानती थी और उनके रिलेशन के बारे में भी इसलिए पूछा कि कहीं वो उसे (कविता को) चीट तो नहीं कर रहा है।

"नहीं हमारी दो साल से बात नहीं होती।"

"तुम्हारा ब्रेक अप कैसे हुआ था?"

"ऐसे ही गलतफहमी से।"

वो बोली, "तो मिस्टर ने आपको प्रपोज मारा है मुझे पता है तुम एक ही ऑफिस में जॉब करते हो।"

"तुम्हें कैसे पता फिर?"

"मेरी एक फ्रेंड है वो बता रही थी। उसका प्रोपोजल एक्सेप्ट कर लेना और खुश रखना उसे। मैं बता रही हूं वो तुम्हें बहुत खुश रखेगा।"

वो बार बार बोले जा रही थी मेरी रिक्वेस्ट है।

मैंने कहा, "मुझे इन सब बातों से दूर रहना है अब। वैसे तुम अब भी चाहती हो उसे?"

"नहीं अब ऐसा कुछ नहीं है। बस चाहती हूं वो खुश रहे जैसे भी रहे। और उनको मत बताना हमारी बात हुई है। और मैं उन्हें विशाल बाबू बुलाती थी तो तुम भी इस नाम से बुला सकती हो उन्हें। प्लीज मेरी रिक्वेस्ट याद रखना।"

"नहीं मुझे अब ऐसे किसी झमेले में नहीं पड़ना।"

(मैं क्यों किसी के लिए अपनी फीलिंग्स इधर उधर करूं।)

दूसरे दिन उसका ऑफ था वो ऑफ वाले दिन बस स्टॉप पर बैठा मिलता इंतज़ार में। मैं बस में बैठी ही थी उसके मैसेज देखे।

"तुम क्या बोली कविता को। वो क्या क्या सुना रही है मुझे। तुमने तो मना कर ही दिया तो उसको बताने की क्या जरूरत थी। मिलना तुम बस स्टॉप पर।"

मुझे लगा हाँ शायद उसका मजाक बना है। एक बार मिल के सॉरी बोल देती हूं।

उतर गई बस से, ये सोच कर कि मिल कर सॉरी बोल दूंगी "मैंने आपकी फीलिंग्स का मज़ाक नहीं बनाया, आपको बुरा लगा हो तो सॉरी"

जैसे ही वो मुझे दिखा वो तो एक प्यारी सी स्माइल के साथ हंस गया। मैं सोच में पड़ गई

(ये तो भड़क रहा था इसे भड़कना चाहिए था यहां। पर ये तो....,।)

उसने मिलके तो कुछ भी नहीं बोला ऐसा जितना मैसेज में भड़क रहा था। हंस हंस कर बात करता रहा, बस उसकी इसी स्माइल ने मेरी स्माइल छीन ली मान लो। इस दिन के बाद मैं उस से अच्छे से बात करने लगी। लेकिन ऐसी कोई फीलिंग नहीं थी हां मगर अब मैं उस से कतरा नहीं रही थी।

"तुझसे मुझे इश्क़ तो नहीं है मगर कुछ तो है जो दोस्ती से आगे है ।
सोए हुए मेरे एहसास प्यार के, लग रहे अब जागे जागे हैं।।"

दूसरे दिन उसने फिर अपने और कविता से अलग होने का रीज़न बताया।

वो रोज मेरे पास बैठ कर आता था ऑफिस से, मैं जल्दी निकल आती थी वो बाद में आता था और आ कर मेरे पास ही बैठता। एक दिन वो आया नहीं और बस चल दी मुझे बुरा लगा, "मैं सोचने लगी मुझे बुरा क्यों लग रहा है, कहीं मैं उसकी तलबगार तो होने नहीं जा रही!"

वो चौराहे तक मेरे साथ आता जबकि उसका रास्ता पीछे ही रह जाता था। रोज रोड़ क्रॉस कराके जाता। फिर एक दिन वो मेरा हाथ पकड़ने लगा रोड़ क्रॉस कराने को, मैंने छुड़ा लिया।

ऑफिस में उसकी एक्स की नाम की लड़की उसे गाली दे रही थी बार बार मेरे सामने। मैंने उसे कुछ नहीं बोला।

शाम को विशाल को बुलाके पूछा, "तुमने कविता को क्या बोला है?"

"कौनसी कविता?"

"ऑफिस वाली।"

"कुछ नहीं बोला, क्या बोली वो तुम्हें?"

"मुझे तो कुछ नहीं बोली तुम्हारे बारे में बोल रही थी।"

"क्या?"

"तुम बताओ तुमने क्या बोला है उसे?" मैं बात करती करती जूस की दुकान पर चली गई मैंने जूस बनवाया।

जूस लेके वो बोला, "बताओ क्या बोली वो वरना मैं ये जूस फेंक दूंगा।"

"कुछ नहीं बोली वो तो मुझे। तुमने कुछ नहीं बोला उसे! तो जाने दो तुम।"

हमने जूस पिया बैठे भी। फिर मैं रूम की तरफ जाने लगी तो वो पूछते पूछते पीछे चल दिया। मेरे रूम तक पहली बार आया वो।

मेरी आदत थी घर की, कि कोई घर तक आए तो उसे अंदर बुला के चाय पानी ज़रूर पिलाती थी। मेरी फैमिली में सब की आदर सत्कार वाली आदत है। तो मैंने उसे अंदर आने को बोल दिया। आया, मैं लॉबी में खड़ी हुई एक दो बात की फिर अंदर आईडी कार्ड रखने गई आदतन। रूम में कोई नहीं था। पीछे से वो अंदर आ गया। पहले मेरे कंधे पर हाथ रखा।

मैं कहने लगी, "बैठो चाय बनाके लाती हूं।"

"नहीं मैं चाय नहीं पीता" फिर मेरे दोनों कंधो पर हाथ रख लिए।

मुझे अजीब सा डर लगा, घबराते हुई बोली, "मैं चाय बना लाऊं।"

"कुछ मत बनाओ।"

मुझे हिलने नहीं दिया और फिर मुझे पकड़ा और किस करने लगा। सीधा होंठो पर एक दम चिपक कर मुझे बहुत बुरा लगा। मैं कुछ नहीं बोल पाई उसे हाथों से हटाती

रही वो फिर सीने से सिर लगा धड़कन सुनने लगा। मैं बेबस सी हो गई गुस्सा आ रहा था कि थप्पड़ मारूं इसे पर मार नहीं पाई। और वहां से हट कर बाहर जाने लगी वो निकल कर तेजी से चला गया।

(मुझे घिन सी आ रही थी वो बात सोच सोच कर ही। अरे उसे प्यार जताना था तो मेरे माथे को चूमता ना, सीधा होठों को....। अच्छा लड़का नहीं है ये। अब इस से बात ही नहीं करूंगी।)

अगले दिन, पहले ही हम साथ घर जाने की प्लानिंग कर चुके थे पाखी भी साथ जाने वाली थी। उस दिन धन तेरस थी। मैं और पाखी मार्केट गए वो भी आया हुआ था मैं उस से बोल नहीं रही थी एकदम सुस्त हो गई थी। पाखी बोल रही थी बोल क्यों नहीं रहीं? वो पूछे जा रहा था, "क्या लोगी?" बिना कुछ कहे मैं चलती जा रही थी।

पाखी फिर बोली, "कितनी वो बन रही हो ऐसे क्या है! बात करो यार इतना गुस्सा नहीं दिखाते।"

उस से बिना बोले मैं मार्केट से वापस आ गई।

"सोचती रही उस से अलग ही जाएंगे। मैं और पाखी चले जाएंगे। लेकिन मैं तो कभी गई नहीं हूं। कैसे कैसे जाना है पता भी नहीं है। कोई नहीं इस बार रास्ता देख लेंगे और साथ जाने से क्या होगा"।

उसने कोई मैसेज या कॉल नहीं किया। सुबह चार बजे खटर पटर से आंख खुली देखा पाखी जाने की तैयारी कर रही है। सुबह साढ़े पांच निकलना था। तब ही उसका कॉल आया मैं बहुत देर तक सोचती रही उठाऊं या नहीं।

उसी के साथ जाना ज़रूरी है क्या?

अगर मना करूं तो पाखी बोलेगी क्यों नहीं जाना? उसके साथ चलने में क्या प्रॉब्लम है?

कैब में वो मेरे साइड बैठा मैं दूर होके बैठी। पाखी फिर बोल दी, "कैसे इतनी दूर हो रही हो वो क्या खा जाएंगे तुम्हें!"

हम अपने अपने घर पहुंच गए। उसका मैसेज आया, "मन नहीं लग रहा। मम्मी बोल रही हैं, कैसे सुस्त है बेटा क्या हुआ? तुम्हारी याद आ रही है।"

मैंने कोई रिप्लाई नहीं दिया फिर उसने मेरी डीपी से लिए फ़ोटो की वीडियो बनाके सेंड की।

"हैप्पी दिवाली।"

"सेम टू यू।"

फ़िर दोनों तरफ़ से मैसेज शुरू हो गए।

उसने पूछा, "मेरे बराबर वाले रूम में शिफ्ट हो जाओ ना तुम।"

"नहीं।"

पाखी भी लाइन पर थी वो बोली," हां सही तो है सब कुछ है वहां और किसी चीज़ की जरूरत पड़ी तो भाई हैं ही।"

वो तैयार हो गई तो मैंने भी हां बोल दिया, रूम तो अलग ही था वैसे भी।

हम साथ आए भाई दूज वाले दिन। अपने पूराने रूम से सामान लेके गए मैं और पाखी। पूराने रूम पर शिवानी का बर्थडे था। वो रोक रही थी हम नहीं रुके।

विशाल ने मैगी बनाई हम खाकर लेट गए अपने अपने कमरे में। उसके कमरे में से आवाज़ आ रही थी वो एक घंटे से किसी से बात कर रहा था फोन पर।

पाखी बोली, "उनको भी इधर ही बुला ले वो अकेले सोएंगे!"

"नहीं रहने दे उधर ही।"

"बुला लो ना।"

"नहीं।"

विशाल ने कॉल की, "आ जाओ।"

नहीं, "तुम आ जाओ।"

"तुम आओ।"

"तुम।"

"वो लड़की है ना तुम्हारे रूम में।"

"तो?"

"उसे कोई प्रॉब्लम नहीं है?"

"नहीं है।"

वो आ गया, पूछने लगा, "शर्ट उतार दूं?"

मैं सोचते हुए, (इसको शर्ट उतार के सोने की आदत होगी शायद।) बोली, "तुम्हारी मर्ज़ी।"

तुम बताओ।

"पाखी के खर्राटों की आवाज़ आने लगी।"

मैं सिर्फ उसके सीने पर सर रख कर सोना चाहती

थी"।

मगर फिर वो शुरू हो गया, किस विस करने लगा। मैंने बोला अगर मुझसे प्यार करते हो तो ये सब नहीं।

"यही तो प्यार है।"

"ये तुम्हारा झूठा प्यार मुझे पसंद नहीं।"

बोला, "जाऊं तो अपने रूम में?"

"जाओ।"

फिर भी बैठा रहा फिर मुझे सीने से लगा लिया नहीं कर रहा कुछ। धीरे धीरे फिर स्टार्ट हो गया।

जाओ। "यही प्यार है तो रखो अपना प्यार अपने पास।"

"और सच्चा प्यार क्या है? शादी! वो तो नहीं हो सकती हमारी।"

"दूर रहो तो फिर मुझसे। अब कभी बात मत करना। जाओ अपने रूम में।"

मैंने पाखी को बोला, "हम पहले वाले रूम पर ही चलते हैं"

अब दो तीन दिन रह लिए, किराया तो पूरे मंथ का देना पड़ेगा। एक महीने यहीं रह लेते हैं। पाखी बोली।

अध्याय 2

तीसरे दिन पाखी को घर जाना पड़ा अर्जेंट में।

शाम को ऑफिस से साथ में आए मैं और विशाल। बोलने लगा मेरा भाई आएगा तुम नेहा के पास ही चली जाओ। मुझे इतना रोना आया सुन के। कितनी जल्दी बदल गया ये इंसान! मैं बहुत बुरी तरह से रो रही थी अंदर कोने में दीवार से सिर लगा कर। कुछ देर बाद अंदर आया

"अरे तुम रो रही हो! मुझे गले से लगा कर चुप करने लगा। तुम यहां अकेली कैसे रह लोगी, पाखी रहती तो कोई बात नहीं थी। मेरा भी भाई आ रहा है।"

मुझे रोना क्यों आया पता है?

साधना – बता?

मेरे दिल में उसके लिए फीलिंग्स जा चुकी थी, अब वो पलट रहा था।

रितेश – उतरो मैडमों। या यूं ही वापस जाने का इरादा है क्या?

मंदिर से आ कर हम सब कैब में बैठे।

मेघा – व्याख्या आगे का बताइए। मुझे बहुत बुरा लग रहा है। तुम्हारे लिए। और थोड़ी राहत भी मिल रही है।

साधना– राहत क्यों ?

मेघा – मेरा वाला किसी से तो बहुत अच्छा है।

साधना – हां बता दे उसे, ताकि वो भी ऐसा हो जाए।

मेघा – बताओ व्याख्या। फिर तुम उस से दूर हुईं या....।

मुझे नेहा के रूम तक छोड़ के गया। मेरा सामान अपने हाथों से पैक करके। और फिर मुझे ब्लॉक कर दिया। उसकी नाइट शिफ्ट हो गई थी इसलिए मिल नहीं पा रहा था। मैं व्हाट्सएप इंस्टाग्राम सब पर कॉल मैसेज करके परेशान हो रही थी। हर जगह ब्लॉक थी। चार पांच दिन बाद मार्केट में मिला अपने भाई के साथ। मेरा मन किया लगाऊं इसके दो चार खींच के। मैं पास जा के खड़ी हो गई सब्जी लेता रहा गुस्से सा मुंह बनाके। देखा भी नहीं मेरी तरफ।

मैं उसके पास जा के बोली "हां क्या चाह रहे हो।"

"(हंस के बोला) क्या हुआ?"

"क्या हुआ! बताऊं क्या हुआ है।

बोला, "टेंशन में हूं यार घर वाले प्रेशर डाल रहे हैं।"

"किसका प्रेशर?"

"कुछ नहीं।"

दूसरे ठेले पर सब्जी लेने चला गया।

मैंने उसके भाई से पूछा, "ये सबसे ऐसे ही बात करता है?"

"हां ऐसे ही हैं ये। किसी की नहीं सुनते। मम्मी पापा भी डरते हैं इनसे।"

दूसरे दिन सुबह ऑफिस जाते समय कॉल की। फिर रोज करने लगा और मेरे साथ ही जाता ऑफिस। और आते में मार्केट में कुछ खा पी कर मुझे मेरे रूम तक छोड़ के जाता।

आंटी की लड़की की एक फ्रेंड थी गोरी सी देखने में सुंदर थी बट देखने से ही लगता कि वो फ्रॉड है। वो विशाल को देखती थी ये भी उसे देखता। मार्केट में मिली एक दिन तो विशाल को देखे ही जा रही थी। मैंने भी उसे घूर कर समझाने की कोशिश की। दूसरे दिन वो मुझे छोड़ने मेरे रूम तक आया। वो यहां भी मिल गई बोला–

"उसे पटाऊंगा।"

मैंने बोला– "क्या बोला फिर से बोलना।"

"पटाऊंगा उसे।"

"ठीक है जाओ तो।"

रानी बोली, (रानी नेहा की फ्रेंड थी) "अच्छा! ऐसे ही जाने दोगी?"

फिर मुझे गुस्सा आ गया (सच में खेल समझ रहा है मिस्टर) मैंने उसे गुस्से में बोला, "फिर से बोलना।"

"पटाऊंगा।"

मैंने एक ज़ोरदार लगा दिया उसके गाल पर "तीसरा बर्दाश्त नहीं है मुझे"।

गुस्से में उठकर जाने लगा। मैं सॉरी बोलने लगी। भाग गया। मैंने कॉल की तो रोई हुई सी आवाज़ में बोला, "आज के बाद कॉल मत करना मेरे पास"।

"मैं आ रही हूं।"

"कोई ज़रूरत नहीं है, आज के बाद सब ख़त्म।"

ब्लॉक कर दिया। उसकी बिल्डिंग में मेरी एक फ्रेंड रहती थी मैंने उसे कॉल करके बोला, "मैं आ रही हूं मुझे छोड़ने आ जाना। गुस्सा हो गया है वो, कुछ बात करने आ रही हूं।"

वो बोली, "ऐसा नहीं है वो खुद छोड़के आएगा तुझे। कितना भी गुस्सा हो अगर नहीं गया, मैं छोड़ आऊंगी नो प्रॉब्लम आ जा।"

मैं विशाल के रूम में गई उसका भाई था अंदर। मैंने उसे आंखों से इशारा किया बाहर जाने का, वो तुरंत आ गया। मुझे देखते ही हल्का सा मुस्कुरा गया। मैं उसके सीने से लग कर बोली "सॉरी।"

"कोई नहीं चलता है ऐसा तो। (मुझे सीने से हटाता हुआ बोला) भाई है बाहर।"

उसे नहीं पता था मैंने उसे बाहर भेज दिया है। मैं बाहर निकल कर अपनी फ्रैंड के पास चली गई हम बातें कर रहे थे। वो स्वेटर पहन के, आकर दरवाज़े पर खड़े हो के चुपचाप देख रहा था। मैंने देखा तो बोला, "मुझे मालूम था यहीं होगी। बातें हो गई तो चलें?"

"चलो।"

"मैं कहां चलूं अकेली आई हो अकेली जाओ।"

मुझे पता था ये यहां तक आ गया है तो अकेली जाने नहीं देगा रात में।

"ठीक है मत चलो मैं चली जाऊंगी।"

"जाओ।"

मेरे पीछे पीछे आने लगा छुप कर, मैंने पलट कर देखा तो कार के पीछे छुप गया। मैं खड़ी हो गई।

"मैं तो दुकान पर जा रहा हूं तुम क्यों खड़ी हुई?"

"चलो ना छोड़ के आओ।"

"मैं नहीं।"

"ठीक है मैं जा रही हूं अकेली।"

फिर मेरा हाथ पकड़ के चलने लगा, "मैं तो तुम्हें चिढ़ा रहा था यार, वो लड़की मुझे देखती है तो ऐसे ही बोल रहा था।"

"ऐसे ही चिढ़ाते चिढ़ाते हो जाओगे तुम किसी और के।"

"नहीं अब किसी की ज़रूरत नहीं है मुझे।"

बातें करते करते मेरी गली आ गई।

बोला, "जाओ अब।"

राशि का बर्थडे था। विशाल ने कॉल करके पूछा। "राशि बुला रही है बर्थडे है उसका। जाओगी?"

"हां बोली तो है। लेकिन जाने का मन नहीं है। बहुत दूर है उसका रूम।"

"ठीक है मत जाओ। बहुत ठंड पड़ रही है वैसे भी। मैं भी नहीं जा रहा।"

फिर शिवानी "बोली चलते हैं यार, आ जाएंगे 10,15 मिनट्स में।" फिर वो भी आ गया।

राशि बोली "और भाई शादी कर रहो हो बताया भी नहीं।"

सुनते ही मेरे सीने में टीस हो उठी।

"किसने बोला तुम्हें? अभी नहीं कर रहा मैं शादी।"

फिर वो किधर भी साइड में हुआ। राशि मुझसे बोली "बहुत बड़े हैं ये एज मालूम नहीं पड़ती इनकी। लड़की देख रहे हैं घर वाले, सुना है मैंने।"

मेरा ऑफ था। उसको खाना बना के ले गई उसके रूम।

खाना खा के वो सो गया। मैंने उसके रूम की सफाई की। शाम को ड्यूटी टाइम हुआ, तैयार होने लगा। नाइट शिफ्ट थी।

"आज मत जाओ।"

"जाना तो पड़ेगा।"

मैं उसे बाहों से घेर के बोलने लगी। "आज मत जाओ प्लीज" चुपचाप सुन रहा था।

"मत जाओ ना।"

मैं उसे जब दूसरी बार, इसी तरह रोक रही थी। उसके सीने से लग कर।

कहने लगा "कविता भी ऐसे ही रोकती थी ऐसे पकड़ कर, "मत जाओ।" हम ऐसे रहे थे जैसे पति पत्नी हों, बहुत ख़्याल रखती थी वो मेरा। सोते हुए को जगा के खाना खिलाती थी।

मैं उसके लिए भी नहीं रुका कभी।

तुम मेरी नींद का भी ख़्याल रखती हो।"

मुझे हाथ से दूर करता हुआ बोला। चलो छोड़ के आऊं तुम्हें।

(बस स्टॉप बीच में पड़ता था।)

15 दिन बाद उसने फोटो दिखाए मुझे लड़की के। "कैसी है?"

"ठीक है।"

(अब जब ये शादी करना ही चाहता है किसी और से तो मैं क्या बोल सकती हूं। और वैसे भी कविता कविता करता रहता है। मनाली वाली अलग चलती रहतीं हैं।)

फिर वो घर गया तो मुझे ब्लॉक करके गया। मैंने भी ब्लॉक करके नंबर डिलीट कर दिया।

चार दिन हो गए। "ऑफिस में एक दो लोग बोल रहे थे कि वो सगाई करने गया है।"

मैं बहुत रोई दो तीन दिन। चौथे दिन रोना कम हुआ। मुझे लगने लगा अब नहीं रोऊंगी उसके लिए। और अब वो बात नहीं करेगा तो कोई बात नहीं। जाने दो।

फिर वो आया पांचवे दिन। मैं सेकंड फ्लोर पर थी, गया मेरे पास।

"नाराज़ हो?"

मैं अनसुना कर रही थी उसे। और गुस्से में काम करने लगी। डेस्क पर रखा लोहे का आइटम मेरे हाथ से उसके पैर पर गिर गया। आई! करते हुए उसने झटके से पैर उठाया। लंगड़ाते हुए चल दिया। मुझे लगा कुछ ज्यादा ही ज़ोर से लग गई।

"मैंने जान कर नहीं गिराया। गलती से गिर गया।"

"पता है मुझ को।"

मुझे लगा वो समझेगा कि मैंने जान के गिराया है। उसके ज़्यादा लग गई है। मूव खरीद के दे देती हूँ। उसके बाद बात नहीं करूंगी।

मैंने शाम को कॉल की।

"मार्किट में आ जाओ।"

आया जूस की दुकान पर। मैंने मूव दी।

"मैं नहीं ले रहा।"

मेरे बार बार देने पर फेंक दी उसने।

आंटी ने आते में उसे फैंकते देखा। हंसती हुई चली आई।

मैं मूव उठा के, उसका नंबर ब्लॉक करके डिलीट कर दिया। और आ गई।

आते ही आंटी बोली, क्या हुआ, गुस्सा कर रहा था विशाल आज तो रोड़ पर?

कुछ नहीं बस ऐसे ही

खाना बना लिया आ कर, बाकी के और काम भी कर लिए। दो घंटे बाद मोबाइल देखा।

उसके नॉर्मल मैसेज आए हुए थे–

मुझे अनब्लॉक कर दो यार प्लीज़। एक बार बात कर लो बस। फिर एक घंटे बाद के थे – मैं जूस की दुकान पर बैठा हूं, तुम नहीं आओगी जब तक मैं यहीं बैठा रहूंगा, पूरी रात।

मैं पढ़ते ही निकल गई। देखा पूरी मार्किट बंद हो चुकी थी। वहां कोई नहीं था। वो खंभे से सिर लगाए बैठा था।

मुझे देखते ही बोला। "मुझे मालूम था तुम ज़रूर आओगी।"

मैंने उसे अनब्लॉक तो कर दिया उसके मनाने पर। पर उसकी कॉल रिसीव नहीं की तीन चार दिन तक लगातार की उसने। वो नाइट ड्यूटी जा रहा था। डे में मैं नहीं होती थी। मेरा वीक ऑफ था उस दिन आया रूम। मैं गद्दे पर कवर चढ़ा रही थी। आ के बैठ गया कुर्सी पर, मुझे देखता रहा। मैं उसे देखती हुई कवर चढ़ाती रही। चढ़ गए तब उसकी तरफ अच्छे से देखा। वो मायूस सी सकल बना के मुझे देखे जा रहा था। मासूमियत देख के उसकी, मेरे गुस्से को भगाता हुआ प्यार आ गया एक दम से। मैं जाके उसकी गोद में बैठ गई, उसके सीने से लग कर। जब जा के बोला "कॉल क्यों नहीं उठा रही थी?"

मैं कुछ नहीं बोली तो गुस्से में मुझे थप्पड़ मारने लगा, क्यों नहीं उठा रही थी कॉल? बताओ क्यों नहीं उठा रही थी? मैं कितना परेशान हो रहा था, एक तो देख नहीं पा रहा था ऊपर से तुम कॉल भी नहीं उठा रही। क्यों नहीं उठा रही थी (मारते हुए बोला।) मैं कुछ बोलती ही नहीं थी। अब दोबारा ऐसा मत करना।

मैं उसके लिए जर्दा बनाके लाई थी घर से। उसको मैं 'एक काम है मार्किट आ जाओ' बोल के बुलाती थी।

"मुझे पता है, कुछ लाई होगी।"

"हां जर्दा है और गुझियां हैं।"

"मैं नहीं खाता, मैं नहीं आ रहा।"

"तुम्हारी लिए ही बना के लाई हूं। बोले थे तुम पसंद है तुमको गुझियां।"

"मैं नहीं आ रहा, नहीं खानी मुझे।"

"एक काम भी था।"

"क्या?"

"आओ तो मार्किट। नौ बजने वाले हैं जल्दी आ जाओ।"

आया आधे रास्ते मैं चलके जा चुकी। बीच में मिले मैंने थैला दिया। एक दम से छल्ला के पड़ा।

"मना किया था ना मैं, कुछ नहीं चाहिए मुझे।"

मैं एक दम से ऊंची आवाज़ से डर गई, फिर उसके सीने से लग गई। थोड़ी दूरी पर दो आदमी थे पास आ के बोले।

"भाई ये सब यहां नहीं अपने अपने ठिकाने पर जा के लड़ो इतनी रात में यहां शोर नहीं।" वो बोल के चले गए। फिर वो नरमी से बोलने लगा।

"तुम्हारी वजह से वो सुना के चले गए। खुद भी परेशान हुई मुझे भी किया फालतू का। (मेरे हाथ में से थैला लेता हुआ बोला।) एक टाइम था व्याख्या तुम मुझे रोड़ क्रॉस कराने को भी हाथ पकड़ने नहीं देती थीं, आज कहीं भी गले लग जाती हो।"

मुझे मेरे रूम तक छोड़ के गया।

एक दिन ऑफिस से साथ आए, मार्केट में फोन अपने हाथ में लेने लगा, "तुम मेरे फ़ोटो डिलीट कर दो।"

"क्यों करूं?"

"कर दो यार सही नहीं है अब।"

"अच्छा बिलीव नहीं है?"

"नहीं है।"

"फिर तो तुमसे बात करना ही बेकार है।"

"हां मत करना मुझसे बात, डिलीट कर दो नंबर।"

"मैं क्यों करूं तुम कर दो।"

"मैंने तो कर रखा है, तुम भी कर दो।"

मैंने गुस्से में बोला, "तुम अपने आप से मतलब रखो।"

फोन छीनने लगा। "नंबर भी ब्लॉक करके डिलीट कर दो।"

फोन छीन के आगे भाग गया तेजी से मैं कुछ दूर तक तो पीछे गई। फिर लौट के आ गई। अपनी गली से आगे निकल गई आंखों में आंसू थे सोचती हुई बढ़ती गई वो आएगा, मुझे ढूंढेगा इधर उधर देखेगा, और सबसे ज्यादा तो ये था कि अब वो मुझे फालतू समझ के छोड़ रहा है। अंदर से बहुत बुरा रोना आ रहा था मुझे। मैं वापस आ गई वो रूम पर भी नहीं आया। फिर मैं छत पर चली गई

(जब मुझको रोना आ रहा हो तो दो तीन घंटे तो आंसू निकलेंगे ही निकलेंगे रह रह कर।)

इसलिए चली गई ऊपर कि कोई देख ना ले लाल आंखों को। किसी ने मुझे ऊपर जाते भी नहीं देखा। जब मैं नीचे

आई तब नेहा बोली –

"कहां थी विशाल फोन दे के गया है।"

"क्या बोला था?"

"ये व्याख्या का फोन है दे देना उसको।"

मैंने पूछा, "व्याख्या कहां है?"

बोला, "आई नहीं वो! मुझे नहीं पता कहां है।"

फिर मैंने नेहा के नंबर से उसके पास कॉल करवाई नेहा पर। बोली, "कहां दी थी व्याख्या फोन आपको अभी तक घर नहीं आई है।"

"मार्केट में दी थी फोन 6 बजे लगभग, अब मुझे नहीं पता कहां है।"

"पता करो कहां है।"

"मुझे नहीं पता कहां है, आ जाएगी।"

फिर उसने कॉल करके भी नहीं पूछा कि कहां हो तुम या वो आ गई कि नहीं। मुझे तो ब्लॉक कर के जैसे अनब्लॉक होता ही नहीं हो।

मुझसे रहा ही नहीं जाता था उस से बात किए बिना। दो दिन जैसे तैसे काट लिए फिर तीसरे दिन गूगल–पे से नंबर निकाल कर मैसेज कर दिए।

बार बार बोलते हो ना "बात मत करना, बात मत करना" जैसे मेरे बात करने से तुम्हें बहुत ज़िल्लत झेलनी पड़ती हो, बहुत इरिटेटिंग होता है ना मेरा बात करना। सच में क्रैक माइंड हूं मैं, जो इतना जलील होने के बाद भी, सब कुछ भुला कर तुमसे बात करती हूं। मुझे किसी को इरिटेट करने की आदत नहीं लेकिन फिर भी तुम्हें अब तक किया, उसके लिए सॉरी।

वो ऐसे नॉर्मल वे में बात करता था फिर जैसे कुछ हुआ ही नहीं, उसने कुछ किया या बोला ही नहीं।

मेरी आदत थी मैं सेकंड फ्लोर से भी उसे देखते रहने की, मतलब मैं एक मिनट से कम टाइम मिलने पर ही नहीं, काम छोड़ के भी उसे देखने आती रहती थी। ऐसे ही आ जाती चलते चलते बस ऊपर से दिख जाता तो ठीक नहीं तो लौट जाती। फिर मौका मिलने पर फिर आ जाती। शायद उसको पता ही नहीं था। एक दिन मैंने देखा वो जो लड़की 15 दिन पहले ही आई है गोरी गोरी वो उसके डेस्क पर दिख रहा था बार बार। मैं उस दिन सेकंड फ्लोर पर ही बाहर साइड वाली डेस्क पर थी जिसके दो कदम चलने पर दिख जाता था नीचे।

उस दिन काम भी कम था तो आदतन मैं उसे देख रही थी आज। मैंने जब भी नीचे देखा वो उस लड़की के पास ही दिखा। मेरे मन में ऐसा कोई ख्याल नहीं था सोच रही थी जब कोई नया नया आता है तो हर किसी से नहीं पूछ पाता काम के बारे में, जो एक बार बता दे उसी से पूछता है। हो सकता है लड़की उसी से बार बार पूछ रही हो।

दुसरे दिन मैंने जान कर देखा वो फिर दिख रहा था उसकी डेस्क पर। मैं ऑफिस में तो उससे बात नहीं करती थी इस तरीके से। तो वहां मैंने कुछ नहीं बोला। शाम को वो किसी बात पर बहस करने लगा फोन पर मैंने बातों बातों बस ये बोला

"तुम्हें तो बताऊंगी मैं।"

"क्या बताओगी? बताओ।"

"ऐसे नहीं मौके पर पकड़ के बताऊंगी?"

"क्या पकड़ के बताओगी?"

"तुम्हें।"

"तो पकड़ लो और बताओ।"

"यहां क्या बता सकती हूं ऑफिस में बताऊंगी?"

"ऑफिस में क्या! जैसा तुम सोच रही हो वैसा कुछ नहीं है।"

"क्या सोचा है मैंने और कैसा कुछ नहीं है?"

"कैसा भी कुछ भी नहीं है तुम टेंशन क्यों लेती हो।"

दुसरे दिन मेरी उस से बात नहीं हुई। उसका एक फ्रेंड था "रितेश" जो मेरा भी फ्रेंड था। जिससे मैं विशु से भी ज्यादा अपनी प्रोब्लम शेयर कर लिया करती थी। वो समझता था। मैं विशाल से नाराज़ हो जाती थी तो वो बोलता था। "ऐसे नाराज मत हुआ कर उस से बात कर लिया कर। वो गुस्से पर कंट्रोल नहीं कर पाता अपने। तुझे तकलीफ देना नहीं चाहता है समझा कर। वो तुझे जताता नहीं है मानता तो बहुत है तुझे"

"हां तुम बहुत जानते हो उसे।"

"क्यों नहीं जानता भाई है अपना।"

इसी बात को ध्यान में रख के मैंने उस से पूछा। विशु फिर उस लड़की के पास खड़ा, उसका काम करवा रहा था तो मैंने उसे दिखाया

रितेश देखो, "ये क्या है? क्या इन दोनों के बीच कुछ शुरू हो चुका है?"

"हट पागल! ऐसा कुछ नहीं है।"

मैंने शाम को मिलने बोला विशु को तो उसने कोई बहाना बना दिया। मुझे गुस्सा आ गया। मैं गुस्से में सिर्फ़ बात नहीं करती थी उस से, कुछ बोलती नहीं थी।

दुसरे दिन वो फिर आगे पीछे घूमता दिखा उस लड़की के। मैने फिर रितेश से कहा –

"देखो तुम्हें अब भी लगता है कुछ नहीं है?"

"अब तो लग रहा है कुछ तो है, मैं सुबह से नोटिस कर रहा हूं।, फिर वो बोलने लगा ऐसा ही है ये, हमने वो ऑफिस जो छोड़ी थी उसमें भी ऐसा ही कुछ था इसका।"

ये बात मुझे पहले ही रितेश की जी एफ बता चुकी थी वो भी उसी ऑफिस में थी पहले। इसलिए मैं पहले ही शॉक्ड हो चुकी थी सुन कर। अब कुछ नहीं हुआ। फिर चारों तरफ़ सबके सब बोलने लगे थे की विशाल उस लड़की से बात करता है।

मैंने विशाल से पूछा, "तुम उस लड़की से बात करते हो?"

"कौनसी वो डेस्क नंबर 12?"

"अच्छा तो नाम भी रख दिया उसका!"

"सब इसी नाम से बुलाते हैं उसे, मैं नहीं बुलाता।"

"बात तो करते हो तुम?"

"ऐसा कुछ नहीं है यार।"

"तुम्हारे पास उसका नंबर भी नहीं है ना?"

"नंबर तो है।"

"बांटा नहीं तो कैसे चला गया नंबर?"

"मैंने नहीं दिया वो देके गई थी मेरी टेबल पर रख के चली गई थी।"

"और तुमने ले लिया!"

"छुट्टी का बोल रही थी।"

"आई डी लेनी थी या नंबर?"

"यार तुम समझ क्यों नहीं रही हो? ऐसा कुछ नहीं है।"

"ठीक है कुछ भी करो नंबर लो या आईडी।"

"पागल हो मैं नहीं करता उस से बात। तुम्हारे बाद में किसी को देखता तक नहीं हूं।"

"बस बस देखा है मैंने।"

मुझे एक अजीब डर लगा कि विशु मुझसे दूर हो रहा है मैं विशु को खुद से दूर नहीं जाने दूंगी, वो भले कुछ भी बोल रहा हो बट मुझे फील हो रहा था।

एक मन कह रहा था जाने दूं इसे शादी भी फिक्स हो चुकी थी उसकी तो, मगर दिल पर जोर कहां चलता है जितना रोकते हैं हम दिल को उतना ही आगे भागता है।

दूसरे दिन वो लड़की बैठी दिखी मुझे लड़कियों में, मैं सोच रही थी इस से ही पूंछू लूं।

सोच कर ही मेरे अंदर घबराहट होने लगी कैसे पूछूंगी कुछ उल्टा बोल दी तो फिर मैंने जाके सीधा पूछ ही लिया। सब बैठे थे लंच खत्म होने के बाद सबके सामने पूछा,

"तुम विशाल से बात करती हो?"

"नहीं तो, मेरा फिआंसी है शादी होने वाली है मेरी सगाई हो चुकी है। वैसे तुम क्यों पूछ रही हो ये सब?"

"मैंने सुना है तुमने नंबर दिया है उसे।"

पास बैठी आंसू भी बोल पड़ी, "मैंने भी सुना है ये तो, तुम विशाल सर से बात करती हो।"

वो बोली, "नहीं ऐसा कुछ नहीं है।"

"सच में तुम्हारी तरफ से ऐसा कुछ नहीं है ना!" मैंने उस से पूछा।

"नहीं है।"

अगले दिन वो फिर दिखा मुझे उसके पीछे लंच के लिए जाते में।

मेरे पूरा बदन हिल गया, हाथ कांपने लगे, सीने में जलन होने लगी।

सब लंच करने बैठ गए मुझे भूख नहीं लग रही थी तब ही से जबरजस्ती भी अंदर ही नहीं जा रहा खाना। जहां वो लंच कर रही थी मैं वहीं गई।

"तुम सच में बात नहीं करती ना उस से? वो तो बोल रहा था तुम कॉल करती हो?"

बोली, "तुम क्यों पीछे पड़ गई हो मेरे? मैं किसी से भी बात करूं।"

"तुम किसी से भी बात करो बस विशाल से मत करना।"

"क्यों तुम्हारा क्या है वो? रिलेशन में हो तुम दोनों?"

"हां।"

"लगता तो नहीं है।"

राधा पास बैठी थी मैंने उसकी तरफ इशारा करके बोला, इनसे पूछ लो।

वो बोल पड़ी हां 6 महीने से तो मुझे पता है और पहले से "रिलेशन में है ये तो।"

"मुझे भूख भी नहीं लग रही तब से पता है मेरी हालात देख रही हो। कांपते हुए हाथ दिखाती हुई बोली मैं। प्लीज मेरे लिए उस से बात मत करना प्लीज़।"

वो कुछ नहीं बोली। रितेश उसे दूसरे डिपार्टमेंट भेज देता था रोज़ रोज़। "मैं इसका ट्रांसफर करवा दूंगा तुम चिंता मत करो।" मुझसे बोलता था।

विशु ने मुझे ब्लॉक कर दिया। वो नाइट ड्यूटी जा रहा था। और वो दोनों रात को बातें करते थे। फिर एक दिन उसने मेरे पास कॉल करके उसे लाइन पर लिया। मैं कुछ बोली तो कॉल काट दी। उस लड़की को मैं देखती वो दूसरे सीनियर दिनेश को फ्लर्ट करती थी। एक दिन फालतू में दिनेश के पास बैठ के हंस के देखे जा रही थी उसे। जबकि वो उसकी तरफ़ देख भी नहीं रहा था। ये सीन देख कर मुझे बहुत खुशी हुई अंदर से।

मैंने उसे बताया, "तुम्हारी सेटिंग दिनेश के पीछे पड़ी है।"

"अच्छा लगा मुझे, मेरे बाद जो चुना तुमने एक दिलफेंक यार को।
बाय द वे, मुबारक़ हो, आपका नया शिकार आपको।।"

दूसरे दिन वो मेरे पास आई और बोली। "वो तो बोल रहे थे, मेरा व्याख्या से कोई रिलेशन नहीं है। मैं उसे बिल्कुल पसंद नहीं करता वो ही पीछे पड़ी है मेरे।"

"क्या? सच में ऐसा बोल रहा था वो!"

"हां यही बोला।"

"तुम देख रही हो सब कुछ। क्या तुम भी चाहती हो जो मेरी हालत है कल तुम्हारी हो? कल को तुम्हारे बारे में भी ऐसे ही बोल सकता है।"

"नहीं शादी करेगा मुझसे। मैंने पहले शादी का ही पूछा। बोला हां, घर में सबसे बड़ा हूं मेरी ही चलती है। घरवाले मेरी ही मानते हैं। मेरे मम्मी पापा की फिक्र छोड़ दो तुम।"

मैं बोली, "क्या बोल रही हो तुम! उसकी सगाई हो चुकी है।"

"हां हो गई थी। उसने शादी कैंसल कर दी है। बोल रहा था मैं कुछ भी कर सकता हूं तुम्हारे लिए।"

(किस किस से ऐसा बोलेगा ये बंदा।)

"तुम तो बहुत सुंदर हो, बहुत लड़के लाइक करते होंगे तुम्हे। प्लीज़ उस से बात मत करना। वो तुम्हारे लाइक नहीं है। उसे मेरा ही रहने दो।"

विशु मुझसे बात नहीं कर रहा था लेकिन उस दिन उसने शाम को कॉल किया। मैंने उठाया, मुझे मालूम था उसके बारे में ही बोलेगा कुछ।

"कहां हो? क्या कर रही हो?"

(मुझे शायद मार्केट में बुलाएगा कुछ खाने पीने को)

लेकिन फिर उसने बोला, "क्या बोली थी उस लड़की को?"

"क्यों तुम्हें क्या मतलब मेरे पास कॉल मत करना बस। किसी से भी बात करो मेरे पास कॉल मत करना बस।"

"कहां हो?"

मार्किट में, बस स्टॉप पर।"

"आ रहा हूं।"

मैं वहां से आके मेरी गली की कॉस्मेटिक दुकान में गई। उसकी कॉल आई, "कहां हो?, यहां तो नहीं दिख रही।"

"रूम पर हूं।"

मैंने कॉल काट दी उसने और कॉल की। मैंने रिसीव नहीं की फिर। वो मुझे मार्केट में देखता हुआ मेरे रूम की तरफ गया। मैंने कॉस्मेटिक की दुकान में से उसे देख लिया था आते हुए। उसने रूम पर पहुंच कर तुरंत फिर कॉल की। मैंने बोला मैं मार्केट में हूं और फ़िर कॉल रिसीव नहीं की। वो जाता हुआ दिखा तो मैं अपने रूम पर गई।

मैं रोटियां बना रही थी किचन में। मेरे हाथ आटे में हो रहे थे। वो अचानक से किचन में आया आते ही बोला

"अंदर चलो।"

"रोटी तो बना लूं, (मैं हाथ दिखाती हुई बोली।)

उसने मेरे हाथ पकड़े और हंसके मुझे रूम में लेके आया। शिवानी को बोलते हुए कि "खाना तुम बना लो।"

और रूम में ले जाते ही गुस्से में मुझे धक्का दे कर बिस्तर पर गिराया। बोलते हुए, "कॉल क्यों नहीं उठा रही थी"

फिर अपने एक हाथ से मेरे दोनों हाथ पकड़ के, मेरे गालों पर थप्पड़ मारने लगा, "क्या बोली उसे मैंने मना किया था ना उसे कुछ नहीं बोलना फिर क्यों बोली?"

मैं उसे हाइपर देख कर डर गई थी ये कहीं मुझे मार ना डाले, कोई मुझे बचाए, लेकिन मैंने किसी को आवाज नहीं दी। मैं हंगामा नहीं चाहती थी मैं अब भी पूरे होश में थी।

आंटी है ऊपर, दिख जाएंगे", मैं बोली।

"तो दिखने दो।"

(मैं शांत स्वभाव की लड़की आज तक कभी किसी से हंगामा नहीं किया इस टाइप का तो बिल्कुल नहीं।)

मैं अपने चेहरे को पलट पलटके, गाल छुपाके बचाने की कोशिश कर रही थी। वो पटाक पटाक मारे जा रहा था। मेरे दोनों हाथ उसने अपने एक हाथ से पकड़ रखे थे और पैर भी बैठ के दबा रखे थे। मैं बस अपना चेहरा उधर उधर करपा रही थी । वो थप्पड़ पर थप्पड़ जड़े जा रहा था। इतनी तेज आवाज़ थी थप्पड़ की कि ऊपर तक आवाज़ जा रही होगी पता चल रहा था।

इतने में किचन से शिवानी आई गुस्से में चीखती हुई, "निकल बाहर, यहां ये सब नहीं कर सकता तू।"

वो बोला, "तुम हम दोनों के बीच में कुछ नहीं बोलोगी।

क्यों?"

"क्यों नहीं बोलूंगी मैं?"

"हम दोनों के बीच में बोलने वाली तुम कौन हो?"

"इस रूम में हाथ नहीं लगाने दूंगी मैं इसे। बाहर भले तुम मार भी देना। यहां कुछ नहीं बोल सकते।"

उसने फिर भी मुझे एक थप्पड़ जड़ दिया। मुझे डर लग रहा था ये कहीं शिवानी को भी थप्पड़ ना मार दे। ज्यादा बवाल हो जाएगा। वो रोकने लगी तो उसने उसकी तरफ भी हाथ बढ़ा कर रोक लिया। मगर शिवानी ने उसे मार दिया और चीख चीख कर बोल रही थी, "बाहर निकल।"

सुनके आंटी अंकल आ गए ऊपर से। वो आंटी से बोलने लगा,

"मेरी एक फ्रेंड है उसे ऐसे बोल रही थी। इसे ऐसे नहीं बोलना चाहिए। क्यों बोली थी ये उसे ऐसा।"

अंकल उसे खींचके बाहर करने लगे और डंडा लेके मारने लगे। आंटी छीन रही थी। फिर मैंने छीन के रखा और उस से कहा "तुम जाओ। जाओ तुम।"

वो अपनी बात समझाना चाह रहा था कि उसने कोई गलती नहीं की। मेरी ही गलती थी। अंकल कुछ भी सुनना नहीं चाह रहे थे। वो तो सीधा उसे पीटना चाह रहे थे। और वो जा ही नहीं रहा था।

मैं बार बार बोल रही थी "तुम जाओ" विनम्रता से बोल रही थी।

तो आंटी मेरी सकल देख रही थी ये इतना सब कुछ होने के बाद भी ऐसे बोल रही है इससे।

वो गया फिर उसने कॉल की मैंने रिसीव की।

बोला, "बाहर आओ बात करनी है तुमसे।"

"मुझे कोई बात नहीं करनी तुमसे।"

"एक बार आ जाओ प्लीज।"

"नहीं।"

"सॉरी, कैसे बोलूं यार समझ में नहीं आ रहा! मैं ज्यादा ही हाइपर हो गया था। बाहर आ जाओ एक बार प्लीज़।"

मैंने कॉल काट दिया।

उसने फिर कॉल की। सॉरी बोलने लगा और बोला "उस लड़की ने हाथ उठाया है मुझ पर उसे छोड़ूंगा नहीं।"

"उसे कुछ मत बोलना उसने कुछ गलत नहीं किया है।"

"उसने मुझ पे हाथ क्यों उठाया?"

"गर मेरा बाप मुझे पीटता और बचाने पर भी नहीं मानता तो तुम क्या करते? उन्हें तो सिर्फ बचाना था कैसे भी सही।"

"कुछ बोलूंगा नहीं उसे करूंगा।"

"कुछ बोला ना तो देख लेना अपने बारे में कुछ नहीं बोलूंगी मगर फिर कुछ भी कर सकती हूं।"

(सच में यार मुझे ना गुस्सा आया उस पर ना नाराज़ हुई ना थप्पड़ खाने का इतना दुख हुआ बचपन के बाद आज तक मम्मी पापा से भी थप्पड़ नहीं खाए थे कभी।)

नेहा और शिवानी कह रहीं थी। नेहा ने पूछा, "तुम बात कर रही हो उस से?"

शिवानी बोली, "अभी बात करके आई है ये तो।"

नेहा बोली, "हम तो एक महीने तक नहीं बोलते बुखार आ जाता हमें तो।"

अगले दिन उसने ऑफिस में मुझसे पहले पहुंच कर रितेश को बता दिया, दो तीन लोग और थे वहां।

मैं उस से दूर हो के जा रही थी।

"इधर आओ बेटा, नाराज़ हो? सॉरी।"

मैं सीधी अपनी डेस्क पर चली गई।

बार बार मेरे पास आ कर सॉरी सॉरी बोल रहा था।" मैं कुछ नहीं बोली।

दूसरे दिन मेरी तबीयत खराब हो गई थी।

अध्याय 3

मैनेजर ने बोल दिया, "तबियत ख़राब है तो बैठो आराम करो। जाना चाहो तो चली जाओ।"

"जाना नहीं है सर, रूम पर अच्छा नहीं लगेगा, काम कुछ कर नहीं पाऊंगी।"

मेरे पास मैनेजर और दूसरे लोगों को देख कर, बार बार मेरे पास आ कर पूछ रहा था, "क्या हुआ बेटा? तबियत ख़राब है? क्या हुआ?"

सीनियर के सामने ही बहुत देर तक मेरे पास खड़ा हो कर जा रहा था। फिर भी मैंने कुछ नहीं बोला।

सीनियर बोले उस से ही, "लड़की ने गहरी चोट खाई है। इसका वाला किसी और का होने जा रहा था।"

बोला, "ऐसा है क्या बेटा! रूम पे छोड़ के आऊं?"

इस बार मैंने उसे मुंडी हिला के रिप्लाई कर दिया, "नहीं।"

पूछने लगा, "तबियत खराब है?"

"हम्मम।"

बोला, "आराम से बैठो तो। जाना हो तो बता देना। छोड़ आऊंगा।"

ये सोच सोच के हजारों बार आंसू आए कि उसने किसी और के लिए मुझ पर हाथ उठाया।

शाम को मैं छत पर घूम रही थी अकेली। आंटी कुछ काम से ऊपर गईं। मैं घूमती रही आंटी काम करती रहीं। मैं खड़ी थी मेरे पास आ के खड़ी हुई चुपचाप। फिर मुझे समझाने लगी। "किसी से इतना प्यार नहीं करना चाहिए। लड़के फिर उसकी कद्र नहीं करते। ऐसे ही होते हैं लड़के सारे, अब उसे दूसरी लड़की पसंद आ गई। कुछ ज्यादा

ही केयर करने लगी थी तू उसकी। दोस्ती प्यार कुछ नहीं होता बेटा, सब मतलबी होते हैं। खुद से ज्यादा कभी किसी को इंपोर्टेंस नहीं देनी चाहिए।"

"हम्मम।"

मैं उसको खाना खाने को रोक रही थी एक दिन जबरजस्ती शर्ट पकड़ कर।

"जा रहा हूं मैं, कपड़े धोने हैं मुझे।"

आंटी आ गई बोली "इतने प्यार से रोक रही है तो खा के ही जा अब।"

आंटी से बोला "नहीं आंटी कपड़े भीगे रखें हैं।"

मैं आंटी को बोली गेट का ताला लगा दो। आंटी ने लगा दिया। वो ऐसे ही करता था, भागने की बहुत जल्दी पड़ती थी उसको। आंटी देखती थीं ना हमको साथ में, मार्किट में भी, रूम पर भी इसीलिए उनको सब पता था।

मैंने शाम को मैसेज किया। "सॉरी बोलना है ना तो उस लड़की के सामने बोलना।"

दूसरे दिन ऑफिस में, फिर सॉरी बोल रहा था।

सुनीता आंटी – "ऐसे क्यों हो सेड सेड? खुश रहो, (गले लगा कर मुझे गाना गाने लगी, कोई नेपाली सॉन्ग।) मैं भी मुस्कुराती हुई गाते हुए जा रही थी उनके पास से। वो पीछे से मेरी नकल करता हुआ आया। कुछ बोलने लगा मैं पलट कर देख के आगे बढ़ गई।

आंटी बोली, "क्या हुआ बेटे बोलो सर क्या कह रहे हैं। इतनी नाराज़गी ठीक नहीं।"

मैं आगे बढ़ गई तेजी से।

पूछने लगा l, "मैं घर जाऊंगा कल चलोगी?"

मैं बिना कुछ कहे चलती चली गई ।

मैंने शाम को देखा इंस्टा पर उसने उस लड़की को फॉलो कर रखा था। मुझे गुस्सा आया और मैंने कॉल लगाया। उसके पास जा ही नहीं रही थी शायद। फिर मैंने कई

लोगों के पास की किसी ने नहीं उठाई। तो मैंने उसकी कविता के पास कर दी उसने एक बार में ही उठा ली। फ़िर मैंने उसके आगे शिकायतों की लाइन लगा दी।

"तुमने मुझे क्यों बताया था कि वो बहुत अच्छा लड़का है जबकि तुम सब जानती हो। वो मेरे ही नहीं किसी के भी प्यार के काबिल नहीं है।"

वो मुझ पर भड़क गई पता नहीं क्या क्या बोली।

"अच्छा ये बताओ कि तुम कितने दिन से रिलेशन में हो?"

"मैंने बताया कुछ 8 महीने से।"

"प्यार करती हो उससे?"

"हां।"

"कितना?"

"इतना कि उसके लिए मर भी सकती हूं मार भी सकती हूं।"

"सच में क्या हो गया है इतना प्यार?"

"हम्म।"

"तो एक बात पूछूं सच बताओ तो पूछूं?"

मैंने बोला, "पता चल गया मुझे क्या पूछोगी तुम क्योंकि तुम उसको बहुत अच्छे से जानती हो। पूछो।"

"बताओ क्या पूछने वाली हूं?"

"पूछो।"

"जाने दो।"

"वो तो बहुत फ्लर्टी है यार। सच में यार वो बहुत फ्लर्टी है कोई उसे कितना भी प्यार करे वो किसी का नहीं रह सकता।"

(रॉब से बोल पड़ी।) "मैं उसके बारे में कभी गलत नहीं सुन सकती पता है तुम्हें। मैंने रिकॉर्डिंग कर रखी है सुनाऊंगी अब उसे। हां जानती हूं लड़कियों से जल्दी फ्रेंडली हो जाता है, मगर मैं उसकी बुराई नहीं सुन सकती समझी। मैं फिर कुछ भी कर सकती हूं। बताऊंगी उसे भी कोई भी लड़की मेरी तरह नहीं चाह सकती तुम्हें। तुम चाहे किसी को कितना भी चाह लो। मुझे आज ही अनब्लॉक किया गया है। घर आया है। बोलेगा आ जाओ जानू। जानू दौड़ी दौड़ी आएगी। बस मतलब के लिए ही याद करता है ये बंदा। अब कभी नहीं जाऊंगी। अब उसके घर सीधी पुलिस लेके जाऊंगी बेटा बहुत हो गया। अब देखूंगी उसे और उसके बाप को भी ना वो रहेगा ना उसे कोई बचाने वाला।"

"रहने दो ऐसा कुछ मत करना उसकी शादी होने वाली है।"

"कब! वो तो बोल रहा था कैंसिल कर दी, झूठ बोला मुझसे। अब तो और लेके जाउंगी उसके घर पुलिस वाली बारात। बता देना उसे कल वो आ रही है तुम्हारे घर।"

"नहीं ऐसा मत करना वो भी तकलीफ़ में है उसके भाई की तबियत खराब है और भी प्रॉब्लम में है वो।"

"बोले जा रही थी, नहीं तुम बस बता देना उसे कल मैं आ रही हूं उसके घर।"

(उसकी कॉल आ रही थी) मैंने कविता से कहा, विशाल की कॉल आ रही है। वो बोली "मुझे लाइन पर ले लो प्लीज़, मुझे उसकी आवाज़ सुननी है। मैं कुछ बोलूंगी नहीं, प्लीज़ पिक करो कॉल।"

उसकी एक कॉल कट गई इसी कश्मकश में की लाइन पर लूँ कि नहीं। दूसरी कॉल आई मैंने लाइन पर लिया वो डायरेक्ट, "बोला तबियत कैसी है?"

मैंने बोला, "तुम्हें उससे क्या?"

"बताओ ना, आज देखी भी नहीं जा रही थी मुझसे।"

इतने में कविता बोल पड़ी, "अच्छा इतनी फि......।"

मैंने कॉल काट दी। और कविता से कहा विशाल ने कॉल काट दी।

बोली, "मेरी आवाज सुनके इस बंदे ने कॉल काटी है ना! अब देखना।"

मैंने कविता की कॉल कट कर फिर विशाल के पास कॉल की।

"बताओ, उस रिया को क्यों फॉलो किया है?"

"अभी ब्लॉक करता हूं वो अच्छी लड़की नहीं है। इतने लड़के आ रहे थे उसका ट्रांसफर रुकवाने के लिए। और सेक्टर 18 वाली ऑफिस का एक लड़का है ना गौरव उसकी बाइक पर जा रही थी बाल खोल कर। वो अच्छी लड़की नहीं है यार। मैं नहीं करता उस से बात। तुम फालतू की टेंशन ले रही हो। दवा ली?"

"नहीं।"

"ले आओ और खाना खा लो, और बिजी कहां थी?"

"था कोई।"

"बात कर लो तो उस से।"

"बताऊं कौन था?"

"कौन था?"

मैं बताते बताते पलट गई, "तीखी मिर्ची थी।, (वो पाखी को तीखी मिर्ची बोलता था)"

"कैसी है मिर्ची?"

"ठीक है।"

"खाना खा लो तो अब।"

प्यार में ऐसा क्यों होता है जब कोई बात ना करे तो बहुत गुस्सा आता है उस पर, और कर ले थोड़े से प्यार तो बहुत ज्यादा गुस्सा भी रफू हो जाता है।

उसने अच्छे से बात की तो मुझे बुरा लगने लगा कि मैंने इसके बारे में उल्टा सीधा बोल दिया कविता को। और उसे मेरी फिक्र है। मुझे बहुत गिल्टी फील हो रहा था कविता को सब कुछ बता कर। मैंने कविता को कॉल क्यों किया था?

फिर विशु को मैसेज किया कि "एक गलती हो गई है, सॉरी"

उसने मेरे पास कॉल सुबह की और बोला "हां क्या गलती कर दी बोलो।"

"मैंने बताया।"

"मैंने कविता को सब कुछ बता दिया।"

"मेरे पास कॉल नहीं कर सकती थी क्या? मुझसे पूछती पहले की उस के लिए क्या क्या बोलना है।"

"मैंने कॉल की थी लेकिन तुमने उठाई नहीं थी।"

"तुम्हारी ही हालत देखी थी मैंने बहुत बुरा लग रहा था आंसू आ गए थे आंखो में। तो उसका क्या हाल हुआ होगा मैंने उसे बता रखा है, मैं तुमसे बात नहीं करता, और उस से करुंगा अब। और तुमने सब कुछ उगल दिया उसके सामने। फोटो भी सेंड कर देती उसे। अब बचा ही क्या है!"

"तो बात ही क्यों करते हो उससे?"

"वो मेरा पहला प्यार है उसे नहीं भूला सकता मैं। उसके लिए तो मैं अपनी शादी भी कैंसिल कर सकता हूं। बस उसके घर वाले मान जाएं एक बार। वो तो अपने परिवार के खिलाफ जाने को भी तैयार है लेकिन मैं ऐसे करना नहीं चाहता। वो बहुत चाहती है मुझको। मैं भी चाहता हूं उसको। मैं जानता हूं तुम भी मुझको बहुत चाहती हो व्याख्या। तुमने कहीं किसी चीज में कोई कमी नहीं छोड़ी मेरे लिए। मगर मैं तुम्हें नहीं चाहता।" ,मुझे तुमसे प्यार नहीं है, उसने बहुत कुछ किया है मेरे लिए और मैंने भी किया है उसके लिए। लेकिन तुम्हारे लिए कुछ नहीं किया कभी मैंने। तुमने क्यों बताया उसे सब कुछ। क्या गुजरी होगी उस पर। सच कहा है किसी ने कि लड़कियों के पेट में कुछ रुकता नहीं है। तुम भी बाकी सबके जैसी हो। मैं तुम्हें अलग समझता था मगर तुमने भी दिखा दी अपनी असलियत। क्या जरूरी थी उसे सब कुछ बताने की (उसने मुझे गाली भी दी कई बार, एम सी, साली) जरूरी क्या थी सब कुछ बताने की तुम मुंह खोल कर खुद को ही नीलाम कर रही हो और कुछ नहीं।"

"उसने बोला ना कि "मुझे तुमसे प्यार नहीं है", मेरी ना आँखें नम हुई ना आवाज़ डबडबाई एक दम सांसें थम सी गईं पूरी, मैं सुन्न हो गई खड़ी खड़ी। फिर सीढ़ियों पर बैठ गई जैसे सारी दुनिया थम गई हो अब आगे कुछ भी नहीं बचा। कुछ दिखाई ना दे रहा हो जैसे मुझे। मैं जहां हूं वहां ना कोई इंसान है ना हवा, पानी पेड़ पौधे, सुकून चैन कुछ भी नहीं जैसे सब हमेशा हमेशा के लिए नष्ट हो गए हों"

वो बोले जा रहा था और मैं... वो समझ गया कि मुझे हर्ट हो रहा है। बोला, "मिलके बात करते हैं सोमवार को आ रहा हूं। चिंता मत करो, दवा ले लेना।"

मैं दो घंटे तक सीढ़ियों पर बैठी रही एकदम शांत ना आंखों में आंसू आ रहे थे ना सीने से ऊपर सांस। मैं कहां हूं मुझे ख़बर ही नहीं रही। डेढ़ दो घंटे बाद नेहा ने नीचे से आवाज़ दी। व्याख्या, "डार्लिंग कहां हो, आ जाओ, खाना खाने का।"

"आ रही हूं।"

मैंने फिर कॉल की विशाल को। "अपनी कविता को लाइन पर लो एक बार।"

बोला, "मैंने ब्लॉक कर दिया है उसे और तुम भी कर दो।"

"वो मुझे बहुत कुछ बोल गई है।"

मैं बोली, "मुझे क्लियर करना है सब।"

"वो आ कर बात करते हैं, उसे तुम ब्लॉक कर दो।"

उसने कॉल काट दी मैं स्तब्ध सी सीढ़ियों पर बैठ गई।

दूसरे दिन मैंने फैसला किया कि उसके पहले प्यार के लिया मैं उसे छोड़ देती हूं। मैंने उसकी पूर्व प्रेमिका को भी बोला।, "कि तुम्हें लगता है मैं बीच में आई हूं तो मैं निकल जाती हूं।"

"निकलता वो है जो बीच में आया होता है। तुम मेरे पास अब ना कॉल करना ना कोई मैसेज।"

"मैं बता रही हूं कि उससे बात नहीं करूंगी अब।"

"कुछ भी करो मुझे उससे कोई मतलब नहीं है अब। और उससे भी बोल देना वो मेरे पास कॉल ना करे कभी।"

मैंने दो दिन बाद उसकी इंस्टा आईडी देखी तो रिया को उसने फिर से फॉलो कर लिया था। और उसने भी इसे कर रखा था। फिर मुझे गुस्सा आ गया और मैंने मैसेज कर दिया

"अब मर्डर होगा तुम्हारा वो भी ऑफिस में ही। तुमने जिसके लिए मुझ पर हाथ उठाया उसी से तुमने आज भी बात की। तुम तो गए अब।"

"नहीं यार ऑफिस में कुछ मत बोलना।"

"क्यों? जब तुम उस से ऑफिस में बात कर सकते हो। तो मैं मर्डर क्यों नहीं!"

"पता है वहां सही नहीं है। तुम्हें भी जॉब की प्रॉब्लम आ सकती है।"

"जॉब की किस को पड़ी है! अब कुछ भी हो, डॉन्ट केयर। तुम्हें मार कर मरना ही तो है मुझे फिर किस बात का डर। नहीं छोड़ा तुमने मुझे जीने लाइक।"

"सॉरी यार।"

"व्हाट सॉरी? अब असर नहीं करेगा तुम्हारा सॉरी। अब तुमने बात की रिया से तो मैं देखते ही ठिकाने लगाऊंगी दोनों को।"

(मेरे मन में सच में मरने मारने वाली जुनून जाग गया था। फैमिली, फ्रेंड्स, करियर सब भूल गई थी मैं। वो नहीं तो कुछ भी नहीं। वो भी तब तक रहा जब तक उसने रिया से बिल्कुल दूरी नहीं बना ली।)

मैं घर जा रही थी, "बोला कल जाओगी घर? मैं छोड़ आऊंगा बस स्टैंड तक।"

"नहीं मैं चली जाऊंगी।"

"अजय भी जाएगा उसको भी छोड़ के आना है ना मेट्रो स्टेशन, तो पहले तुम्हें छोड़ देंगे।"

"अजय को छोड़ना है, छोड़ आना।"

"ज्यादा मत बनो ठीक है। मैं चला जाऊंगा तो क्या है।"

"मुझे किसी की कोई ज़रूरत नहीं है।"

सुबह बस स्टॉप पर आ कर वेट कर रहे थे दोनों। मैं पहुंची बस में बैठे बस स्टैंड पहुंचे। बस में कोई नहीं था। मैं अकेली थी वो भी बस में बैठ गया।

"तुम टेंशन मत लिया करो यार, इतना मत सोचा करो मेरे बारे में ....।"

(उसकी मीठी मीठी बातों में बह कर मेरे मन में बहुत प्यार आ रहा था उस पर। मन कर रहा था उसे किस करूं, उसकी बातें सुनती जा रही थी और मन बार बार उसे किस करने को उकस रहा था। मगर मैं बैठी रही। वो बराबर वाली सीट पर बैठ कर बोल रहा था। अचानक मैं उठ कर आगे बढ़ी किस करने को, उसने रिया का नाम ले लिया मैं वापस से बैठ गई, जैसे मेरी मासूम सी भावनाओं में अचानक से आग लगा दी गई हो।)

"प्लीज एक बार, तुम कुछ मत कहना उस लड़की से।"

"मेरे सामने बात मत करना उससे।"

"सामने नहीं बोलूंगा तुम गलती से देख भी लो तो कुछ मत बोलना।"

"बोलूंगी ही नहीं जान ले लूंगी मैं, मैं एक दम गुस्से में बोली।"

"हंस कर बोला, "इतना प्यार करती हो मुझसे जान ले भी सकती हो मेरे लिए जान दे भी सकती हो?, कविता बता रही थी। एक बार सूली पर चढ़ाने दो ना उसे, फिर नहीं करूंगा उस से बात।"

"क्यों खेलते हो लड़कियों की भावनाओं के साथ, तुम्हें इतनी तलब है कि हर रोज एक नई लड़की चाहिए, और चाहिए तो उसके लिए भी तो ऑप्शन है।"

"क्या?"

"कोठे पे चले जाया करो।"

"तो कोठे वाली ही है वो।"

"तुम क्या हो?"

कुछ नहीं बोला।

"जो खेल खेलने का शौक है ना तुम्हें, उसके लिए भी मैदान है फीलिंग के साथ क्यों खेलते हो।"

बस चल दी।

बोला, "कुछ खाओगी?"

"नहीं।"

"फ्रूटी लाऊं, पानी?"

"कुछ नहीं।"

बस की रफ्तार बढ़ने लगी, दौड़ कर पानी लेकर आया। चलती बस में चढ़ कर पानी दिया।

"प्यास लगेगी रास्ते में पी लेना। कोई प्रॉब्लम हो तो कॉल करना। टेंशन मत लेना, मैं नहीं करूंगा उस से बात। मैं बस ऐसे ही बोलता हूं और तुम सच मान लेती हो। ख़्याल रखना अपना, बाय।"

मैं घर थी उसने कॉल की।

"कविता तो बोल रही है तुमने गाली दी मुझे।"

"गाली तो नहीं दी मैंने।"

"लाइन पर लूँ तो उसे?"

"हां लो।"

"बताओ कविता क्या बोली थी?"

"ये कुत्ता है कुत्ता.....।" बोली नहीं? वो बता रही थी ऐसा तुम बोली हो मुझे।

"मैंने नहीं बोला ये।"

"कविता बोल रही, बोला है रिकॉर्डिंग भी है उसके पास।"

"कुछ भी हो मैंने नहीं बोला है तो नहीं बोला है।"

कविता को लाइन पे लिया उसने।

"सुनो कविता, इसने कुत्ता बोला था ना मुझे?"

"हां बोली है ये, रिकॉर्डिंग भी है मेरे पास।"

विशु बोला, "अब बोलो!"

"मैंने कोई गाली नहीं दी मैं सिर्फ बता रही थी ऑफिस की कविता.....।"

"(वो बीच में भड़क कर बोला) मुझे गाली दी बी सी साली झूठ और बोल रही है। मैंने तुमसे सॉरी बोला! सॉरी इस लिए बोला तुम्हारे रूम पर जा के मैंने हंगामा किया था। और अब तो साली चौराहे पर भी पीट दूंगा। "

कविता बोली, "दो चार उतार देना इसके कंसरे पर जहां भी मिले, बीच में आई है ना ये।"

विशु बोला, "एम सी तुझ में बिल्कुल अकल नहीं क्रैक माइंड किसी को भी कुछ भी बोल देती है।"

मैं बोली "मैंने कई बार बोला था कि मुझसे ज्यादा कोई और लड़की जरूरी हो तो मुझसे बात मत करना।"

"(रोके बोलने लगा कविता से) मैं नहीं करता इस से बात। मुझको गाली दी है। मैंने इतनी हेल्प की थी इसकी।"

"ना ना वीरन रोते नहीं जाने दो इसे भाड़ में, (कविता उसे बहलाते हुए बोली।) अब के कुछ बोली तो फाड़ दूंगी साली को।"

(मेरी आवाज भी रुआंसी सी निकल रही थी‘ इतना बड़ा झटका जो लगा था जो आदमी कल तक अपनापन जता रहा था मुझसे। आज वो अपने असली रंग में आया। मैं पहले क्यों नहीं पहचान पाई इसे?)

कविता मेरी आवाज़ सुनके बोली, "ओह हेलो ढोंग मत दिखा। पैसों के लिए रोके भी दिखा देती हैं ऐसी लड़कियां।"

"पूछ लो विशाल से पांच रुपए भी अपने ऊपर खर्च करवाए हो इसके।"

वो कुछ नहीं बोला।

मैंने कहा तुम दोनों ने जो खेल खेला है मेरे साथ कभी माफ नहीं कर पाऊंगी। मैंने तुमसे पहले ही पूछा था, इसके बाद बताया विशाल ने मुझे तुम्हारे बारे में।

रोड़ किनारे बैठा के, वो किसी और से बात करती थी। कॉलेज का ही लड़का था। साथ पढ़ा था भाई भाई बोलती थी। उसकी कॉल आती थी रात 12 बजे तक। एक दिन रात में आ रही थी मेरे ही सामने कॉल। पहले तो वो उठा नहीं रही थी।

मैंने बोला, "उठा लो कौन कर रहा है इतनी रात में कॉल बार बार?"

"ट्यूटर है। बहन मानता है"

"इतनी रात में वो कॉल क्यों करेगा? उठाके लाउड स्पीकर करो।"

वो बोलने लगा गुस्से में, "कॉल क्यों नहीं उठा रही थी इतनी देर से।"

मैंने आवाज़ पहचान ली। मैंने उस से बात की फिर। कॉल डिटेल्स देखी।

"भाई रोज़ बात करता है क्या?"

मैंने उस लड़के से ही पूछा, "बहन है तुम्हारी?"

वो बोला, "प्यार करता हूं इस से।"

मैंने कविता से पूछा अब बताओ।

"मैं प्यार नहीं करती उस से। बात भी नहीं करती।"

"आज के बाद उसकी कॉल आनी नहीं चाहिए।"

फिर पता चला, बिना बताए उसके साथ घूमने गई थी। पूछा तो झूठ बोली। मुझे क्लियर पता चला तो सीधा उसके रूम गया। जाते ही तीन थप्पड़ मारे कान पर फटाक फटाक।

बोल रही थी, "बाबू गलती हो गई अब नहीं होगा ऐसा।"

"तुम्हारे घर बताऊंगा।"

"नहीं बाबू घर मत बताना भले मार दो मुझे मगर घर मत बताओ। सॉरी बाबू गलती हो गई।"

(मैं ही छोड़ के आया था उसे उसके घर।)

"मैं समझी सच में तुम उसे चीट की होंगी तब ही वो अकेला फील करता है। मगर सच तो तुम दोनों ही जानो हम तो तरस खा कर बर्बाद हो गए।

तुमने ही बोला था कि मेरी रिक्वेस्ट है उसका प्रपोजल एक्सेप्ट कर लेना। मैंने तो आगे बढ़ने से पहले ही कॉल किया था, तुमसे पूछा था। यार अब कियो ब्लेम कर रही हो?"

बोली, "हां मैंने बोला था। मैंने ये भी बोला था कि उसकी आंखो में आंसू नहीं आने चाहिए कभी। पर देखो बंदा रो रहा है।"

(वो ऐसे रो के दिखा रहा था उसे जैसे दो साल का बच्चा मां की गोद में लेट के शिकायत कर कर के रोता है।)

वो दोनों आपस में बातें करने लगे।

(कविता ओवर इतराते हुए) रो मत वीरन, तुम अपने पापा की कद्र करते हो ना! तो कर लो शादी जिससे पापा खुशी से कर रहे हैं। उसको तो काट दूंगी मैं, और इसे तो फाड़ूंगी बीच में से। फिर टॉन चेंज करते हुए बोली, तुम भी ऐसी लड़कियों को मुंह लगा लेते हो। तुम भी इसी लाइक हो, जब ही सुधरोगे।

तीन दिन बाद खुद ने ही मैसेज किए "कब आ रही हो?"

"क्यों! कविता ने ब्लॉक कर दिया क्या?"

"नहीं मैं ब्लॉक कर दिया हूं उसे।"

मैं उसे गुस्से में बोल तो रही थी बात ना करने को मगर तीन दिन से उसकी कॉल मैसेज का इंतज़ार कर रही थी। और मैसेज आया तो एक सुकून सा मिला पता नहीं क्यों उसकी गाली भी सर के ऊपर से चली गई उस वक्त। और उसके कॉल मैसेज को अब भी इग्नोर नहीं कर पाई।

फिर बातें होने लगीं। कॉल करके बुला के रोज साथ ऑफिस आने जाने लगा।

एक दिन जूस की दुकान पर बोला कि आफिस के लड़के बोल रहे थे, "व्याख्या तुम्हारे लेवल की नहीं है। तुम्हारे साथ अच्छी नहीं लगती।"

"कौनसे लड़के बोल रहे थे?"

लड़कियां भी तुम्हें पसंद नहीं करती बोलती हैं, "ऐसी लगती है बुढ़िया जैसी।" (मजाकिया लहज़े में नहीं रूडली बोल रहा था।)

"ये तो लड़कियों को ही पता है वो मुझे पसंद करती हैं या नहीं। और लड़कों की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। और तुम्हारे जैसे की तो बिल्कुल नहीं। मैं चाहती भी नहीं कि लोग मुझे पसंद करें। बस इतना चाहती हूं कि कोई नफ़रत ना करे। इतना मैं जानती हूं कोई मुझसे मोहब्बत करे न करे नफ़रत नहीं कर पाएगा। साफ क्यों नहीं कह देते कि तुम्हें कोई दिलचस्पी नहीं। मुझसे दूर होना चाहते हो ना! तो हो सकते हो खुशी से। हम कभी किसी की खुशियों के खिलाफ नहीं जाते, भले हमारा कुछ भी हो।"

"अरे यार कुछ लड़के बोल रहे थे मैं तो बता रहा हूं बस।"

"ऐसा करो तुम चले जाओ। मैं बुढ़िया हूं जानती हूं। दूर हो जाओ मुझसे, मेरी उम्मीद बढ़ने लगी है तुमसे। तुम्हें अपना समझने लगी हूं। सब कुछ जानने और समझने के बाद भी, मैं बहुत पागल हूं उस इंसान को भी अपना समझती हूं जो किधर से भी मेरा नहीं होता। मुझे अपना बनाने के लिए सिर्फ़ मेरा होने का ढोंग दिखाया होता है।"

"ढोंग दिखाता हूं मैं? तुम्हें ऐसा ही लगता है सब दिखावा।"

पता है शिवानी बार बार बोलती है, "तुम दोनों की जोड़ी अच्छी है। वो लंबा चौड़ा हैंडसम है तुम सुंदर हो गोरी हो उस से। दोनों अच्छे दिखते हो। और साथ में भी अच्छे लगते हो।"

"वो क्यों बोलती है हमारे बारे में।"

"अच्छा!"

"तुम बोल रहे हो इसलिए बता रही हूं। मुझसे कोई आज तक नहीं बोला कि तुम मुझसे अच्छे हो।"

अध्याय 4

"ऑफिस में धीरे धीरे सब लोगों को पता चल गया था हमारे रिलेशन के बारे में। ज्यादातर लोगों को रिया वाले मैटर के बाद पता चला था। विशाल नाइट में था। नाइट में से एक लड़का डे शिफ्ट में आया। उसने बताया विशाल सर के फोन में तुम्हारा नंबर लाडो नाम से सेव है। मुझे पता था लाडो नाम से मनाली वाली का सेव था। वो भी तब पता चला जब उसने अपने बर्थडे पर उसका स्टेटस स्क्रीनशॉट लेके अपने स्टेटूस पे लगाया था। मुझे वहीं गुस्सा आया ऑफिस से निकलते ही मैंने कॉल की,

"कहां हो?"

"बस स्टॉप पर हूं।"

"रुकना, मैं आ रही हूं।"

"मैं भी सोच रहा था बुला लूं 5 दिन से देखा नहीं है।"

मैं बस से उतर के सीधी उसके पास गई। भीड़ में ही मैंने उस से कहा, "मोबाइल दिखाओ।"

"क्यों?"

"दिखाओ।"

"लेकिन क्यों, हुआ क्या?"

"किस की कॉल आती हैं रात में भी ऑफिस में?"

मोबाइल दिखा ने लगा, "देखो आज सिर्फ घर से कॉल आई है, ये चार दिन पहले उसकी आई थी (उसकी मंगेतर की) और कौन करेगा हम जैसे लोगों के पास तुम्हारे सिवा।"

"फोन दिखाओ।"

"क्यों दिखाऊं मैं? नहीं दिखा रहा मैं, क्या करोगी तुम?"

"अपना नंबर ब्लॉक करना है।"

"मैं करे देता हूं, ये लो हो गया ब्लॉक, और बोलो।"

मैं बिना कुछ कहे चुपचाप आ गई, आंखों में आंसू लिए।

उस दिन मेरी मम्मी का फोन भी चोरी हो गया था। माइंड अपसेट था ही।

मैं आ रही थी तब ही ऑफिस की प्रीति मिली बोली चल रही हो व्याख्या ब्रिज पर? मैं चल दी। आंखों में आंसू थे, वो भी थोड़ा अपसेट थी उस दिन। बहुत देर बैठे रहे हम वहीं उसने अपना फ्रेंड बुला लिया था। अब इतना डर नहीं था हमको ब्रिज पर।

(हम बातें करते रहे।)

किसी से इतना प्यार नहीं करना चाहिए, लोग बिल्कुल कद्र नहीं करते। हमारी फीलिंग्स समझते ही नहीं," प्रीति बोलती जा रही थी।

मेरे आंसू आए जा रहे थे वो भी रो रही थी।

प्रीति मुझे बताने लगी "यार लड़के पहले तो बेचारे बनके रोएंगे। "हमें कोई नहीं समझता कोई प्यार नहीं करता" इनसे प्यार करने लगो तो इनका मम्मी रोना शुरू हो जाता है।

"मम्मी नहीं मान रही, दो महीने से बात नहीं की, खाना भी नहीं खा रही हैं"।

हम बोल दे – ठीक है अपनी मम्मी का देखो।

इसके बाद इनका विधवा विलाप शुरू हो जाता है।

"मम्मी की पसंद से शादी करके मैं कभी खुश नहीं रह पाऊंगा। हर बात पर तुम याद आती हो। एक दम से मिलने का मन करने लगता है"।

(प्रीति का फ्रेंड जिसे मैं जानती थी वो विशाल का रूममेट था जब मैं आई थी।)

"इसे क्या हुआ है ये क्यों रो रही है?" अजय ने प्रीति से पूछा।

"ये पूछो क्या नहीं हुआ है इसके साथ तुम अब भी पूछ रहे हो?" प्रीति उससे बोली।

मैंने एक फोटो क्लिक करवाया। और स्टेटस लगा दिया। मिस्टर ने सीन करते ही रिप्लाई किया – "वहां क्यों गई थी रात में किस के साथ गई थी?"

"तुम्हें क्या? ब्लॉक रखो खुश रहो।"

उसने व्हाट्सएप भी ब्लॉक कर दिया। फिर तीन दिन बाद मैसेज किया था इंस्टाग्राम पर।

मेरी स्टोरी देख कर "कौन मेहरबानी कर रहा है"?

"कोई नहीं।"

"जिसको बोलना है सीधा उसे बोल दिया करो।

मुझे बोलना हो तो मुझे बोलो, फालतू का दिखावा नहीं।"

"तुमसे कुछ नहीं बोलना मुझे।"

"हॉफ माइंड, मेरे को क्या बोलेगी एक पागल।"

"हां तुम्हें मुबारक हो तुम्हारा फुल माइंड।"

"ज्यादा बकवास नहीं समझी।"

"हम हॉफ माइंड ही अपने और अपनों के लिए परफेक्ट हैं।"

"बहुत हुआ ठीक है ना, मुंह बंद करके।"

"मेरा लड़ने का कोई इरादा नहीं है ठीक है।"

"दिल्ली चलोगी संडे को? मजा आ रहा है ना लड़ने में जितना मन करे लड़ लो ठीक है ना।"

"दिल्ली क्या लाडो से मिलने जाओगे?"

"ज्यादा बोल रही हो। थोड़ी खुशी मिल जाए मेरी नींद उड़ा रखी है।"

"मैंने क्या किया?"

"सब कुछ बोल के बोल रही हो मैंने क्या किया है, गुड जॉब।"

"ठीक है चलेंगे तुम अपनी लाडो से मिल लेना मैं अपने किसी से।"

"नहीं जाना मुझे कहीं पे ठीक है।"

"मैंने तुम्हारी नींद उड़ाने जैसा कुछ नहीं किया है।"

"दिमाग़ ख़राब हो रखा है जब से ही ठीक है ना।

कब से?"

"दो तीन दिन हो गए पूछा भी नहीं खाना खाया कि नहीं।"

"किधर से पूछती? हर जगह से तो ब्लॉक कर दिया है।"

"कॉल करके देखा एक बार भी, बोलती है ब्लॉक कर दिया।"

"कॉल की है कई बार। एक बार में ही कर दिया ब्लॉक एक सेकंड भी नहीं लिया, पता है मुझे बहुत रोना आया था।"

"बार बार बोलती है ब्लॉक करो। मेरे पास कॉल मत करना। बात नहीं करना। मेरे पास आओगी तो भी यही बोलोगी ब्लॉक करो। और कोई बात नहीं जब भी आती हो ये ज़रूर बोलती हो।"

"तुम किसी और से बात क्यों करते हो तो? मुझे बुरा लगता है"

"कहां करता हूं यार। वो सिर्फ दोस्त है मेरी। और कॉल वो करती है बस मैं बात कर लेता हूं"

"क्यों करते हो? मैंने बोला था ना उसे ब्लॉक कर दो।"

"मेरे पैसे हैं उस पर, वापस दे देगी तब कर दुंगा।"

"मुझे कर सकते हो बस।"

"तुम पैसे लेती नहीं देती हो इसलिए।"

"इतना टशन दिखाते हो।"

"वो मैं नहीं जानता क्या होता है, तुमको कहां से दिखता है?"

"तुम गुस्से में बात करते हो हमेशा।"

"तो तुम भी गुस्सा करो ज़रूरी है!"

"वो आ ही जाता है सामने वाले का एटीट्यूड देख कर। अब सो जाओ और खाना ज़रूर खा लेना बनाके।"

"मैं नहीं सोया जब से आया हूं।"

"अब सो जाओ तो मगर पहले खाना बनाओ, खा के ही सोना। रोटी बनाना और चावल नहीं।"

"ओके।"

"ठीक है कोई बात नहीं है मैं अकेला चला जाऊंगा।

ठीक है।"

"बहुत शौक़ है ना सबको दिखावा करने का कर लो दिखावा और बता दो सबको मैं साथ में जा रहा हूं।"

"कौनसी तीर्थ यात्रा पर जा रहे हो तुम?"

"मुझे नहीं जाना ठीक है ना। हर बात को कहानी बना देती हो, मुझे पागल समझा है मैं सब समझता हूं।"

"तुम्हें क्या प्रॉब्लम है यार मेरे स्टेटस से?"

"दिल्ली जाने को बोला तो उस पर ही कहानी बना दी।"

"नहीं उसके लिए नहीं है।"

"पागल हूं मैं!"

"क्या है?"

"दिख नहीं रहा! जो समझा होगा वही होगा मुझे क्या पता क्या है, मेरा दिमाग ख़राब कर देती हो जब देखो तब। हर बात को कहानी बना देती हो। क्या समझती हो तुम अपने आप को?"

"अरे यार वो रील है, अच्छी लगी, लगा ली"

"सब पागल हैं तुम्हारे आगे कोई कुछ नहीं जानता।

बाय द वे तुम्हारा प्रॉब्लम क्या है? बताओगे अब।

(दूसरी स्टोरी देख के बोला मुझे ये वीडियो चाहिए।)

"सेंड कर तो दिया।"

"व्हाट्सएप पर।"

"कहीं से भी मिले मिल तो गया ना!"

"दिमाग़ ख़राब नहीं ठीक है ना। व्हाट्सएप पर क्या दिक्कत है?"

"क्या है ये दिमाग़ ख़राब, दिमाग़ ख़राब जब देखो तब यही।

नहीं करना मुझे व्हाट्सएप पर अनब्लॉक।"

"ठीक है गुड नाइट।"

"सो जाओ चुपचाप साइड में रख के फोन को।"

"क्यों मेरी मर्जी, तुम अपना काम करो ठीक है ना।"

"हां तो बात कर लेना लाडो से।"

"बताने की कोई ज़रूरत नहीं है अपने काम पर ध्यान दो।"

"पता है। कोशिश कर रही हूं, लोगों पर ध्यान देने से सिर्फ़ मज़ाक का पात्र बनते हैं और कुछ नहीं, गुड बाय।"

"क्या है फालतू बोली तो बता रहा हूं आंटी को कॉल कर दूंगा। लड़ना लड़ना बस और कुछ नहीं। यही है तुम्हारे पास मुझे सोने दो अब।"

"फेशियल करने आ रही हूं।"

"मना किया था ना। मैं यूज नहीं करता ये सब।"

"मगर मुझे करना है तुम्हारा।"

"मुझे नहीं करवाना कुछ।"

"मुझसे नहीं करवाना, कोई बात नहीं सैलून में करवा लेना पैक ले आई हूं मैं। गौरे तो भी दिखोगे थोड़े बहुत, कलुए लग रहे हो।"

"भाभी भी बोल रही थी फेशियल फेशियल कुछ। आ जाओ फिर।"

दूसरे दिन कॉल करके बोलता है – "एक और ले आना। भाई भी बोल रहा था उसके भी कर देना।"

मुझे सुन के बुरा लगा। (मैं क्या नौकर हूं किसी की जो सबके करूं। उसके करने का मेरा मन था इसलिए।) ख़्याल आया था। मगर मैंने लिया और किया भी उसके भाई के।

उसकी शादी को लेकर सवाल करते हैं लोग मुझसे तो अच्छा नहीं लगता मुझे' "उसकी शादी में जाओगी तुम? पहले भी उसकी सगाई की मिठाई खाई थी हमने, तुझे ना दिया, तू उससे शादी के बाद भी बात करेगी! रोहित कार लेके जाएगा उसकी शादी में।"

मैं क्या बताऊं कैसे बताऊं की मुझे कितनी तकलीफ होती है। राधा पूछ रही थी "तुझसे शादी क्यों नहीं कर रहा वो?" "मेरे घर वाले नहीं मानेंगे लव मैरिज के लिए", बताया मैंने उसको।

(कैसे बताती कि उसने मुझसे पूछा ही नहीं और वो किसी और से करना चाह रहा है। तो मैं कैसे जबरदस्ती कर सकती हूं, वैसे भी मुझे भीख नहीं माँगनी। मगर अपने प्यार और वफ़ा को ठुकराते देख तकलीफ़ बहुत हो रही थी, और मैं सिर्फ खुदको तड़पते देख पा रही थी।)

रात के दो बजे उसकी वीडियो कॉल आती है। मैं एक दम से हड़बड़ा के उठी फोन देखा उसकी कॉल है। इतनी रात को!

"क्या हुआ सोए नहीं अभी तक?"

(उसकी आंखों में आंसू थे) "कुछ नहीं नींद नहीं आ रही।"

"तबियत तो ठीक है ना!"

"हां मम्मी नहीं मान रहीं हैं यार।" फिर तुरंत ही बोला "कोई नहीं तुम सो जाओ।"

"हुआ क्या है? किस बात को नहीं मान रहीं?"

"कुछ नहीं। सो रही थी ना!"

"हम्मम।"

"सो जाओ।"

"बात क्या थी?"

"सो जाओ" (कॉल कट)

"बताया था उसने शादी कैंसिल करने को बोला है तब से मम्मी ने बात नहीं की है। एक महीना हो गया।"

मैं कुछ सोचती उसके बारे में जब तक, मैं जान चुकी थी कि उसने मुझसे पहले कविता को बताया था शादी कैंसिल करने का।

एक शर्ट थी उसकी जिसका कलर फेड हो गया था बहुत बार मना कर चुकी थी। इसे मत पहना करो अब। बार बार उसे ही पहन लेता था। मैंने उसकी बाजू फाड़ दी एक दिन।

"अब नहीं पहन पाओगे।"

"और कपड़े नहीं हैं मेरे पास।"

"मैं दिलवाऊंगी चलना मार्केट। रूम तक ऐसे फटा पहन के जाऊं?"

"फोल्ड कर लो स्लीव।"

बहुत मुश्किल से मना के ले गई थी उसे दो शर्ट दिलाकर लाई थी। उसने तब ही जाते में बताया लड़की मेरे जैसी नहीं है मैच नहीं कर रही, मैंने शादी कैंसिल कर दी है।

क्यों? जबकि कविता मुझे पहले ही बता चुकी थी। लेकिन उसके मूंह से सुन के अच्छा सा फील हुआ था। उसने मुझे बताया ये सोच के तसल्ली सी भी हुई थी। रोज रोज होने वाली चुभन थोड़ी कम हुई थी।

दीवाली आने में चार दिन थे मैंने पहले ही सोच लिया था जॉब छोडूंगी यहां से। तो इस बार घर रिजाइन के बाद ही जाने का प्लान था। फिर उसने भी बोला अब तो मंथ के लास्ट में ही जाऊंगा 15 दिन की छुट्टी ले कर शादी के लिए।

"तो दिवाली यहीं मनाओगे?"

"हां।"

"मैं भी नहीं जा रही हूं घर।"

एक दिन पहले मैं उसके साथ दिवाली का सारा सामान खरीद के लाई। शिवानी की भी शादी थी उसकी शादी के दस दिन बाद। उसके लिए मैं विंड चार्म ख़रीद के लाई थी एक अपनी बहन के लिए भी लाई।

"घर मत जाना, ये दिवाली मेरे साथ मनाना" मैं बार बार बोल रही थी उसको। अपने रूम में झालर वालर लगा ली, "सुबह को क्या बनाओगी? छोले भिगो दूं? सुबह जल्दी आ जाना देख लेना क्या क्या बनाओगी।"

पूरी तैयारी कर ली मुझे रूम पर छोड़ कर दोस्तों के साथ चला गया फिर मुझे मिठाई देके गया। रात 11 बजे कॉल पर बात की, बोला–

"घर आने को बोल रही हैं मम्मी।"

"नहीं इस बार मत जाओ प्लीज, मेरे लिए रुक जाओ इस बार।"

"देखूंगा।"

मैंने बहुत मनाया बार बार। उसने सुबह के चार बजे कॉल की –

"घर जा रहा हूं मैं।"

"कल तक तो तुम मना कर रहे थे"

"मम्मी ने बोला आने का तो, मां ने बुलाया है तो जाना है, जाना है तो जाना है"

मैं क्या बोलती मैं उसके साथ बिताने को जो प्लान बनाती थी ना, जब वो उन्हें कैंसिल करता था मैं कैसे बताऊं कि कैसे बर्दाश्त कर पाती थी मैं। जितना मरे हुए इंसान को जिंदा करना मुश्किल होता है ना! इतना ही मेरे लिए उसके साथ वाले प्लान के कैंसिलेशन को एक्सेप्ट करना मुश्किल होता था। मुझे बहुत रोना आ रह था, मैं अकेली रह गई। जबकि नेहा और शिवानी भी अपने अपने घर नहीं गईं थीं।

मैंने उसके पास कॉल की। गुस्से में बोलते बोलते मुझे रोना आ गया।

"यार तुम रो रही हो मुझे नहीं पता था तुम्हें इतना बुरा लगेगा।"

"घर से बाहर मैंने आज तक दिवाली नहीं मनाई कभी।

अब आ जाओ मैं लेने आ जाऊंगा बस स्टैंड से।"

"बच्चों की तरह रोना आ रहा था मुझे सच में, और एक सच ये भी है, अपनी मम्मी के सामने बचपन में भी नहीं रोई थी। एक वो ही था जिसके सामने मैंने अपना दर्द बयां किया, जिसके सामने खुल के रोई मगर अफसोस......"।

नेहा बोली "व्याख्या तुम घर जाओ दिवाली तो शाम को ही मनाई जाती है ना। तब तक पहुंच जाओगी। जाओ, ऐसे उदास मत रहो। तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है यहां।"

उधर से हम साथ में आए थे। एक घंटे वेट किया था बस स्टैंड पर उसने मेरा।

बाद में उसके फोन में फोटो देखे, वो अपनी मंगेतर से मिल के आया था। मां का तो उसने बहाना बनाया था।

घर से आने के बाद मैं बस सैलरी आने का वेट कर रही थी 10 को आती थी सैलरी। 9 से ही मेरे आंसू आना शुरू हो गए। पूरे दिन पता नहीं क्या क्या सोच के आंसू बहे जा रहे थे। मैं उसको देख रही थी वो एकदम मस्त दिख रहा था। उसे देख के और भी रोना आ रहा था कि इसे कोई ग़म नहीं है मेरे जाने का।

शाम को बस में, मैं खाली सीट देख के बैठी, वो आया और मेरे आगे वाली सीट पर बैठ गया। मुझे फिर हर्ट हुआ। वो दीपक के पास बैठा था। दीपक पलट के मुझे देख रहा था। "अरे व्याख्या जी तुम रो रही हो?" फिर भी विशाल ने पलट के नहीं देखा। उस से आगे वाली सीट पर जा के फोन पे बातें करने लगा।

शाम को मिला तो बोल रहा था। "बोली भी नहीं थी आज ऑफिस में।"

"क्या बोलती आते में सीट छोड़ के बैठी थी देख के भी आगे वाली पर बैठ गए थे। बात जो करनी थी तुम्हें किसी से।"

"कविता का फोन था। काट दिया था मैं, 'बाद में बात करूंगा बोल के।' रोना आ रहा था। इसलिए।"

दो दिन पहले उसने सीनियर से मेरी शिकायत भी की थी बेवज़ह, अगर सीनियर कुछ बोल देता तो मेरा मन था आज ही रिजाइन लिख के इसके मुंह पे मारूं। उसको बता रखा है मैं जॉब छोड़ रही हूँ फिर भी एक दो दिन के लिए भी अपनी वो दिखा रहा है। मेरे आंसू चलते रहे शाम तक। वो एक बार भी पास नहीं आया था। शाम को बोल रहा है "तबियत ख़राब थी तो मैं पूछ रहा था बोली नहीं थी कुछ, इसलिए सीनियर को बोला था मैं। काम नहीं होता तो वो मुझे सुनाते हैं इसलिए।"

मैं रिजाइन देके आई। वो एंट्री करने गया मैं बाकी फॉर्मेलिटी पूरी करके उतर के जाने लगी। देखा वो अंदर से तेज चलके आ रहा था। मैंने उसे थोड़ी देर रुक के देखा फ़िर चली आई। कॉल करके बोला कितनी जल्दी थी ना जाने की दिख रहा था मैं खड़ा हूँ फिर भी चली गई। आज मत जाना मैं चलूंगा छोड़ने कल।

(आज पहली बार मुझे उसमें एक तड़प देखने मिली थी)।

"उसकी दुल्हन के लिए एक लाल चुनर लेके आई थी। उसके लिए एक लाल टाई।" उसको दी उसी जूस वाली दुकान पर बुला के, बोला ये चुनर डिब्बे में नहीं थी क्या?

डिब्बा था रूम पर ही रह गया फिर मैंने पैक करा के दिए। पैकिंग देख के बोला, कैसी कराई हो फिनिशिंग नहीं है।

मैं रूम पर ही थी अब। अकेले में और भी ज्यादा याद आ रहीं थीं उसकी बातें, अच्छी बुरी दोनों ही मुझे रुला रहीं थीं।

"तू ही हमारा होना नहीं चाहता, ये जान कर तुझे हम मजबूर नहीं किए।
अच्छी बुरी तेरी यादों की पोटली सीने में रख, शहर से तेरे विदा हो लिए।।"

चार दिन से रोज़ कल कल कर रहा था मैं ने गुस्से में कहा, "कल जाना है या नहीं? नहीं जाना तो साफ़ बता दो मैं चली जाऊंगी।"

"मैं चलूंगा तो क्या प्रॉब्लम है?"

"तुम तो चार दिन से पागल बना रहे हो मुझे, मैं अकेली नहीं जा सकती जैसे।"

"मुझे पता है तुम जा सकती हो अकेली। परसों चलेंगे।"

"कल चलना है तो चलना वरना मैं चली जाऊंगी।"

"ठीक है चलूंगा।"

दोपहर में मैसेज किया उसे–

"जल्दी आ जाना आज। पांच बजे।"

उसने पांच बजे से पहले ही पहुंच कर कॉल की।

"हां बोलो क्या काम है?"

"काम तो नहीं है कुछ।"

"जल्दी क्यों बुलाई थी फिर?"

"आज तुम्हारे साथ वक्त बिताना चाहती हूं। कल चली जाऊंगी ना। और फिर हम कभी नहीं मिलेंगे।"

"ऐसे मत बोलो।"

"चलो थोड़ी शॉपिंग करनी है।"

"पहले क्यों नहीं बताई थी, मैं आज जाता ही नहीं।"

फिर वो पिज्जा खिलाने ले गया। उसके भाई की कॉल आई

व्याख्या के साथ हूं, कल जा रही है वो। खाना बना लेना।

रेस्टोरेंट से निकल कर बोला। भाई ने खाना बना रखा है चलो।

उसका भाई खाना परोस के बाहर चला गया। विशाल की कॉल आई। मम्मी थी। मम्मी से बोल रहा था "मैं कल आ के देख लूंगा दरवाजा कैसा लगा है।"

"कल क्यों आ रहा है?"

"कल तुलसी के कॉलेज जाना है उसकी फ़ीस जमा होगी। मेरा भी काम है तो आ रहा हूं कल।"

मुझे सुनते ही बुरा लगा कि मुझे इतने दिन से रोक रखा है अपने काम से ही घर जाना है तो मुझे छोड़ने का एहसान क्यों? मैं अकेली भी चली जाऊंगी। जब बंदे ने आज तक मेरे लिए कभी छुट्टी नहीं ली तो अब भी कैसे ले लेगा।

मैंने पूछ ही लिया।

"वैसे शनिवार को क्या काम है जो जा रहे हो?"

"कोई काम नहीं है, तुम्हें छोड़ने।"

"और कोई काम नहीं है ना!"

"नहीं।"

"सच में नहीं है ना?"

"नहीं है यार।"

"गर कोई काम से जा रह हो तो मुझे क्यों रोका, मैं तो अकेली भी जा सकती हूं।"

"पता है तुम जा सकती हो।"

"मैं चलूंगा तो कोई प्रॉब्लम है क्या?"

"नहीं है।"

मैं भाभी से बात करने लगी बाहर। अंदर आई, देखा तो वो दीवार से सिर लगाए पैर फैलाए शांत बैठा था, गालों पर आंसू बह रहे थे। मैं पास जाके उसके कंधे पर सिर रख के बैठ गई। कुछ बोलना चाह रही थी, समझ ही नहीं आ रहा था क्या बोलूं! थोड़ा सा और सट के बैठ गई। वो भी चुप था।

थोड़ी देर चुप रहा फ़िर बोला "जाना ज़रूरी था क्या"? "हम्मम।"

मुझसे खाना नहीं खाया जा रहा है। रोज सुबह उठ के पेट दर्द होता है। दर्द है तो कहां है सीने से पेट तक दबा दबा के देख तू कहां है दर्द। महसूस ही नहीं होता कहां है। एक अजीब सा दर्द होता है जो बर्दाश्त नहीं होता जो ये भी नहीं लगता है कि ये दर्द है। और प्रॉब्लम दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही है। ऑफ़िस में मेरे दिमाग़ में कुछ नहीं आता बस तुम्हारे ही ख़्याल घूमते रहते हैं हर वक्त। मुझे डर लग रहा है मैं पागल ना हो जाऊं। दिल ओ दिमाग दोनों आउट ऑफ कंट्रोल हो चुके हैं। यहां रहके खुद को तड़पता नहीं देख सकती मैं। अब जाना ही होगा। दिवाली के बाद ही सोच ली थी मैं। और यहां अब किस को मेरी ज़रूरत है।

उठकर बर्तन धोने लगा।

"चलो तुम्हें छोड़ के आऊं।"

आया रूम तक वापस होते मैं गेट पर खड़ा हो गया। मैं भी खड़ी हो गई। "चली जाओगी। मैं कैसे रहूंगा? मैं तुम्हें कभी भूल नहीं सकता। बेशक़ तुम भूल जाओगी मैं नहीं भूल पाऊंगा। मैने तुम्हारे लिए कभी कुछ नहीं किया। कभी कुछ मांगा भी नहीं तुमने। कभी ज़रूरत पड़े तो ज़रूर याद करना।"

दोस्त के पास से लौट के आते में कॉल करके बुलाया मुझे। बंद दुकान के आगे वहां पहली बार बैठा,चला नहीं जा रहा था उससे। पहले ही मना करके भेजी थी पीना मत। कॉल की "मैं तुम्हारी गली के सामने हूं आ जाओ।"

मैं पैकिंग कर रही थी कई कॉल कर दी। मैं गई लड़खड़ा के चल रहा था। "पी कर आए हो ना!"

"नहीं पिया मैं मना की थी ना तुम, नहीं पिया मैं।"

"फिर चल क्यों नहीं पा रहे हो?"

"मैं उसे पकड़ने लगी तो साइड में बैठ गया।"

तुम मुझे सम्भाल रही हो सब लोग देखेंगे तो समझेंगे मैंने पी है। तुमने आज तक मुझसे कुछ नहीं मांगा व्याख्या, मैंने दिया भी नहीं। ज़िंदगी में कभी किसी भी चीज़ की ज़रूरत पड़े तो याद ज़रूर करना। कविता ने भी नहीं मांगा था कभी कुछ। उसको भी यही बोला था मैं जाते टाइम।"

मैं चुप थी जैसे मेरे पास बोलने को कुछ है ही नहीं।

'तुम मुझे गलत समझती हो विशी। नंबर ब्लॉक करने को बोलती हो ना! मैं किसी को ब्लॉक नहीं रखता। कब किसको क्या काम पड़ जाए (उसके आंसू निकले जा रहे थे, मैं एक दम ठीक थी जैसे मुझे कोई ग़म ना हो अब दूर होने का, उसे शायद यही फील हो रहा था मेरे आंसू जो नहीं निकल रहे थे।) अकेले में, रिजाइन दे के आई हूं तब से ही आ रहे थे। खाना बनाते में, खाते में, गेट पर बैठ के, पैकिंग करते में। पर अकेले में ही आते हैं।"

"एक दिन आए थे सबके सामने जब मुझे पता चला वो मेरे बाद भी किसी से बात करता है बहुत बुरी तरह से रोई थी मैं। पूरे दिन रह रह के आंसू आते रहे थे ऑफिस में सबके सामने। चलते फिरते आते रहे पूरे दिन। मैं जा रही थी सामने से एक मैम ने आते में मुझे गले से लगा लिया। मैं भी जोर से गले लग गई थी। वो बोल रही थी

"मम्मी की याद आ रही है बेटा, यहां समझते नहीं हैं लोग घर से बाहर रहते हैं बच्चे किसी को कुछ बता भी नहीं सकते।" मुझे सीने से लगा के रखा जब तक पायल आ गई। तो वो आंटी चली गई मैं उनका चेहरा नहीं देख पाई बाद में मैं उन्हें ढूंढती रही उनका चेहरा देखा ही नहीं था मैंने। पायल विशाल को बता के आई।

"सर व्याख्या रो रही है बहुत ज्यादा।"

"उसको बोलो विशाल सर बुला रहे हैं।"

उसने आ के मुझ से बोला। मैं नहीं गई। वो आया भी नहीं। मेरे आंसू आए जा रहे थे। (आदेश नाम का एक लड़का था लॉयल था अपनी बंदी के लिए। बाकी सबके लिए बहुत अच्छा था) मेरी आंखों में आंसू देख के पूछने लगा "क्या हुआ व्याख्या।"

"कुछ नहीं। मेरी गलतियां ही हैं, मेरे रोने की वजह।"

"गलत लोगों से दूर रहो तुम पहले भी समझाया मैंने तुम्हें। कोई बात नहीं अब जो भी हुआ जाने दो। बुरे लोगों से दूर रहो बस।"

"हम्मम। कोशिश करूंगी"

पूरी ऑफिस ने देखा था उस दिन रोते हुए मुझे। मगर उसने नहीं। बहुत टूट कर रोई थी।"

सोच रही थी मैं भी इसे दिखा सकूं मुझे कितना गम है दूर होने का मगर बस उसके कँधे पर सिर रख के सब सुने जा रही थी।

'मैं तुम्हें कभी भूल नहीं सकता विशी। मना किया हूं मत जाओ नहीं मान रही हो। मुझे रोकना नहीं आता।"

"मुझसे नहीं सहा जा रहा है अब तुम्हें नहीं पता ना मुझे कितनी तकलीफ़ होती है। रोज सुबह एक अजीब दर्द होता है, नहीं समझ आता रोयूं या हँसूं।"

"तुम मुझे ग़लत समझती हो ना व्याख्या?"

"नहीं।"

"मैं जानता हूँ मैंने तुम्हारे साथ गलत किया है। मैं तुम्हें कभी भूल नहीं सकता।"

वो उठा मैं पकड़ने लगी "नहीं अब मैं ठीक हूं मैं चला जाऊंगी। अब एक दम सही से गया सुबह तैयार हो जाना 5 बजे तक कॉल कर लूंगा मैं।"

नेहा बहुत सेड थी दो दिन से। "डार्लिंग चली जाओगी तो हमारा मन भी नहीं लगेगा। मगर तुम जाओ तुम्हारा जाना ही ठीक है।"

मैं तो एक अजीब हालात से गुजर ही रही थी। मेरे मन में कितने ख्याल आ जा रहे थे, इससे अब कभी भी नहीं मिलुंगी। ज़िंदगी में मैं इसे अब कभी देखने ना मिलूं कभी भी नहीं, कहीं भी नहीं। कभी माफ़ नहीं करूंगी इसे।

मुलाकातें तो अब होंगी ही नहीं।
इत्तेफाकन भी अब हम मिलेंगे ना कहीं।।

सुबह 5 बजे ही कॉल की उसने। शिवानी ने रात को ही बोल दिया था मुझे बता के मत जाना। रोना आ जाएगा मुझे। फिर मैंने नेहा को भी नहीं बताया। बैग उठा के चुपचाप निकल गई।

मेरे से दोनों बैग संभाले नहीं जा रहे थे वो कॉल कर रहा था "बैग लेके जल्दी नहीं चल पा रही हूं।"

'रूको मैं आ रहा हूं।"

अध्याय 5

बस में बोल रहा था "ऐसा नहीं लग रहा तुम्हें मुझसे दूर जाने का जरा भी दुख है।"

"क्यों होगा मुझे? ना तुम मेरे हो और ना थे।"

"और किसी का भी नहीं था। किसी लड़की के बारे में सोचना भी छोड़ दिया था।"

मैं उसके कंधे पर सिर रख कर ही गई।

"तुम मुझसे ज्यादा औरों की कद्र करते थे।

दूसरों के सामने हमेशा मेरी इंसल्ट करते थे।

मेरी बात का दूसरों की बात पर यकीं करते थे।

किसी भी लड़की की रील अपनी स्टोरी पर लगा लेते हो मेरी पोस्ट कभी लाइक भी नहीं की।

मेरी बात को हमेशा अनसुना करते थे।

मैंने किया था तुम्हें कभी इग्नोर? इंसल्ट की कभी? तुम्हारी होने भी नहीं देती थी मैं। हमेशा खुद से ज्यादा तुम्हें इंपोटेंस दी लेकिन तुम्हें तो औरों की पड़ी रहती थी। कभी सोचा मुझे कितना हर्ट होता था। बार बार रोती थी लेकिन फिर भी तुमसे दूर नहीं हो सकी। मेरे सामने दूसरी लड़कियों की तारीफ़ करते थे। मैं हमेशा सिर्फ तुम्हें सोचती थी बस आगे ऐसा कर पाने में असमर्थ रही सो सॉरी।"

याद है जब तुमने मुझसे पूछा था। तुमने देखा है मुझे पहले? जान कर मना किया था, मेरा नंबर भी नहीं देना चाहती थी तुम्हें वो तो राशि रिचार्ज कराके नहीं रखती। मेरे फोन से करती रही थी अपने घर कॉल, फिर एक तुम्हारे पास भी कर दी, तुम फिर, मेरे ही नंबर पर कॉल करते थे गर उस से बात करनी होती थी। (बस में उसने मुझे 280 रुपए दिए।) "नहीं मुझे नहीं चाहिए। किस के हैं?"

"रख लो।"

"किस लिए? क्यों दिए हैं।"

"रख लो।"

विदा कोई ऐसे थोड़ी देता है, सौ, दो सौ, होती है पांच सौ हो सकती है। ये 80 वाला वो समझ नहीं आया। उसने वापस लिए नहीं। मुझे बहुत दिन बाद समझ आया था, उसने वो पैसे विंड चार्म के दिए थे, जो 350 का था।

मैं घर पहुंच गई तो वो ही कॉल मैसेज करता था और बोलता तुम तो भूल गई कॉल भी नहीं कर सकती। मन नहीं लग रहा था उसी जूस वाली दुकान पर बैठा हूं।

अगर लाइफ में मेरे लिए टाइम मिले तो प्लीज़ दिल से एक बार मुझे माफ ज़रूर कर देना प्लीज़, 'आई लव यू लव'।

"ये लफ्ज़ उसकी तरफ़ से पहली बार बोले गए थे मेरे लिए। मैं कब से सुनना चाहती थी उससे ये शब्द।

"जिनकी चाहते अधूरी रह जाती हैं वो ना किसी को माफ़ कर पाते हैं ना किसी से रूठते हैं बस टूट जाते हैं विशु, तुम मेरे क्यों नहीं रह सकते, क्यों नहीं रह सकते विशु?"

"वो कैसे?"

"ऐसे ही, सिर्फ़ मेरे।"

"शाम को बात करुंगा, अभी मैसेज मत करो।"

लूट के मेरी खुशियों का जहां, माफ़ी चाहता है वो।
माफ़ी खताओं की होती है साजिशों की नहीं कोई बताओ उसको।।

"ये तुम्हारा बीएफ है ना?"

"हां मेरे तो चार बीएफ हैं।"

"थैंक्स बताने के लिए।"

"अभी तक कहां थी पहले क्यों नहीं बताया कभी।"

"पता नहीं।"

"सब बात करने के बाद याद आ रहा है क्या बोलना है।"

"तुमने कैसे बोला ये मेरा बीएफ है, तुम्हारे बाद अब किसी के करीब नहीं जाऊंगी ना आने दूंगी।"

"मुझे बता क्यों रही हो मैंने पूछा कहां, प्यार क्या है?"

"प्यार दुनिया का सबसे बड़ा दर्द।"

"पहले क्यों नहीं बताई, अभी तक कहां थी?"

"बेहोशी में।"

"मैं कुछ नहीं समझता, कुछ काम नहीं है क्या?"

आठ दिन बाद घर आया, बताया नहीं, मुझे स्टेटस से पता चला"।

"घर आ गए हो?"

"हां।"

"बताया भी नहीं।"

"बताया तो था 26 को आऊंगा, आज ही टाइम निकाल लेना।"

"किसका टाइम?"

"मिलना नहीं है।"

सोच तो रही थी अभी तो किसी और का नहीं हुआ मिल लूं एक बार अपना समझ के मगर पड़ोस में डेथ हुई थी। इसलिए जा ना सकी।

"नहीं आ सकती।"

"क्यों?"

"एक डेथ हो गई है मोहल्ले में कल।"

"कल हुई थी आज तो आ सकती हो।"

"नहीं आ सकती। मम्मी डांटेंगी।"

"जानता हूं, तुम मिलना नहीं चाह रही हो। बात भी नहीं करती हो।"

"आऊंगी फेशियल करने।"

"अरे यार तुम आओगी तो सब लोग बोलने लगेंगे मेरा कर दो, मेरा कर दो।"

"कर दूंगी ना।"

"वो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

"लेकिन मुझे तुम्हारा फेशियल करना है।"

"भाभी आ गई हैं वो कर देंगी बोल रही थी।"

"मैं करूंगी किसी और पर मत करवाना।"

"ठीक है, आ जाना तो कल।"

मैं गई अपनी फ्रेंड को लेकर, पहले मार्किट लेके गया अपनी बहन को ड्रेस दिलवाने। (मेरे से एक बार भी नहीं पूछा तुम भी लोगी? मैं सोची थी बोलेगा तो बोल दूंगी। "नई ड्रेस पहन कर मैं क्या करूंगी। नहीं चाहिए)

मैं उसकी बहन का फेशियल कर रही थी वो पास कुर्सी पर बैठा खाना खा रहा था। मुझे अपने हाथ से खिलाता जा रहा था। उसकी बहन आंख खोल के देखती जब वो बोलता खाओ ना!

उसकी दोनों बहनों का फेशियल किया। उसके करने को बोला तो बताया उसने कि "रात भाभी से करवा लिया।" फोटो दिखाए। मुझे देख कर गुस्सा आ चुका था, उसका ब्लीच किया। वो छोड़ने आया बाइक पर। पूछने लगा "कितने पैसे हो गए तुम्हारे?"

"पैसे! जाने दो।" (मतलब अब ये अपनेपन को पैसे से देखेगा।)

"अरे तुम जो पैक वगैरह लाई थी।"

"तुम्हारे लिए लाई थी मैं ठीक है, एक तो झूठ बोला। आते आते भी पूछ रही थी करवाओ तो आऊं। झूठ बोल कर बुला लिया।"

"बता देता तो तुम आती नहीं। तुमने बोला था, मेरे घर आना चाहती हो। इसलिए बुला लिया, तुम फेशियल करने का भी बोल रही थी बार बार।"

"तो करवाया क्यों नहीं फिर।"

"मेरा करना अच्छा नहीं लगा होगा ना!"

"ऐसा नहीं है यार, भाभी दीदी सब बोल रहे थे करवा ले, तो करवाना पड़ गया था।"

"मेरी बातों को बुरा मत मानना, आज कल मेरी तबीयत ठीक नहीं, मूड भी थोड़ा ऐसा ही चल रहा है। इसलिए ज्यादा बात नहीं कर रही हूं तुमसे कि कुछ गलत ना बोल दूं। गर निकल भी जाए तो बुरा मत मानना। मेरे बारे में मत सोचना खुश रहना।"

रोज सुबह को कॉल करता मैं इग्नोर नहीं कर पाती कभी उसकी कॉल। एक दिन मैंने मैसेज कर दिए –

"बहुत याद आ रही है तुम्हारी। पता है कई बार मन किया कि तुम्हारे सीने से लग के कहूं कि मुझे तुम्हारा साथ चाहिए लाइफटाइम के लिए, तुम्हारी केयर चाहिए। तुम आओगे तो सीने से लग कर रोऊं कि तुम मेरे क्यों नहीं हो, क्यों नहीं हो तुम मेरे? मैं तुम्हारे सामने कई बार गिड़गिड़ाई भी हूं। ये जानते हुए भी कि इज्जत या मोहब्बत भीख में मांगे और दौलत से खरीदे नहीं जाते। ना तुम मेरे कभी रहे और ना रह पाओगे जानते हुए भी दिल क्यों चाहता है। मुझे और तकलीफ़ देता है, फालतू की ख्वाहिशें जगा जगा कर। जो तुम्हारा है वो तुम्हारा रहेगा जो नहीं वह होगा भी नहीं जानती हूं फिर भी।"

"तुम्हें क्या लगता है याद सिर्फ तुमको ही आती है। याद आ रही है कितने दिन साथ थी? अब अलग हो गए भूल जाओ वो सब आगे बढ़ो।"

एक लड़का कितनी जल्दी आगे बढ़ जाता है ना!

मुझे बहुत बुरा लगा, मैंने उसे हर जगह से ब्लॉक कर दिया की वो आगे बढ़ चुका है उसे जाने दो।

सुबह को ही दूसरे नंबर से कॉल करके शादी में आने को बोलने लगा।

"आओगी ना?"

"नहीं।"

"मैं बहुत खुश था मेरी विशी आएगी मेरी शादी में।"

"किसने बोल दिया मैं आ रही हूं।"

"राधा बोल रही थी वो सब आ रहे हैं। तुम भी आ जाना प्लीज़।"

"नहीं आऊंगी। दूल्हा बनके तैयार हो जाओ तो मेरे पास वीडियो कॉल कर लेना।"

"क्यों?"

"देखूंगी तुम्हें।"

"मैं नहीं करूंगा।"

"कोई नहीं।"

राधा रितेश प्रीति आदेश आए तो मेरे पास कॉल करने लगे। "तू नहीं आ रही?"

"नहीं।"

फिर विशाल कॉल करके बोलने लगा, "आ जाओ प्लीज़"

"सॉरी विशु, रियली सॉरी।

शाम को तैयार होते मैं कॉल करके किसी को पकड़ा दिया था फोन। उसने दुल्हे को दिखाते ही कॉल काट दी। फिर उसने फोटो सेंड किए दुल्हे वाले। चलो उसने आख़िरी बात तो मानी मेरी।

रात में मम्मी के पास सो रही थी और इस तरह रो रही थी, बिस्तर ना हिल जाए, मम्मी को पता ना चल जाए। रोना भी घुट घुट के पड़ रहा था।

मैं उसके स्टेट्स देख रही थी बस। उसके हैप्पी हैप्पी स्टेट्स देख के तकलीफ़ हो रही थी। (कितना खुश है मेरे बिना।)

आग लगा के मेरे ख्वाबों के आशियाने में।
ज़रा भी मलाल नहीं है हो रहा उसे, नया जहां बसाने में।।

हालांकि मैसेज कॉल करके हाल पूछता रहा था। मेरे दिल में उसके लिए नफ़रत नहीं आई ज़रा सी भी। मैसेज कॉल करने से खुद को रोक पा रही थी बस। उसके कॉल मैसेज को इग्नोर नहीं मार पा रही थी।

15 को भी उसने रील सेंड की 16को उसकी शादी थी। उसके बाद भी वो रील सेंड किए जा रहा था, 17 को उसने कोई रील सेंड की थी

"जिसे देख कर मैंने उसे मैसेज किए। सॉरी विशु, रियली सॉरी, तुम्हें प्यार करने के लिए, थैंक्स मुझे ज़लील करने के लिए, मेरी औकात दिखाने के लिए गर आपको मेरी वज़ह से कोई प्रॉब्लम हुई हो तो मुझे ज़िंदगी में कभी माफ मत करना, मुझसे बात मत करना कभी, दुश्मनों में याद रखना, सॉरी फॉर एवरीथिंग, गुड बाय।"

"ओके थैंक्स, क्यों मैसेज करके मेरा दिमाग़ और ज्यादा ख़राब कर रही हो।"

"सॉरी।"

उसका बर्थडे के लिए एक वीडियो एडिट की उसकी। 12 बजने से 5 मिनट पहले बाथरूम में जा के 12 बजते ही कॉल की, विश किया, थैंक यू बोलके कॉल काट दी उसने।

"तबीयत खराब है। तुम तो पूछोगे नहीं। सोचा मैं ही बता दूं।" 10 दिन बाद मैंने मैसेज किया।

"टाइम नहीं था। क्या हुआ है तबीयत को?"

"अब क्यों होगा तुम्हारे पास टाइम तो बिजी रहोगे हमेशा।"

"तुम जो समझो।"

"मैं हूं ही क्या तुम्हारे लिए!"

"घंटा।"

"मालूम है मुझे मेरे लिए तुम्हारे दिल में कुछ भी नहीं है। तुमने मुझे दर्द के सिवा दिया ही क्या है? रुला सकते हो तुम मुझे बस।"

"अब नहीं रुलाऊंगा।"

"अच्छा!"

"बाय"।

(कॉल काट के उसने ब्लॉक कर दिया। फिर मैंने भी हर जगह से)

फिर दस दिन बाद ही उसका मैसेज आया "पता है व्याख्या आज ऑफिस में एक व्याख्या नाम की लड़की आई है। बहुत याद आई तुम्हारी बात करने का मन था। कॉल की तुमने मुझे ब्लॉक कर रखा है। मुझे आज बहुत बुला लग रहा है प्लीज बात करो ना प्लीज। आई लव यू सो मच। कॉल करो, करो प्लीज़"।

मैंने फिर रिप्लाई कर दिया।

अध्याय 6

"पता है तुमसे बहुत प्यार हो गया है मुझे। और अति किसी भी चीज़ के लिए बुरी होती है। इसलिए बहुत कोशिश करती हूं दूर होने की।"

"जानता हूँ।"

"कल का पता नहीं क्या हो। लेकिन अभी तक मुझे तुमसे प्यार है।"

"मुझे भी प्यार है जैसे कुछ भी बोलता हूं तो मैं जानकर बोलता हूं, 'आम रियली सॉरी' क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ गलत किया है। लेकिन पता है! मैं दूर होना चाहता बहुत हूं। लेकिन क्या है कि मुझे किसी का दुख देखा नहीं जाता है। जब तुम रोती हो तो मुझे बहुत हर्ट होता है। लेकिन फिर भी मैं वही करता हूं।"

"मैं जानती हूं तुमने मुझे इग्नोर करने की कोशिश पूरी की है कई बार। लेकिन ये इंसान के बस में नहीं होता।

मैं बहुत मुश्किल में हूं। मैं समझ नहीं पा रही, तुमसे क्या बोलूं क्या नहीं। तुम कुछ दिन और प्यार से बात नहीं कर सकते?"

"मेरे पास टाइम नहीं है मेरे को कोई बात नहीं करनी तुमसे

प्लीज़।"

अभी अच्छे से बात की अभी खुद ही ब्लॉक कर सकता है। एक दो दिन ही अच्छे से बात कर पाता है। बस अगले दिन का देखो।

दूसरे दिन बात कर ली तीसरा दिन कश्मकश में निकाला चौथे दिन मैसेज किया मैंने।

"मुझे याद आ रही है तुम्हारी, बहुत आ रही है बार बार विशु और रोना भी आ रहा है इतना कि तुम्हारे पास दौड़ कर आऊं और गले लग कर रोऊं। मगर मैं कॉल भी नहीं कर सकती......।"

"मेरे पास टाइम नहीं है ये सब के लिए और मैं पहले ही टेंशन में हूं। याद आ रही है आती रहे। कितने टाइम साथ थी! अब अलग हो गई हो"।

"तुम मुझे ब्लॉक कर सकते हो अगर प्रॉब्लम है तो। तुम्हारी खुशी के लिए मुझे सब मंजूर है। तुम खुश रहो जैसे भी रहो"।

"ओके मैं ठीक हूं, तुमने क्या बोला था मैं नहीं भूल पाऊंगा, वो जो बोलती हो ना! एक गाली है मेरे लिए"।

"सॉरी विशु।"

"बस करो।"

"वो तो तुम्हें एहसास कराने के लिए बोला था।"

"कोई बात नहीं मैं गलत हूं।"

"ऐसा क्या बोला है मैंने?"

"तुम जो चाहते थे तुम्हारी वज़ह से ही मैं वही हूं। बहुत कुछ बोला है। मुझे तुमसे कोई बात नहीं करनी प्लीज़ अपना ख़्याल रखना।"

"तुम हर बात को उल्टा समझते हो। यार मेरे कहने का मतलब ऐसा नहीं था।"

"तुम किसी को खुश नहीं रख सकते, तुम्हारे जो पास आएगा वो खुश नहीं रहेगा। तुम किसी के नहीं रह सकते। ये सब नहीं बोला तुमने कभी? बस ये गाली है मेरे लिए। ये बोलने से किसी को कितना बुरा लगता है लगेगा तुमने सोचा कभी! कितनी बार बोल दिया तुमने मुझे बहुत बुरा लगा जब जब बोला। ग़लत बोली ठीक है जो तुम बोल रही हो क्या बोल रही हो ये भी तो सोचना चाहिए।"

"तुम बार बार बोलते हो मुझसे बात मत करना।"

"करनी ही नहीं है। मैं सबसे दूर रहना चाहता हूं सिर्फ़ मेरी वाइफ मेरे लिए है बस। और किसी से बात करना नहीं चाहता कुछ बताना नहीं चाहता मैं उसी को बताऊंगा उसी से बात करुंगा बस। 1 मिनिट भी टाइम है तो उसी के लिए है बस।"

"मैं तो कभी तुम्हारे और कविता के बीच तक नहीं बोली कुछ। पति-पत्नी के बीच में क्या बोलुंगी!"

"मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं है ना उससे है बस।"

"जानते हो मैंने जो भी कहा सीधा तुमसे कहा तुम्हारी जो गलती दिखी मैं ने तुम्हें बताई सिर्फ़।"

"बस करो रुलाकर छोड़ोगी क्या? मैं ये करता हूं। मैं वो करता हूं, मैंने ही बोला था रिकॉर्डिंग भी थी। तुमको कभी सुनाया नहीं। गुड बाय प्लीज मेरे घर से बहुत मैसेज आ रहे हैं। कॉल भी कट कर दिया कई बार। प्लीज कॉल मैसेज कुछ भी नहीं करना मेरे पास।"

"ब्लॉक कर दो तो।"

(ब्लॉक कर दिया व्हाट्सएप पे। मुझे गुस्सा आया अब जिंदगी में कभी कॉल नहीं करूंगी। हां वो अपनी वाइफ का हो गया है अच्छी बात है। अच्छे से रखे उन्हें मगर मुझसे तो इस तरह बात नहीं करनी चाहिए थी)

मैंने रोके तरस के तड़प के, अफसोस करके 15 दिन काटे, और फिर सब्र लौट गया। मैंने उसे कॉल कर दी, कॉल जाते ही काट दी थी मैंने, उसने वापस की,

"चेक कर रही होगी ब्लॉक हूँ कि नहीं।"

"नहीं।"

"बोलो क्या काम है।"

"काम तो कुछ नहीं था।"

"फिर?"

"आवाज़ सुनने को।"

"अच्छा अब सुन ली।"

"हां।"

"काट दूं फिर।"

"योर विश।"

दो तीन दिन अच्छे से बात की।

"फिर मेरी कॉल इग्नोर मारने लगा। मैंने मैसेज कर दिए गुस्से में।

उसने ब्लॉक कर दिया।

मैंने नॉर्मल मैसेज किए।

रिचार्ज खत्म हो गया है मेरा। मैंने तुम्हें बहुत कॉल की थी लेकिन वो तुम तक पहुंच ही नहीं रही थी। मैंने जो भी बोला उसके लिए सॉरी बस वो इसलिए बोला शायद तुम्हें भी मेरी और ज्यादा याद आए। मैं तुमसे लाखो कोशिश करने के बाद भी बस इसी वजह से दूर नहीं हो पाई क्योंकि लड़ने के और तुम्हारे रूठने के बाद मुझे तुम्हारी और भी ज्यादा, बहुत ज्यादा याद आती है। याद होगा तुम्हें, मैं तुमसे बिना बात किए एक दिन भी नहीं रह पाई कभी। कितना भी गुस्सा होने के बाद भी। लोग मुझे क्या कहते थे विशु लेकिन मुझे तुमसे प्यार है तो है। तुमसे कोई गिला नहीं विशु। मैंने जब भी तुम्हारे बारे में कुछ बुरा कहा तो अपनेपन का एहसास पाने के लिए या तुम्हें खोने के डर से। गर लाइफ में मुझे मेरा मुकाम मिला तो सबसे पहले तुम्हारा शुक्राना करूंगी। पागल हूं तुम्हारी मुस्कान की हमेशा रहूंगी। ब्लॉक करो इसलिए कि तुम बार बार बोलते हो कि बात मत करना। अब सब खत्म, मैं देखना चाहती हूं क्या तुम सच में भुला दोगे मुझे। वो भी इतनी आसानी से, कैसे करोगे?

लेकिन मुझे बहुत याद आ रही है विशु एक बार माफ कर दो विशु प्लीज़। मुझे गिल्टी फील हो रहा है बर्दाश्त नहीं हो रहा है। एक बार अपनी स्माइल दिखा के दूर करो ना मुझे स्माइल के साथ, गुस्से से नहीं। सॉरी यार, प्लीज माफ़ कर दो विशु, प्लीज़।"

(उसका कहीं से कोई रिप्लाई नहीं आया।)

कितना भी गुस्सा क्यों ना हूं उससे बात बिना किए कहां रह पाती थी मैं। दस दिन से ज्यादा गुस्सा कभी टिका ही नहीं कॉल या मैसेज कर ही देती थी।

"तुम्हें तो याद भी नहीं आती मेरी आएगी भी क्यों अब बहुत खुश हो ना हंसी आती है ना हर बात पर।"

"मेरा यकीन नहीं करोगी मुझे आज याद आ रही थी तुम्हारी सोचा था शाम को कॉल करूँगा। कहाँ हँस रहा हूं मैं। मैं बहुत दिक्कत में हूँ अभी तो।"

"ब्लॉक करके हँसते हो ना, कोई नहीं हँसो।"

"नहीं यार।"

"कॉल की तो बात करने का टाइम भी नहीं था!"

"चार बार हेलो हेलो बोला एक बार भी नहीं बोली।"

"तुमने व्हाट्सएप ब्लॉक कर रखा तो सोच रही थी अब कभी कॉल या मैसेज नहीं करूँगी।"

"मम्मी का वीडियो कॉल चल रहा था, बोल कर कॉल कट किया था। तुमने मुझे करके रखा है ब्लॉक। तुम्हें पता है मैं जल्दी बात नहीं करता हूँ फिर भी रिप्लाई नहीं दे रही थी।" "मुझे हर रोज लगता है कि मर जाऊं मगर मर भी नहीं पा रही हूँ। भूला भी नहीं पा रही हूँ तुम्हें।"

"तुम क्या बोलती हो मेरे से 'तुम यही चाहते थे सो कर लिया'।"

"तुम्हें कभी याद नहीं आती ना इसलिए।"

"तुम मेरा कभी यकीन नहीं करोगी ये मुझे पता है। आज बहुत मिस कर रहा था। रोना आ गया था दिन में। वीडियो कॉल करो।"

"तुम फिर से ब्लॉक कर सको इसलिए मैं अनब्लॉक कर दूँ और मुझे हर्ट होगा फिर।"

"गुस्सा दिलाने की बात हो तो मुझे गुस्सा आ जाता है। मैसेज कर के डिलीट करती हो। मम्मी भी गुस्सा कर रही थीं बदल गया अब तो। कोई समझ नहीं रहा मुझको, मेरी सिचुएशन को"

"मुझे आज बहुत याद आ रही थी रोना आ रहा था। रोकते रोकते भी कॉल कर दी।"

"मुझे भी आ रही थी यार सच बोल रहा हूँ दिन में मुझे भी रोना आ गया था। मैं कॉल करता तुमको ज़रूर। व्हाट्सएप मैसेज किया था तो ब्लॉक कर रखी है। वीडियो कॉल करो ना।"

दूसरे दिन मैसेज किए उसने,

"कॉल करने के बाद एक भी कॉल नहीं की हो। बहुत याद आ रही थी मैं जान कर कॉल नहीं किया हूँ। मेरे पास कॉल मत किया करो यार प्लीज। फिर मुझे याद आती है। बात करने का मन करता है। बात करता हूं तो फिर गुस्सा आता है।"

"तुम नहीं कर सकते कॉल। मैं वेट कर रही थी।"

"अब मत करना यार।"

"ओके।"

मेरी तबियत ख़राब थी ही और जैसे ही पता चला कि मेरा खून बनना ही बंद हो गया है। 5 प्वाइंट रह गया था, 7 महीने से लगातार अनार जूस पी रही थी बढ़ने की बजाय घटे जा रहा है। 4 महीने हो गए डॉक्टर भी परेशान हो गए। हॉस्पिटल, मेडिकल, क्लीनिक सब जगह दिखा लिया, ब्लड बढ़ ही नहीं रहा था। तब समझ आया दिल के जलने से सच में खून जलता है।

(मेरी मम्मी बोलती थी बचपन में जब हम भाई बहन बहुत परेशान कर लेते थे मम्मी को। वो बोलती थीं–"मेरे एक परी खून घटा दिया तुमने आज।" तब लगता था ये महज़ एक जुमला है।)

वजन भी घटे ही जा रहा था। खाना पीना, दवाएं कुछ भी असर ही नहीं कर रहा था।

मैं सदमे में चली गई, कैसे सही होगा, क्या होगा। मैंने उसे बताया। बोला

"खून चढ़ाने को बोले डॉक्टर तो बता देना मैं आ जाऊंगा पैसे की जरूरत हो तो भी। वैसे सिर्फ़ पांच सौ रुपए हैं मेरे पास।"

"पैसे की जरूरत नहीं है।"

(मैंने मन ही मन सोचा जहां दो दो हज़ार के टेस्ट हो रहे हैं वहां पांच सौ रुपए से क्या होगा!)

दो तीन दिन बाद आया घर, मैसेज किया।

"देखने का मन है आ सकती हो?"

"आ जाऊंगी।"

"कॉल मत करना मैं कर लूंगा।"

"मैं हॉस्पिटल से सीधे चली गई मार्केट। दो घंटे हॉस्पिटल में लगे फिर मार्केट में घूमी। फिर जो फ्रेंड साथ थी उसकी कोचिंग चली गई कि कॉल या मैसेज आएगा तो यहीं से चली जाऊंगी, या इधर ही बुला लूँगी। मई की दोपहरी में मैं सड़को पर घूमी उसके लिए। ना उसका कोई कॉल ना मैसेज आया। कोचिंग में भी दो घंटे वेट करने के बाद मैंने उसे मैसेज किया।

"टाइम है या नहीं?"

"कल मिलता हुआ जाऊंगा बहुत गर्मी है यार, क्या करूं।"

"कल कोई ज़रूरत नहीं है अब तुम कभी नहीं मिल पाओगे मुझसे। जानती हूं तुम्हें कोई ज़रूरत भी नहीं है। जिस इंसान को जितना टाइम दो ना वो उतना ही फालतू समझता है। और बोला किसने था मिलने को! जो भी हो तुम बहुत खुदगर्ज हो यार। बाय द वे मुझे कोई उम्मीद नहीं है अब तुमसे। हॉस्पिटल जाने के बहाने से निकली थी घर से तुमने फालतू समझा है ना मुझे। मम्मी को पता चल गया ना इस हालत में दोपहरी में सड़को पर घूमी हूँ कितना डांटेंगी मुझे।"

"मैं कहीं पे आया हुआ हूं थोड़ी दिक्कत हो गई थी। मैं आ जाता।"

"एक कॉल भी ना की गई ना तुमसे! नहीं आना था तो बता नहीं सकते थे। 11 बजे की निकली हूं, 4 बज गए।"

"मैसेज किया था ना।"

"वो मैंने पूछा तब कर दिया रिप्लाई।"

"सॉरी यार।"

"अपना काम छोड़ के आई, टाइम दिया, बीमार हूं फिर भी धूप में घूम रही हूं। मगर तुम इस सबके लाइक नहीं हो।"

"मैं भी अर्जेंट में आया हूं पापा मम्मी को लेके, मिलने का बहुत मन था सच में यार।"

"बकवास कम करो, आई अंडरस्टैंड योर कॉन्सपिरेसी।"

"ये नहीं है यार।"

"आई हेट यू।"

"नहीं यार ये मत बोलो।"

"अब कभी नहीं मिल पाओगे तुम मुझसे, सॉरी फॉर एवरीथिंग।"

जब वो दोबारा आया तो पहले ही बता के आया, 11 बजे हॉस्पिटल आ जाना, मैं नहा के आई देखा उसकी कॉल थी तीन चार, आधे घंटे से आ रही थी व्हाट्सएप मैसेज भी थे।

"रिप्लाई करो यार नहीं आना तो बता दो मैं यहाँ खड़ा हूँ कितनी देर से।"

"आ रही हूं।"

(आज मन कर रहा था इसे भी खड़ा रखूं तब पता चलेगा कैसा लगता है जाऊं ना तो)

कॉल पर कॉल करे जा रहा था, पहुंची दो मिनट में, पेड़ के नीचे बाइक पर बैठा था।

"एक घंटे से खड़ा हूं यहीं, दिखाना है डॉक्टर को?"

"आज नहीं।"

"चलो तो कहां चलें।"

मैंने उसे बताया निया का बर्थडे है आज, शायद पार्टी का अभी कंफर्म नहीं है।

"कौन निया?"

"जो तुम्हारे घर गई थी मेरे साथ।"

"मुझे नहीं बुलाओगी?"

"नहीं।"

"ठीक है तुम्हारी मर्ज़ी।"

"उसके भाई वगैरा भी आएंगे ना।"

मैं उसके लिए एक ब्रेसलेट और एक की-रिंग लेके गई। उसने ब्रेसलेट नहीं लिया बोला, "मैं नहीं पहनता।"

की-रिंग देके मैंने उसे बोला "इसे अपनी कार की चाबी में डालना, बहुत जल्द तुम्हारे पास कार भी होगी।"

"हां इसे दे दो जब तक संभाल के रखूँगा।"

ब्रेसलेट फिर से दे रही थी, "ले लो ना।"

"नहीं आएगा मेरे छोटा रहेगा किसी और को दे देना।"

वो मेरे हाथ से छूट के गिर गया बाइक तेज थी बहुत पीछे रह गया बोला, "मुझे पता है जान के फेंका है तुमने।"

"नहीं। हां जो भी समझो।"

(उसके क़रीब आ कर फिर लगने लगा मुझे। उसे पूरा का पूरा अपने पास रखूं, सिर्फ़ मेरा है मेरा। तुम अब किसी और के हो चुके हो ये सोच कर मुझे तकलीफ़ होती है, नहीं तुम मेरे हो सिर्फ़ मेरे गर ये नहीं हो सकता तो मुझे तुमसे मिलना भी नहीं चाहिए। बाइक पर बैठे हुए मुझे कितने ख्याल आ रहे थे।)

शाम को हम रेस्टोरेंट पहुंचे अन्दर एंट्री कर ही रहे थे।

निया बोली, "तुमने इनको भी बुलाया है?"

"किस को?"

"इनको।"

"किसको?" मैंने देखा इतने में तो वो बर्थडे विश भी करने लगा निया से हाथ मिला कर। उसकी वाइफ ने भी किया। फिर निया ही बोल दी चलो अन्दर चलो।

"नहीं हम जा रहे हैं।"

"अब इस मौके पर मिले हो तो चलो।"

"नहीं हम तो ऐसे ही घूमने आए थे।"

"मैंने बोला चलो ना।"

"चल दिया।"

सबने मुझे उसके ही पास बिठा दिया उसकी वाइफ अपने हाथों से खिलाने लगी मुझे।

मैंने उनसे पूछा "ठीक हो?"

वो बोल पड़ा– "बुखार आ रहा है दो तीन दिन से तबियत सही नहीं है।"

"पहले से डाउन लग रही है हालत।"

मैंने उसकी वाइफ को दूसरी बार देखा था उसके साथ पहली बार थोड़ी बहुत घबराहट हुई थी। आज तो अजीब उथल पुथल हो ने लगी सीने में। सब कॉफी पी रहे थे मेरे हाथ में कॉफी का वो मजबूत कप मेरे हाथ से हाथ में ही टूट जाएगा ईर्ष्या से ऐसा लगता रहा कई बार। मन भी किया फर्श पर मारूं पटक के।

बोला "पियो ना"।

मैं बोली "कप तोड़ने का मन कर रहा है बहुत जोर से।"

ध्यान से मेरे चेहरे की तरफ देखने लगा।

अभी तक ऐसा कुछ नहीं किया अपनों के सामने 'ऐसा नहीं होने देना व्याख्या' बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला।

खाना पीना हो गया वो जाने को बोलने लगा जाऊँ? मेरे से आज इतने सारे लोगों के सामने भी उस से कहा नहीं जा रहा था "जाओ"। मेरी कजिन उसकी वाइफ को डांस कराने ले गई। डांस वांस हो गया।

वो फिर पूछने लगा "जाऊं?"

मैं फिर नहीं बोल पाई जाओ। "क्या करोगे मम्मी को बोल ही दिया।"

कॉल आई तो बोला

(एक फ्रेंड का बर्थडे है मिल गए हम तो यूँ ही आए थे। अब उन्होंने रोक लिया आ जाएंगे आधे घंटे में)।

अच्छा हुआ अपनी वाइफ के सामने बोला मम्मी को ये सब वरना मैं सोच रही थी कहीं उसकी वाइफ ना समझे मैंने बुलाया है और वो बहाने से लाया है उसे।

रात को मैंने मैसेज किया तुम मिल गए अपनी वाइफ के साथ मुझे बहुत अच्छा लगा।

सुबह उसकी कॉल आई

"क्या बोली तुम उसको?"

"किसको क्या बोली हूँ?"

"पूरी रात सोई नहीं वो रोती रही है, आँखें लाल हो गई हैं। मैं थोड़ी देर के लिए ही दूर हुआ और तुम पता नहीं क्या क्या बोल दी।" (एक दम गुस्से में छल्ला के बोल रहा था)

मैंने बताया – "हमारी बात सिर्फ इतनी हुई और उन्होंने ही बात शुरू की थी।

बोली, 'मेरा गला खराब हो रहा है कल फ्रेंड के साथ कंप्यूटर का सर्टिफिकेट लेने गई थी तो गन्ने का जूस पी लिया था, बर्फ कटवा के।'

मैंने पूछा 'ज्यादा ही पतली लग रही हो तबियत ज्यादा ख़राब हो गई थी क्या?'

'मैं तो ऐसी ही हूँ तुम पहले से बहुत पतली हो गई हो पहले ठीक थी।'

"मैं भी ऐसी ही हूं।"

"फोटो देखे हैं मैंने पहले मोटी थी तुम।"

"कहां देखे तुमने फोटो?"

"देखे थे।"

"मैं बीमारी की वज़ह से पतली हो गई हूं।" मैंने थोड़ा हंस के बोला था।

सुनके उनका चेहरा उतरा सा लगा मुझे।

तो मुझे लगा वो कुछ और समझी है। मैंने फिर रिप्लाई किया। "बीमारी की वज़ह से हो गई हूं। बहुत दिन से बीमार हूँ ना।"

"हां बता रहे थे। 'बीमार हो गयी है तब से कंकाल सी लगती है, ठीक ही नहीं हो रही पता नहीं क्या हो गया है उसको। पहले बहुत अच्छी लगती थी'।"

फिर वो बोली – "घर घूमने क्यों नहीं आती?"

"आई थी तुम्हारी तरफ कल।"

"घर क्यों नहीं आई?"

"बस थोड़ी देर के लिए आई थी।"

"घर घुमने आ जाती।"

"नहीं मैं बिना काम के कहीं नहीं जाती।"

"आना कभी।"

"हाँ देखूंगी कभी।"

बस इतने में तुम आ गए थे बाइक लेके।

(मुझे डर लग रहा था कहीं वो नंबर ना माँगने लगे मेरा मैंने सोच भी लिया था मांगेगी तो बोल दूँगी विशाल से ले लेना। तुम्हारी वाइफ तुम्हारी जिम्मेदारी नंबर देना है या नही ये तुम जानो।)

"तुम कुछ भी बोल देती हो होश रहता नहीं है।"

"मुझे मालूम है तुम किसी की भी बात मान सकते हो लेकिन मेरी नहीं। मेरा कभी यकीन नहीं कर सकते।"

"मुझे यकीन था तुम ऐसा कुछ नहीं बोली होगी बस वो...।" "क्या बोल रही है तुम्हारी वाइफ?"

"वो बोल रही है तुमने बोला उसे 'मैं तुम्हारी वज़ह से ऐसी हो गई हूँ।'

मुझसे बोल रही है – कौन है वो तुम्हारी सच सच बताओ मुझे?"

"आज के बाद हम कभी बात नहीं करेंगे विशु तुम खुश रहो, सॉरी फॉर एवरीथिंग।

"बात ना करने वाली बात नहीं है। उससे ऐसा कुछ नहीं बोलना था ना।"

"मैंने ऐसा कुछ बोला ही नहीं है।"

"वो क्या झूठ बोल रही है फिर?"

"दूसरे लोगों की बात बहुत जल्दी मान लेते हो तुम लेकिन मेरी आज तक नहीं मानी। कोई नहीं तुम जो समझो मगर मैंने कभी कोशिश नहीं की तुम्हें क्या किसी को भी अलग करने की। अब तुम जो चाहे समझो मैं तुम से दूर हूं।"

"मुझे यकीन था तुम ऐसे बोल ही नहीं सकती फिर भी एक डर था जब मैं उसको तुम्हारे पास छोड़ के गया। तो डर रहा था कहीं कुछ पोल ना खुल जाए और वही हुआ।"

"तुम बोल रहे थे जब कि 'मुझे नहीं बुलाओगी पार्टी में?' इसलिए मना किया था मैंने।"

"रात से ही रोए जा रही है आंखें सूज गई है तबियत खराब हो गई दवा लेने भी नहीं जा रही। उठी भी नहीं 11 बज गए। मम्मी पूछ रही थी बहु क्यों नहीं उठी? क्या बताऊं मैं? जी एफ हो तो रूठ जाने दो कोई नहीं मान ही जाएगी। वाइफ है सब पूछेंगे क्या हुआ क्या हुआ। घर जाने को बोल रही है अपने। मुझे घर छोड़ आओ।"

"मैंने नहीं बोली यार ऐसा कुछ।"

"हां मैं जानता हूँ, बाद में बात करुंगा। ऊपर आया था बात करने के लिए।"। (उसने कॉल काट दी।)

आज मुझे बहुत बुरा लगा मुझे मेरी सकल से अब पूरी तरह से नफ़रत हो गई है। आज मरने का मन करने लगा नाकाम भी मरने का। मैं हार गई हूँ मैंने नहीं बोला उसे कि वो मेरी जगह है। और वो सच मानने को तैयार नहीं है ये बात मुझे जिंदगी भर तड़पाएगी। मैंने उसके लिए क्या क्या सहा लेकिन उसने मुझे पर कभी यकीन तक नहीं किया।

मेरी हालत बहुत खराब हो गई हाथ काँप रहे थे सीने में सांस रुकी रुकी सी लग रही थी, ली ही नहीं जा रही थी। जैसे कोई बहुत ही मजबूत चीज़ सीने में अटक गई हो। बहुत कोशिश करने पर सांस ले पा रही थी मैं।

मैं बहुत कोशिश कर रही थी खुद को बहलाने की मगर मन नहीं मान रहा था इतना बड़ा इल्ज़ाम मैं अपने सिर पर कैसे ले सकती हूं"। रीति बोल रही थी चलो मूवी देखने चल रहे हैं। वो मेरा मन बहलाने की कोशिश कर रही थी। मेरी हालत ऐसी तो उसकी शादी पे भी नहीं हुई थी। सीने में जो आज दर्द हो रहा था। नहीं अब कभी बात नहीं करूंगी चाहे कुछ भी हो जाए। नहीं सुनना बार बार मुझे। नहीं बनना किसी के बीच झगड़े की वजह।

अगले दिन, रीति ने अपने इंस्टाग्राम से मैसेज किया विशाल को – "दीदी कुछ नहीं खा रही हैं रोए जा रही हैं कल से। तुमने कुछ बोला है क्या?"

उसने मैसेज पढ़ते ही कॉल की। मैंने सोचते हुए उठाई उठाऊं या नहीं"

"क्या हुआ, खाना क्यों नहीं खाई?"

"मुझे बहुत बुरा लग रहा है। विशु तुमने मुझे.....।"

"कुछ नहीं समझ रहा मैं। मान गई वो, कोई बात नहीं, खाना खा लो तुम।"

फिर रोज सुबह को वीडियो कॉल करने लगा मुझे आदत सी हो गई उसकी कॉल की फिर से।

सातवें दिन उसकी कॉल नहीं आई। मैंने आठवें दिन मैसेज किया – "आई एम वेटिंग योर विडियो कॉल।"

"घर पर बात कर रहा हूं।"

"कोई नहीं करो, कोई बात नहीं।"

उसकी मिसकॉल थी। मैंने वापस की तो व्यस्त जा रहा था।

उसका फोन बिजी जाता था तो मुझे एक दम से जेल्सी के साथ गुस्सा आता था।

मैंने गुस्से में मैसेज किए, "ज्यादा बिजी हो, कोई नहीं रहो।"

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं।"

"अच्छा।"

"समझ में नहीं आता मैं क्या करूं।"

"मर्डर कर दो मेरा।"

"इस खेल के तो तुम अच्छे खिलाड़ी हो।"

"क्या मतलब!"

"बिना जान लिए कैसे मारा जाता है किसी को अच्छे से आता है तुमको।"

"मैंने कितनी मार दी सब तुमको तो बता गई।"

"लेकिन तुम सिर्फ मेरा मन बहलाने के लिए बात करते हो। मुझे फिजूल में हर्ट होता है जब तुम मेरे नहीं हो तो साइड हटो क्यों खुदको तकलीफ दूं।"

"क्या बोली! साइड ह तू!"

"नहीं ऐसा नहीं बोला।"

"हटता हूँ तो रोने लगती हो।"

"मैं कुछ भी करूं, मेरा कुछ भी हो।"

"नहीं देखी जाती तुम्हारी तकलीफ़, मैं जानता हूँ बात करूंगा तो भी तुम्हें हर्ट होगा नहीं करूंगा तो भी। तो मैं क्या करूं? क्या करूं बताओ?"

"तुम बोल रहे थे कि 'प्यार था जताया नहीं।' तो क्वेश्चन ये है कि कब था मुझसे प्यार? कहां था? वैसे अब इसका कोई वो तो नहीं है।"

"जब तक कोई किसी के पास होता है तब तक उसका एहसास नहीं होता। जब वो थोड़ा दूर हो जाता है जब उसकी अहमियत पता चलती है। जब किसी की कमी महसूस होती है तब लगता है वो कहां....। मुझे तुमसे प्यार था हां कविता के बारे में बात करता था बोलता था, लेकिन उससे ज्यादा प्यार तुमने किया है। लेकिन मैं ये सब जान के बोलता था। जब कोई दूर होता है उसके प्यार का एहसास तब होता है। पास होने पर तो सब ठीक लगता है। जब दूर होता है तो बहुत कमी महसूस होती है। तुमसे प्यार था कभी जताया नहीं, कभी दिखाना नहीं चाहा मैंने तुमको। अकेले में बहुत बार बोला खुद को, मैं क्या करूं जो मेरे लिए इतना सब करती है। मैं क्यों गलत बन रहा हूं उसके लिए। फिर सोचा किसी के लिए गलत रहूं ज्यादा अच्छा रहेगा। मुझे अपनी तारीफ़ बहुत पसंद है किसी और से नहीं तुमसे। फिर भी तुम करती थी तो बोलता था "मुझे अपनी तारीफ़ पसंद नहीं है", मैं जैसा हूं तुम्हारे लिए गलत बनके रहना पसंद करूंगा। मैं एक के लिए बहुत अच्छा बन के रह लिया था। और वो मुझे हमेशा अच्छा बोलती है ये बात तुम भी जानती हो। लेकिन मैं और सबके लिए बुरा ही पसंद करता हूं और वो मुझे ज्यादा गलत समझे जो मेरे ज्यादा करीब हो। यही चाहता हूं मैं। रियली रियली सॉरी।"

"मैंने तुम्हें कभी गलत नहीं बोला, लेकिन तुम मानते हो तो ठीक है।"

"नहीं मानता, मैं जानता हूँ तुम मेरे से नहीं बोली कभी, कोई भी बात होती थी तो मैं खुद उल्टा बोलके बोलता था कि तुम मेरे को गलत बोलती हो। मैं जान के बोलता हूं कि तुम मुझे गलत बोली।"

"मैंने कभी किसी और से नहीं बोला डायरेक्ट तुमसे बोलती हूं जो भी मुझे गलत लगता है।"

"मैं हर बार तुमसे लड़ता हूं तुम्हारी बात को उल्टा बोल कर। फाइनली तुम कभी भी गलत नहीं थी मेरे लिए। मैं जान के तुम को बोलता था। तुम्हारी बातों को उल्टा बोलता था। ओके बाय विशी।"

"उन बातों का कुछ नहीं है वो तो ऐसे ही पूछ लिया था।"

"कोई बात नहीं माफ कर देना मैंने तुमसे कभी प्यार नहीं किया।"

"मुझे ज़रूरत नहीं है किसी के प्यार की।"

"ये कभी नहीं सोचा होगा तुमने, मेरी बात को उल्टा क्यों बोलता है। हर बात को उल्टा क्यों समझता हूं, कभी सोचा? अपने आप को बोला तुमने कि मैं सब ठीक और क्लीयर बोलती हूं फिर भी उलटा क्यों बोलता है ये, कभी सोचा तुमने?"

"सोचती थी।"

"इतना सारा मैं गलत बोल दिया, मैंने कभी प्यार नहीं किया, और नहीं दिखाना चाहा, ना करता हूं ना कर पाऊंगा। तुम हैप्पी रहो, आई एम रियली सॉरी।"

"मुझे ज़रूरत नहीं है तुम्हारे प्यार की।"

"तुमको मेरी जरूरत होगी नहीं अब जानता हूँ।"

"मैंने कभी बताया नहीं तुमने कभी समझा नहीं।"

"मैं नहीं जानता प्यार क्या होता है।"

"मुझे भी नहीं पता।"

"फिर कैसे बोल दी मेरे से?"

"पता नहीं, सो जाओ अब।"

"नहीं पहले क्लीयर करो।"

"गुड नाइट।"

अध्याय 7

सॉरी विशु कुछ भी बोल जाती हूं। प्यार हैं ना तो गुस्सा जायज है जिस दिन गुस्सा ख़त्म सब कुछ ख़त्म। जिस दिन मुड़ गई ना पलट कर भी नहीं देखूंगी। जानती हूं तुम्हारे दिल में मेरे लिए कहीं कोई जगह नहीं है। प्यार कविता से है शादी किसी और से हुई है मेरा क्या? छोड़ो जाने दो। इट्स ओके, तुम नहीं आते मेरी ज़िंदगी में तो बहुत सारे एहसासों से अंजान रह जाती मैं। थैंक यू फॉर एवरीथिंग। कोशिश में लगी हूं तुम्हें भूलने की। जिस दिन कामयाब हो गई तुम्हें पता भी नहीं चलेगा बहुत दूर जाके तुम ये समझ पाओगे कि मैं पलट गई हूं। हर किसी को अपना मत समझना, कौन तुम्हारा है ये वक्त बता ही देता है। एहसास होते ही उसकी कद्र करना। तुम्हारी वाइफ है, अब उसके हिस्से का टाइम हम नहीं मांगेंगे तुमसे। दोनों जब ही बहुत क़रीब आ पाओगे। तो मेरी तो कोशिश जारी है, वैसे तुम्हें मेरी याद शायद ही आए। गर आए भी तो कविता से बात कर लिया करना। मुझे डिस्टर्ब मत करना। वरना मेरी मरी हुई फीलिंग्स फिर से ज़िंदा हो सकती है।

"कभी कभी सोचती हूं, तुम्हें इतनी अच्छी वाइफ नहीं मिलनी चाहिए थी।"

"क्यों?"

"वो हर तरफ़ से अच्छी है। वो मुझसे खूबसूरत है मुझसे लंबी है। मेरी तरह ही एक की ही हो कर रहने वाली है, ये तुम्हें मिलनी इसलिए नहीं चाहिए थी। वो हर कमी पूरी कर देगी। फिर तुम्हें मेरी याद क्यों आएगी। तुम्हें मेरी याद नहीं आएगी ये मेरे लिए दुखद बात है ना!"

"कमी किसी की कोई पूरी नहीं करता। मैं तुम्हें कभी भूल ही नहीं सकता। समझी।"

उसने एक पुरानी फ्रेंड की रील पर किस वाली इमोजी कमेंट कर रखी थी मैंने स्क्रीनशॉट सेंड करके मैसेज किए। –

"ये क्या है? अब ये कौनसी वाली है? और मेरी पोस्ट लाइक भी नहीं करते। गो टू द हेल। मनाओ रासलीला। घर की बहुत टेंशन रहती है ना! ऐसा करोगे तो और क्या होगा। एक दिन कद्र करने वालों के लिए भी रोएंगे तुम। तुम किसी को अपना रहने नहीं दोगे। इतनी अदाकाराओं की भीड़ में अकेले होंगे एक दिन। टाइम नहीं है, टाइम नहीं है, इन सबके लिए तो बहुत टाइम है तुम्हारे पास। मेरे पास कॉल या मैसेज मत करना अब कभी। बहुत हैं गोपियां आपके पास खुश रहना अपनी रासलीला में। क्लीयर बोलना नहीं आता? मैं पागल, इतना सब कुछ झेलने के बाद भी उम्मीद में थी तुम समझोगे। तुम सिर्फ़ रुला सकते हो ऐसे ही फ्रॉड लोगों के पीछे भाग भाग कर। आज तक मिलने का प्लान बना रही थी लेकिन अब इत्तिफाकन भी मिलना नहीं चाहूंगी। बहुत हो गया अब नहीं चाहिए मुझे ना तुम ना तुम्हारा वक्त। हां गाली दी मैंने तुम्हें हां वो सब बोला तुम्हारी पत्नी को जो वो बता रही थी तुम्हें। कुछ भी जो तुम्हें लगता है सब किया है मैंने।"

मैसेज करते ही मैंने ब्लॉक कर दिया।

फिर उसने भी कर दिया।

पंद्रह बीस दिन बाद कॉल पर कॉल करने लगा। मैं रिसीव ही नहीं कर रही थी। बहुत कम होता था जब वो मेरे रूठने पर इस तरह कॉल करता था। मैं उसे दो दिन से ज्यादा ब्लॉक नहीं रख पाती उसकी चार पांच दिन तक आती मिसकॉल को देख के एक अलग ही संतुष्टि हो रही थी। लास्ट वाले दिन फोन मेरे हाथ में था उसकी चार पांच कॉल आ चुकी थीं इस कॉल के बाद कॉल आई तो उठा लूंगी। कॉल आई।

"हेलो।"

"बोलो।"

"कॉल क्यों नहीं उठा रही हो?"

"कोशिश कर रही थी तुम्हें डिस्टर्ब ना करूं तुम्हारे पास टाइम नहीं होता ना। सोना होता है। घर से कॉल आ जाती है हर बार। अब मुझे नहीं पता सच में आती है या कॉल काटने का आपको अच्छा बहाना मिल गया है। खैर अब उसकी ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। कितनी बार बोल चुके तुम मुझे टाइम नहीं है मेरे पास। काश कि पहले

ही नहीं होता। बार बार सुनके सोचती थी यार किसी के लिए इतने नकारे भी नहीं बनना चाहिए कि वो एटीट्यूड दिखा दिखा के बोले टाइम नहीं है मेरे पास। हम तो नकारे निठल्ले हैं हमारे पास क्या काम है किसी को कॉल करने के सिवा। "मेरे पास एक मिनट भी है तो मेरी वाइफ के लिए है और किसी की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है"। हम किसी और के हिस्से का टाइम क्यों लें तुमसे। चलो आपने एक्सेप्ट तो किया कि आपने हमसे अपनी ज़रूरतें पूरी की थी, जो अब आपको है नहीं। टाइम नहीं है मेरे पास, मैं सो रहा था, घर से कॉल आ रही है, ये सब सुनने के बाद भी तड़पती थी बात करने को। रहा ही नहीं जाता था बिना बात किए। बिना हाल जाने, लेकिन तुम फिर वहीं हरकत दोहरा देते, फिर हर्ट होता। मैं कुछ बोलने जा रही हूं अचानक से 'घर से कॉल आ रहा है' कुछ बोलने का भी मौका नहीं देते कॉल कट। वो बात लवों तक ला कर फिर से अंदर करनी पड़ती थी। क्या फील होता है शायद तुम कभी नहीं समझ सकोगे। बार बार जलील होती रही बार बार बात करने को तड़पती रही लेकिन ये सब सुनके मुझे लगता था “मेरा आत्मसम्मान कब जागेगा कब?” कहां मैं इज्ज़त से बात करने वालों से भी बिल्कुल बात नहीं करती। और यहां बार बार जलील होने के बाद भी करे जा रही हूं करे जा रही हूं। शर्म आती थी अपने आप पर। क्या करे साजिश के तहत काम करने वालों की ही जीत होती है भाई मोहब्बत में अक्सर।"

"भाई किसे बोली? मैं जब भी बात करता हूं तुम ऐसे ही करती हो या तो बिल्कुल कुछ नहीं बोलोगी, बोलोगी तो फिर लाइन लगा दोगी।"

"तो तुम गुस्सा दिला ही इतना देते हो।"

"ठीक है अब नहीं करूंगा बात।"

"फिर दिला रहे हो गुस्सा।"

"अब किस बात पर गुस्सा?"

"बात कर रही हूं तो, अब नहीं करूंगा बात।"

"करो ना। सुन रहा हूं।"

"मैंने तो सुना दिया, अब तुम सुनाओ, सब खैरियत?"

"कहां है कुछ खैरियत।"

"क्या हुआ।"

"कुछ नहीं सब ठीक है। रखता हूं, फिर करूंगा। ठीक है!"

"ठीक है।"

फिर दो दिन बाद मैसेज किया उसने।

"कॉल भी नहीं कर सकती।"

"तुम तो ब्लॉक रखो।"

"कॉल तो कर सकती थी ना!"

"नहीं।"

"पूछा भी नहीं कैसे हो?"

"पूछूं क्यों? पता है नकचढ़े हो।"

"तबियत खराब है।"

"क्या हुआ? मन करता है मेरे पास कोई मेरा हो।"

"मैं बोली थी ना मैं आऊंगी, बस एक ही बात से पीछे हट जाती हूं।"

"मैंने मना किया था ना मत जाओ, नहीं मानी, और कुछ बोलता हूं तो बोलती हो तुमने मुझे गलत बोला।"

"मैं पिछली बातें याद नहीं रखती प्रेजेंट अच्छा होना चाहिए बस।"

"मैं पागल नहीं मुझे सब याद रहता है क्या क्या बोली हो तुम मुझे।"

"अरे यार।"

"तुम्हें पता था मैं शादी करने जा रहा हूं तुमने मुझे फोर्स भी नहीं किया शादी मत करो। मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूं। एक बार भी तुमने मेरे से बोला भी नहीं। मेरे से शादी करोगे तुम? अभी मत करो यही बोलती रही बस।"

"तुमसे सुनना चाहती थी मैं, मगर तुम तो हमेशा कविता कविता करते रहते थे। "उसके लिए सब कुछ छोड़ दूंगा," मैंने बोला था तुम हमेशा के लिए मेरे हो जाओ। मुझे ज़िंदगी भर के लिए तुम्हारा साथ चाहिए मगर जब तुम ही मेरा होना नहीं चाहते तो मैं क्या करती।"

"पता नहीं कब क्या बोली जब मैंने सुनना चाहा जब बोली नहीं। एक बार में कोई बात नहीं सुना दोबारा पूछा तो बोली जाने दो कुछ नहीं। यही तुम अभी करती हो।"

मैंने बस में बोला था वो भी तब ही जब तुम लड़की देख कर आए थे। तुम मेरे पास बैठे थे। मैं बोली नहीं तुमसे, तो तुम आंखें नम करके बोले थे "बोलोगी नहीं"?

"जिस लड़की को देखने गए थे उसी से बात करना अब।"

"मना करके आया हूं।"

"क्यों?"

"पसंद नहीं आई मोटी थी।"

मैं तब ही सोच ली, मना मोटी थी इसलिए किया गया है। कुछ और मत समझ लेना व्याख्या।

मैंने बोला था "तुम मेरे क्यों नहीं रह सकते?"

"मैं अच्छा लड़का नहीं हूं।"

"लेकिन मुझे तो सिर्फ तुम चाहिए, तुम्हारा साथ चाहिए उम्र भर के लिए।"

"पागल तुम बहुत अच्छी लड़की हो मैं तुम्हारे लाइक नहीं हूं।"

"बात अच्छे बुरे की नहीं है...। ठीक है मुझसे बात मत करना तो अब।"

"मुझे सब ऐसे ही बोल देते हैं।" बोल के तुम शांत होके मायूस से चुप चाप बैठ गए।

तुम्हारी आंखों में आंसू देख कर, मुझे तुम्हे छोड़ने वाले याद आ गए। मुझे लगा सच में लोग तुमसे मतलब निकाल कर छोड़ जाते हैं शायद। मगर मैं नहीं छोडूंगी।

मालूम नहीं था कि फिर तुम मुझे छोड़ दोगे।

"जैसा मैंने चाहा था मुझे वैसी वाइफ नहीं मिली तुम मेरे लिए एक दम परफेक्ट थी यार।"

"आज ये बोल रहे हो याद है एक दिन जूस वाली दुकान पर क्या बोले थे?"

"क्या बोला था?"

"मैं तुमसे शादी कर तो लेता तुम्हारी हाइट सही होती तो और तुम कविता की रिलेटिव नहीं होती तो।" ऐसा बोले थे।

ये कविता कविता करके इस नाम से इतनी नफ़रत करा दी तुमने। सुन के बुरा लगा कि तुम्हें पहले से मेरी हाइट नहीं दिखी! मुझे कभी लगा भी नहीं कि तुम सिर्फ़ मेरे हो। तुम एक बार भी एहसास करा देते कि तुम सिर्फ़ मेरे हो। मैं इतना प्यार करना चाहती थी तुमसे, आज भी है।"

"जानता हूं।"

"मैं जब तुम्हारे पास होती हूं शादी के बाद भी अब भी मन करता है सबको तुमसे दूर करके तुम्हें अपना बना लूं।"

"आई एम रियली सॉरी।"

"जब भी तुम्हें तुम्हारी वाइफ के साथ देखती हूं अंदर से हिल जाती हूं।"

"तुम्हें लगता है मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होती मैं कितनी तकलीफ़ में क्यों हूं मैं दिखाना नहीं चाहता किसी को।"

"दिखाना था यार।"

"मैं कुछ बोलता हूं तो मानती नहीं हो जानता हूँ तुम मेरा कभी यकीन नहीं करोगी।"

"तुमने अगर मुझे कुछ माना है तो सिर्फ़ लास्ट ऑप्शन सब कुछ तो तुम्हारा कविता थी। अब कौन है जानना ही नहीं है।"

"तुम जो समझो।"

"छोड़ो जाने दो अब इन बातों से कुछ नहीं हो सकता, ये ही सोच कर मैसेज डिलीट कर देती हूं।"

"फिर करती क्यों हो?"

"मन की बात बाहर निकल जाती है मन हल्का हो जाता है।" "अच्छा!"

"हां।"

"सब कुछ हार गया मैं, किस प्राप्ति के लिए तुमसे लड़ूं अब।
तुम किसी और की ज़रूरत बन गए हो, मुझे तुम्हारी जरूरत है कैसे कहूं अब।
पास रह के भी दूरी सही मैंने, फासलों के दरमिया मिलने की तड़प
कैसे सहूं अब।"

उसने सीन मैसेज किए, कोई रिप्लाई नहीं।

मेरे हाथ में चोट लग गई थी। मैंने उसे हाथ का फोटो भेजा व्हाट्सअप पर। उसने सीन करके कोई रिप्लाई नहीं किया।

15 दिन बाद मैसेज किया।

"हाय विशी, आई मिस यू।"

"क्या हुआ? आज कैसे याद आ गई?"

"याद तो आती है, मैं जान के कॉल मैसेज नहीं करता।"

"बस करो यार। इतने दिन से इंतज़ार कर रही थी, तुम पूछोगे हाथ में कैसे लग गई। तुमने कोई......। जाओ यार ज्यादा सोचने से डर लगता है पागल ना हो जाऊं। तुम बिना आए मेरी ज़िंदगी से जा चुके हो। तुम्हें अब मेरी कोई ज़रूरत नहीं है।

मैं तुमसे बहुत प्यार करना चाहती थी बहुत। अपने सारे छोटे बड़े एहसास तुमसे शेयर करना चाहती थी। लेकिन आपके पास टाइम नहीं होता है। जब जब बात करने का मन हुआ तुमने कॉल ही अटेंड नहीं की। एंड मुझे पता है आपके पास टाइम नहीं है तो मुझे भी डिस्टर्ब नहीं करना चाहिए। जानते हुई भी अब तक डिस्टर्ब किया सो सॉरी।"

"कॉल तो कर नहीं सकती हो मैं सोता रहता हूं पूरे दिन। नाइट ड्यूटी है।"

"तुम नहीं कर सकते? "

"मैं क्या सुनाने को करूं कॉल, तुम तो जब भी करती हो सुना देती हो।"

"हां तुम्हारे पास सुनाने को तो सिर्फ़ गालियां हैं अब तो एक्सेप्ट कर लो तुमने और कविता ने मिलके मेरे साथ खेल खेला है। तुम कभी नहीं समझोगे मेरी ऐसी हालात क्यों हुई है। तुम्हारे मुंह से किसी और का नाम सुनके मुझे क्या होता है। तुम कभी नहीं समझोगे।"

"तुम क्या चाहती हो, लास्ट टाइम बता दो बस?"

"तुम्हें।"

"और मुझे कुछ नहीं सुनना अभी मेरी तबियत ख़राब है।"

"बहुत जल्दी आपकी प्रॉब्लम सॉल्व करूंगी।"

"तुम क्या चाहती हो मर जाऊं!"

"मारूंगी ज्यादा बोले तो, कितनी बार बताऊं मुझे तुम चाहिए तुम, तुम मेरे क्यों नहीं हो? क्यों बनाया मुझे अपना तुमने?"

"मरूंगा मैं सबका हो जाऊंगा खुश रहना।"

"ये सब कितने लोग हैं? मरने की बात मत करो बस इतना बोल दो ना तुम मेरे थे ना कभी हो सकते।"

"मैं सो रहा हूं बाय।"

फिर शाम को कॉल कर रहा था मैंने उठाई नहीं। फिर मैसेज किए –

बिजी हो? ओके बाय।

मैंने कॉल की, उठाई नहीं फिर मैसेज किया

"अब कौन बिजी है तुम हमेशा इल्ज़ाम देते रहते हो मैंने सब एक्सेप्ट कर लिया है विशु, गलत मैं ही हूं। बाकी कुछ रह गया हो तो बोल सकते हो।"

"मैं कुछ नहीं बोल रहा सोली, गुड नाइट।"

"तबियत भी नहीं पूछ सकते ना! कोई नहीं आपके पास टाइम ही नहीं है ना।"

"ठीक नहीं है तबियत? मेरे पास मेरे लिए टाइम नहीं है यार मैं अपने आपको टाइम नहीं दे पा रहा हूं, तुम्हें क्या बोलूं मैं अगर पास होती तो गले लगा कर बहुत रोता मैं फिर पता चलता तुमको।"

"तुम अकेले नहीं हो अब।"

"थैंक्स बताने के लिए भूल गया था।"

"पता है मुझे सामने होके भी टाइम मांगना पड़ता था और तुम हमेशा कंजूसी करते थे। बहुत जल्दी पड़ती थी भागने की। तुम्हें लगता है मेरे पास टाइम ही टाइम है मैं फ्री रहती हूं।"

(अब इनको कौन समझाए कि प्यार में पड़ी लड़की 24 घंटे की हर मिनट अपने प्यार के बारे में ही सोचती रहती है और वो जान कर नहीं सोचती। उसके माइंड में खुद ही घूमते हैं ख़्याल किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता है बस कोशिश करते करते संभाल लेती है दूसरे भी काम।)

इस एक साल में वो मुझसे 5 6 बार मिलने आ गया था। एक बार मैं बीमार थी तो वो मुझे देखने आया। एक बार उसकी तबियत ख़राब हुई तो मैंने मिलने बुलाया। उसका चश्मा लगा तो मुझे उसने पहनते ही फोटो सेंड करके बताया। मैंने चश्मिश रिएक्ट किया।

"जानता था सबसे पहले तुम ही बोलोगी चश्मिश"।

उसका चश्मा मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने उससे चश्मे का नंबर मांगा दिखाओ कितनी डाउन हुई है नजर। मैंने अपनी पसंद का चश्मा उसको बिना बताए बनवा कर, बाद में उसको बताया। बोला पहनकर फोटो क्लिक करके दो। अच्छा है। फिर आया तो मैं देने गई।

उसकी एक खास बात थी वो जितना टाइम बोल देता था उतने पर ही हाज़िर हो जाता था। पंद्रह मिनट में नहा के भी पहुंच गया। भीगे बालों में इतना हसीं लग रहा था जिसके आगे एक खूबसूरत दुल्हन भी फीकी लगे।

"यूँ तो लगता है वो हमेशा ही हसीं मगर भीगी जुल्फों में जब आया सामने।
दिल तो उसी के पास ही था हमारा, पलकें झपका के हम धड़कन लगे थामने।।"

जुकाम हो रहा था उसे, उसने मुझसे रुमाल मांगा मेरे मुंह पोंछने वाले रुमाल से उसने नाक साफ़ की मैंने उसे बिना घिन किए इतराके बैग में रख लिया। क्या ये भी प्यार था?)

जब वो शादी के बाद पहली बार मिलने आया था। मेरे पास सिर्फ ढाई सौ रुपए थे। और रीति ने ज्यादा आइटम ऑर्डर कर दिए थे तब मैंने उस से कहा “पे कर देना”। हां यार अब तुम पे मत किया करो जॉब नहीं कर रही हो तुम। इसके बाद वो जब भी मिला उसने मुझे पे नहीं करने दिया।

दूसरे दिन कॉल करके बोल रहा है। "कहां से बनवाई थी चश्मा कैसा है आँखें लाल हो गई सही दिख नहीं रहा है इतना।"

"मैंने तो हर चीज़ फ्रेम, लेंस बढ़िया से बढ़िया क्वालिटी वाला पसंद किया था नंबर भी दोबारा चेक करवाया था। प्रॉब्लम हो रही है तो उसे फेंक देना।"

"फेंक देना मतलब!"

"तुम्हें मेरी कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती इसलिए फेंक देना।"

"पता नहीं आँखें क्यों लाल हुई हैं।"

दूसरे दिन बोला, "मेरे वाले से तुम्हारा वाला कंफर्टेबल है, सॉरी मैंने सुना दिया उसके लिए।"

"कोई नहीं।"

"3 दिसंबर को घर आया था और 20 को उसका बर्थडे होता है तो मैं उसे गिफ्ट देने गई थी। उसकी बेरुखी हमेशा से ही रही है। जो मुझे बर्दाश्त नहीं होती। उस दिन मैं

उस से ये सोच कर मिलने गई थी। हम आज के बाद कभी नहीं मिलेंगे। गिफ्ट दूंगी और आ जाऊंगी। वो फ्लाई ओवर के नीचे बाइक पर बैठा, हेलमेट पहने मुस्कुराता हुआ दिखा। उसकी स्माइल हेलमेट में और भी अच्छी लग रही थी। पर मुझे सिर्फ़ गिफ्ट देना है

और लौटना है अभी भी। मैंने गिफ्ट दिया और बोली

"हम जा रहे हैं।"

"ओके।"

मैं मुड़ गई मेरी आंखों में आंसू थे "कि अब हम कभी नहीं मिलेंगे माना कि उसे पता नहीं है मगर इस तरह तो नहीं जाने देना चाहिए।"

मैं आंखों में आंसू लिए आगे बढ़ रही थी। वो बाइक मोड़ के लाया। "बैठो।"

"क्यों?"

"कुछ खाते हैं।"

"नहीं खाना कुछ।"

"रीति तो खाएगी।" (रीति मेरी कजिन जो मेरे साथ गई थी।)

"रीति बोली हां खाते हैं कुछ।"

फिर बारिश पड़ने लगी। हमें और देर रुकना पड़ा। उसने आदतन फिर मेरा चुपचाप से फोटा क्लिक कर लिया, और मुझे सैंड भी किया। जो मैंने अपनी स्टोरी पर लगाया था इतरा कर।”

"हेलो।"

"क्या है।"

"तुम इग्नोर मारते हो ना इसलिए बहुत सोच समझ कर कॉल करती हूं।"

"किसने बोला है करो।"

"अब लड़ना चाह रहे हो तुम? जब मैं कॉल करती हूं तो तुम ऐसे ही बात करते हो खुद करोगे तो आधे एक घंटे तक बात कर लेते हो।"

"हां तो मत करो मेरे पास टाइम नहीं है।"

"जानती हूं यार।"

"मेरा मन होगा तो बात कर लूंगा एनी प्रॉब्लम? हैं तो ब्लॉक माई नंबर, मुझे बात नहीं करनी बस यार।"

"आज तो अच्छे से बात कर लेते।"

"नहीं करनी मुझे।"

दो दिन बाद उसका बर्थडे था तारीख बदलते ही मैंने उसे विश किया।

मंजुल मुस्कान को तुम्हारी, लगे ना किसी की नजर।
यूँ ही सजी रहे सदा, तबस्सुम तुम्हारे रुखसार पर।।

"हैप्पी बर्थडे टू यू।"

"थैंक यू। तबस्सुम?"

"मुस्कान।"

"मंजुल?"

"चार्मिंग।"

"थैंक्स।"

फिर उसने सीधे मेरे बर्थडे पर मैसेज करके विश किया दो कॉल भी की। मैंने ना रिसीव की ना वापस। एक मेरे सामने ही आ रही थी मैंने जानबूझ कर रिसीव नहीं की। हालांकि मुझे सुबह से वेट था उसकी कॉल का। रोना भी आ गया था मुझे दो बार कि वो पूरी तरह से भूल गया मुझे, विश भी नहीं किया। दिन के दो बजे तक कोई मैसेज ना कॉल था उसका। बुरा लग रहा था मुझे। फिर आया तो बात करने का मन नहीं हुआ।

फिर न्यू ईयर पर उसका रात 10 बजे मैसेज आया।

"हैप्पी न्यू ईयर"

"इतना लेट याद आता है तुम्हें?"

"वेट कर रहा था, कोई नहीं बिजी होगी।'

"अच्छा मैं कुछ बोलना नहीं चाह रही हूं याद सब रहता है।"

“ओके गुड नाइट।"

"हैप्पी न्यू ईयर टू यू।"

"बहुत टाइम लगा।"

"कुछ बोलना चाह रही थी।"

"बोलो।"

"कुछ नहीं बोलना यार जाओ तुम।"

"ये ही है तुम्हारा जानता हूँ बोलके नहीं बोलना होता है तुमको।"

"मेरे पास टाइम नहीं है” ये कितनी बार बोल चुके हो तुम? याद भी नहीं होगा! जब किसी की ज़रूरत नहीं होती ना तो उसके लिए टाइम होता ही नहीं है। और ये "मेरा मन होगा तो बात कर लूंगा", "मुझे बात नहीं करनी"। तुम्हारे कहे गए वो सारे शब्दों को इकट्ठा कर रखा है मैंने।”

"इकट्ठा करके क्या करोगी? क्या होता है इकट्ठा करने से?"

"एक दिन स्टॉक फुल एंड एवरीथिंग इज़ आउट, थिंग्स लाइक फीलिंग्स।"

"ठीक है बहुत हुआ रखो अब। तुम्हारे लिए कुछ भी कर दो तुम ऐसे ही लड़ोगी।"

"तुमने कभी कुछ नहीं किया मेरे लिए। मुड़ा घर पहुंचाने के लिए बोला मैंने। 'पहले मैं अपने ले जाऊं फिर पहुंचा दूंगा तुम्हारे।' एक बोतल तक एक्सचेंज नहीं की तुमने। 'भाभी मांग रही थी' दे दो भाभी तुम्हारी स्पेशल है तो। मगर वो किसी को दी नहीं थी। मैंने महीनों बाद तुम्हारे कमरे में रखी देखती थी। सोचा साफ नहीं बोल सका

बेचारा, खैर मुझे क्या। बात ये नहीं है कि मुझे बोतल नहीं मिली या कोई भी चीज़। बात ये है कि तुमने मुझे हमेशा इंकार किया। छोड़ने भी आए थे तो कल कल में चार पांच दिन निकाल दिए थे लास्ट में भी बोल रहे थे संडे को चलेंगे। मैंने बोला था जाने को तो मैं अकेली नहीं जा सकती क्या! तुम्हीं बोल रहे हो छोड़ के आऊंगा तो कल चलना है तो चलो वरना कोई ज़रूरत नहीं है किसी की। तब जाके तुम आए थे।'

उसी दिन सोच लिया था, तुम बहुत दिन से चाहते हो मुझसे दूर होना, मैंने तुम्हारे जन्मदिन पर तोहफे में तुम्हें रिहाई दे दी, अब तुम कुछ भी करो अपने टाइम का, गुड बाय।"

अध्याय 8

मैं अगर 15, 20 दिन तक बात नहीं करती थी। जब जा के वो मैसेज या कॉल करता था।

"कैसी हो? तबियत कैसी है?" व्हाट्सअप मैसेज था उसका।

"ठीक हूं। तुम बताओ। और तुम्हारी कविता जी कैसी हैं?"

"फिर से वही बात बोलेगी मेरा दिमाग ख़राब हो जाएगा। मैं एक दम शांत था आज फिर मेरा.......।"

"तुम फिर लड़ने लगे, तुम मुझसे कभी सही से बात नहीं करते।"

"निकलो भाड़ में, उल्टा बात करती है हमेशा जब देखो तब वही बात।"

"मैंने क्या बोला अब ऐसा बताओ?"

"ये भी नहीं सोचा कि कितने दिन बाद बात की है। मैं बात किया कविता की, मैं बोला उसका कुछ? पूछा कुछ? नाम लिया उसका?"

"तुम हमेशा लेते हो आज मैंने ले लिया तो इतना भड़क गए।"

एक पतली सी लड़की का फोटो सेंड करके बोला –

"ऐसा ही हाल बना रखी है, रहो इसी हाल में, कभी सोचोगी भी इस से निकलने का? वीडियो कॉल किया कोई स्माइल भी नहीं की, कितने दिन बाद देख रहा हूं, फोन टेढ़ा कर ली।"

"मैंने फोन ठीक करवाया सबसे पहले तुम्हारी याद आई वीडियो कॉल करने के लिए।"

"बस करो झूठी।"

"हां तुम तो ब्लॉक करके रखो।"

"मेरे से बात ना करके हैप्पी हो, रहो और बात करके भी क्या होगा।"

"मैं लड़ना नहीं चाहती बस।"

"दिख रहा है।"

"मैंने कविता का नाम ले लिया तो इतना सुना दिया।"

"बहुत बार देखा है मैंने,, सुना दिया, उसका नाम ली ही क्यों?"

"अच्छा! उसकी याद आ गई होगी?"

"हमारी बहुत बड़ी गलती हो गई आज, जो तुमसे बात की।"

"मैं चाह रही थी हमारी अच्छे से बात हो, प्यार से और मैं तुम्हें सब कुछ बता सकूं।"

"थैंक्स, बहुत प्यार है इतना ही, हो सके तो माफ कर देना प्लीज़।
अब बताओगी क्या बताना है या मुहूर्त निकलवाऊं!"

"मैंने कॉल क्यों नहीं की थी बताऊं?"

"तुम्हारा मन।"

"तो तुम्हें जानना ही नहीं है।"

"सवाल तुम कभी ठीक करती ही नहीं हो, एक बात पूछूं, एक बात बताऊं, ये सब बोलना होता है तुमको।"

"फिर तुम सुनने से पहले ही ब्लॉक कर देते हो, कॉल काट देते हो।"

"तुमने कोई बात ठीक से बताई, बताते बताते रहने दो, कुछ नहीं, ये नहीं वो नहीं, गुस्सा नहीं आएगा सामने वाला सुनना चाह रहा है उस टाइम रहने दो।"

"तुम गुस्से में बोलते हो 'तुम्हारी मर्ज़ी' जो तुम्हें ठीक लगे, गुस्सा जता देते हो इसलिए बताने से डरती हूं फिर।"

"हां ये ठीक है, गुस्सा आता क्यों है एक बार में कोई बात नहीं बताती इसलिए।"

"बस बस बस अब स्ट्रेस मत लो।"

"क्या करूं फिर?"

"शांत रहो अब।"

"हर बार का हो गया है तुम्हारा, मैं अब सच में नहीं करूंगा कभी कॉल मैसेज।"

"तुम ब्लॉक कर देते हो बेवजह।"

"और यही ठीक है, आज इतना प्यार देने के लिए शुक्रिया।"

फिर वीडियो कॉल करके बोला "देख तो लूं तुम्हें आख़िरी बार।"

"अच्छा!"

"हां यार आज के बाद नहीं करूंगा ना तुम कर पाओगी।"

"ब्लॉक करने की जल्दी पड़ रही होगी ना! कोई नहीं कर दो।"

"बस करो यार, बाय"

मैंने उसे जनवरी में ही बोला था कॉल पर, "बीस फरवरी को आ सकते हो?"

"देखूंगा कोई काम हो तो।"

"मुझसे मिलना काम नहीं हैं?"

"मैंने मिलने से मना तो नहीं किया ना!"

"तो आ रहे हो?"

"बताया ना देखूंगा।"

"देखूंगा नहीं पूरी कोशिश करना।"

"हां छुट्टी मिल गई तो ज़रूर आऊंगा।"

"हां और नहीं आए तो बोल दोगे छुट्टी नहीं मिली। आओ तो बता देना।"

"ओके।"

फिर मैंने अगले दिन पूछा, "बात कि छुट्टी की?"

"नहीं, अभी नहीं, इतनी छुट्टी तो कर ली हैं पहले ही।"

"देख लो हम शायद इसके बाद कभी ना मिलें।"

"क्यों जा रही हो कहीं?"

"हां।"

"कहां?"

"कहां जा रही हूं, ये मिल के बताऊंगी।"

"देखूंगा यार।"

"पता है तुम सिर्फ़ देखोगे।"

मुझे टाइफ़ाइड हो गया था। बिस्तर पर थी। पूरी फैमिली अच्छे से ख़्याल रख रही थी मेरा हर चीज़ का।

मैंने फैमिली से बढ़ कर किसी को माना तो नहीं था कभी। फिर भी जाने क्यों लग रहा था मैंने मेरी फैमिली को चीट किया है। उसकी वजह से आज मेरी ये हालत है और उसे कोई फिक्र नहीं है। पूरी फैमिली एक साल से मेरी केयर करने में लगी है। (बाहर वाले यहां तक कहने लगे थे कि अब ये सही नहीं हो पाएंगी। अब तू मर जाए तो ही ठीक है। अब तुम अपनी बॉडी लाइब्रेरी में दान कर दो, अब कुछ नहीं होने वाला।) लेकिन मेरी फैमिली के किसी भी मेंबर ने ये तक नहीं जताया कि वो मेरी केयर नहीं कर पाएगा।

कैसे बताएं तेरी जुदाई में हमने क्या क्या दर्द सहे थे।
उन दिनों मेरे कुछ अपने भी, मेरे मरने का इंतज़ार कर रहे थे।।

फिर 17 फरवरी को पूछा – "20 फरवरी को आ सकते हो? एटलीस्ट जबाव जरूरी देना।"

कोई रिप्लाई नहीं आया, कॉल भी नहीं उठाई।

मैंने दो दिन बाद फिर मैसेज किया,

"आ सकते हो बिना कोई क्वेश्चन किए?"

"कोई काम?"

"काम मिलना है तुमसे।"

"क्या नाटक है, मेरी तबियत ख़राब है, छः दिन हो गए खाना भी नहीं खा पा रहा हूं।"

"क्या हुआ है?"

"दिन में बात करुंगा चार्ज नहीं है फोन।"

"बस सिंपल सा जबाव दे दो यस और नो।"

"काम क्या है?"

"यस और नो! कितनी बार "बता चुकी हूं मिलना है"। कोई क्वेश्चन नहीं रीज़न हजारों हैं मगर क्या तुम बिना रीजन के आ सकते हो?"

"कोई रीज़न होता है तो ही अपने घर आता हूं।"

"नहीं आना साफ़ नहीं बोल सकते। पहले इसी घर आने के लिए कुछ और बोला था। सब मन मर्जियों की बात होती है तुम्हारा मन नहीं है कोई बात नहीं। एक ही बात एक ही इंसान को बार बार नहीं समझानी चाहिए। वो समझता तो दूसरी बार में ही समझ जाता है।"

"ठीक है नहीं आ सकता।"

"ओके।"

"ये मेरी तरफ़ से की गई आख़िरी कोशिश थी। अगर तुम्हें नहीं आना तो ,ना तो ना।"

"फिर?"

"कुछ नहीं, क्या है अब। तुम्हें नहीं आना तो मत आओ बात ख़त्म।"

"लेकिन क्यों कोई काम हो तो बताओ। बताने में दिक्कत है तुमको? मुझे छुट्टी मिलेगी तो आऊंगा।"

"काम बहुत बार बता दिया।"

"क्या?"

"पहले ही बोल चुकी हूं 'नो क्वेश्चन' मुझ में बहस करने की ताक़त नहीं है अब।"

"ओके, सरकारी जॉब नहीं है मेरी घर भेज देगा परमानेंट ज्यादा छुट्टी करूंगा तो।"

"तुम्हारी जॉब, छुट्टी, फैमिली सब प्रॉब्लम को समझा मैंने। वैसे तुम हर वीकेंड पर घर आते हो।"

"फिर?"

"गर तुम आ सको तो आ जाना ये तुम्हारे मन की बात है।"

"कोई काम होगा तो आऊंगा घर, पापा की तबियत ख़राब है डॉक्टर के पास जाना होगा तब आऊंगा घर।"

"घर तो आते जाते रहोगे ही।"

"फिर आऊंगा तो कहां रहूंगा रोड पर घर नहीं जाऊंगा तो।"

"यार प्लीज मत आना बहाने, वजह बहुत हैं ना आने के लिए।"

"अभी मैं नहीं आ सकता बस।"

"मर्जी है आपकी। हम अब ना आएंगे ना बुलाएंगे मिलने तुम को कभी। और जताओ मत जानती हूं मैं क्या हूं तुम्हारे लिए।"

"जो तुम को ठीक लगे बस, तुम अपना देखो।"

"सब देख लिया और अब कुछ भी बाकी नहीं है सब खत्म है यहीं पे। वेल, सॉरी आपका टाइम वेस्ट किया। वैसे मुझे सिर्फ इतना ही पूछना था। आ सकते हो या नहीं, कोई बात नहीं बस एक बार मिलना चाहती थी।"

"क्यों ?"

"पता नहीं क्यों! अब तुम्हें ब्लॉक करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

22 फरवरी को चली गई मैं बैंगलोर, मैंने उसे मैसेज कॉल नहीं किए तो उसके आए भी नहीं मुझे उसकी हर रोज याद आती थी। मैं व्हाट्सएप ओपन करके देखती हर एक घंटे में मोबाइल की डिस्प्ले देखती, उसकी कॉल तो नहीं आ रही। मगर वो भूल चुका था मुझे। "मैं नहीं आ सकता" मेरे कानों में गूंजे ये शब्द महीनों, "मैं नहीं आ सकता, मैं नहीं आ सकता" सोच सोच कर रोई भी कई बार बिस्तर में, बैंगलोर का तकिया भी गीला हुआ उसकी यादों के आसुंओ से।

वहां एक लड़का मेरी कजिन शालिनी की फ्रेंड ज्योति के जेठ का लड़का था। हम उनके ही फ्लैट में रह रहे थे। उसे मैंने कभी अपनी तरफ़ देखते नहीं देखा था। वो मेरी सीक्रेटली केयर करता था। अपनी चचेरी बहन से पुछवाता कहीं घूमने जाना है? यहां चलो वहां चलो इनसे पूछो कहां चलना है। इनको घूमना पसंद है। एक दिन उसने मेरे फोन में "के के" का गाना बजता सुन लिया तो पूरे दिन "के के" के गाने बजाता रहा "आई एम ह्यूज फैन ऑफ के के", वो प्रयास मेरे लिए हमेशा स्पेशल रहेगा, मेरे लिए किसी ने पहली बार अपनी प्ले लिस्ट चेंज की थी।

एक दिन मैंने लॉबी में भी झाड़ू लगा दी। उसकी मम्मी ने मुझे सुना दिया। वो शाम को ड्यूटी से आया। उसको पता चला तो वो अपनी मम्मी पर भड़क गया सबके सामने। उसके पापा अंदर से आए सीधा बोले –

"क्या लगती है वो लड़की तेरी' जो उसके लिए अपनी मां को ऐसे बोल रहा है तू?"

"पापा वो मेहमान है हमारी, और मेहमान को ऐसे थोड़ी ना बोलना चाहिए।"

मुझे बहुत बुरा फील हुआ उस दिन। मैं तो उस लड़के की तरफ़ देखती तक नहीं थी। ऐसा लग रहा था जैसे एक संगीन आरोप मुझ पर थोपा जा रहा हो। उस लड़के को ज्योति के हसबैंड से पता चल गया था कि मेरे विशु ने किसी और से शादी कर ली है। अपनी बहन को बता रहा था मुझे सुना कर "कोई किसी को आसानी से मिल जाता है तो लोग उसकी कद्र नहीं करते। कितनी खामोश हो गई है वो। बोलती ही नहीं हंसती भी नहीं है। ऐसे नहीं रहना चाहिए इन्हें।"

फिर एक दिन में बुक पढ़ रही थी तो उसकी मम्मी ने लाइट कट कर दी मेरे कमरे की। ज्योति के हसबैंड ने देख लिया और उसी दिन छोड़ आए हम उनका फ्लैट। वो उस वक्त ड्यूटी गया था। शाम को उसकी कॉल आई ज्योति के फोन पर। उसने मुझसे बात करने को बोला। मुझे भी लगा थैंक यू बोल दूं उसने इतना कुछ किया मेरे लिए।

"थैंक यू तुमने इतना कुछ किया मेरे लिए और अपने मम्मी पापा से किसी और के लिए कुछ मत बोलना अब कभी।"

"अरे वो जाने दो, तुम सब बिना बताए चले गए बहुत बुरा लगा मुझे। तुम्हें अपने घर की बहु बनाना चाहता था मैं।"

"आपकी मम्मी मुझे पसंद नहीं करती और आप उनकी इकलौती संतान हो तो उनका ख़्याल रखो।"

"अरे मम्मी तो ऐसे ही करती हैं। दीदी एस्पायर हुई है तब से मम्मी का माइंड थोड़ा ऐसा ही रहता है। उनकी बातों को माइंड मत लेना। वो तो मुझे भी उल्टा सीधा बोलती रहती है, देखा तो होगा ही तुमने।"

मुझे उस दिन फिर विशाल बहुत बुरी तरह से याद आ गया। मैंने उसके पास दो कॉल की 'ब्लॉक' मैंने गुस्से में उसका नंबर डिलीट कर दिया। और सोचा अब कभी कॉल नहीं करूंगी उसे। एक तो मिलने नहीं आया था ऊपर से नंबर भी ब्लॉक कर रखा है। फिर दूसरे दिन उसकी कॉल आई मैंने नंबर बिना देखे ही उठा ली। उसकी आवाज़ सुनके देखा नंबर।

"बोलो।" (बड़ी अकड़ में बोला।)

"ब्लॉक कर रखा है ना नंबर?"

"हां।"

"क्यों?"

"काम बताओ।"

"यार मैं कितना भी सही से बात करने को सोच लूं तुम्हारा एटीट्यूड मुझे भी रूड कर ही देता है।

"घर आया हूं।”

"अब नहीं मिल सकते हम।"

"क्यों?"

"तुमने मेरे शहर में होते हुए भी साफ़ बोल दिया "नहीं आ सकता" हज़ारों सवाल करने के बाद भी। मैंने बोला था फिर भी कि बिना कोई सवाल किए आ सकते हो कि नहीं। मुझे पता था, तुम्हें मना तो करना ही है बट उससे पहले सवाल बहुत जज़्बाती जज़्बाती करोगे। इसलिए तो बोला था बिना कोई सवाल किए लेकिन तुमने फिर भी सवाल किए और इंकार भी। ख़ैर कोई नहीं बस जब भी मिलने का मन करता है ये ही याद आ जाता है "मैं नहीं आ सकता" "मैं नहीं आ सकता" फिर तुम्हें घर आ कर क्यों याद आ रही है मिलने की? अब नहीं मिल सकते हम।"

"लेकिन क्यों?"

"तुम इतनी दूर मुझसे मिलने तो कभी आना ही नहीं चाहोगे।"

"हो कहां पर।'

"मुझसे मिलने आना है?"

"नहीं आना।"

"तो जान कर क्या करोगे तुम?"

"अब मैं जहां भी जैसे भी हूं तुम्हें क्या फ़र्क पड़ता है।"

"कहां हो?"

"जहन्नुम में।"

"मुझे भी बुला लो जहन्नुम में।"

"नर्क को बोलते हैं जहन्नुम, (भाड़ को।)"

"ओह अच्छा। ठीक है तुम रहो भाड़ में। मुझे नहीं आना।"

"जाओ तुम कहीं भी रहूं मैं।"

शालिनी नागपुर गई थी दस दिन के लिए मैं ज्योति के साथ थी। एक दिन ज्योति की उसके हसबैंड से लड़ाई हो गई। बहुत बड़ी वाली। उसने बैग उठाया। चल रही हो तो चलो व्याख्या, मैं अब यहां नहीं रह सकती।

मैंने भी सामान पैक कर लिया वो अपने मायके भी नहीं जाना चाह रही थी। घर वालों ने ज़बरदस्ती शादी की थी इसलिए। उसने नई सिम ली। उसके हसबैंड ने आते आते पैसे के लिए बोला उसने मेरा क्यू आर कोड दे दिया। उनके पास आते आते मेरा नंबर चला गया। वो मेरी सिम फेंकने को बोल रही थी।

मैं सिम निकाल के रख सकती हूं कुछ दिन के लिए ये नंबर बंद नहीं होगा मेरा।

हम ट्रेन में ही प्लान बना चुके थे सेक्टर 18 रुकेंगे। ज्योति ने बताया उसका फ्रेंड है वहां वो इंतज़ाम कर देगा।

"कहीं भी चलो बस सेक्टर 16 नहीं जाना।"

"वहां मैं भी जाना नहीं चाहती। वहां तो पहुंच सकते हैं घर वाले।"

हम सेक्टर 18 ही गए बस स्टॉप से। उसका फ्रेंड रूम दिलवा के गया। उसे मैं भी जानती थी।

आज उसने फिर बात की रात दो बजे तक। एक तो कल ही ट्रेन में सो नहीं पाए थे। ऊपर से फरवरी की ठंड में कुछ ओढ़ने को नहीं था। मुझे नींद नहीं आई उसके फुसफुसाने से।

ठंड थी हल्की हल्की अब भी बिना कुछ ओढ़े नींद नहीं आती इधर। हमारे पास पैसे भी कम ही थे। रूम का किराया भी हॉफ एडवांस लिया था। और कुछ सामान लेने के लिए पैसे बाकी नहीं थे।

मैंने ज्योति को बोला "मेरा बोरिया बिस्तर सेक्टर 16 में है मेरी फ्रेंड नेहा के पास। ले आते हैं वहीं से बर्तन भी ले आएंगे। मगर मैं वहां जाना नहीं चाहती।"

"क्यों?"

"मन नहीं है मेरा और मैं जो भूलना चाहती हूं वो सब और याद करना नहीं चाहती। वहां जाऊंगी तो याद आएगी उसे देखने का मन करेगा।"

ज्योति बोली, "सामान लेंगे और सीधा आएंगे।"

दोनों आए।

नेहा ने यूं ही बोल दिया, "यहीं रहो यार बहुत दिनों बाद मिली हो।"

"मैं सिर्फ़ एक रात रुकना चाह रही थी लेकिन ज्योति रुकने को तैयार नहीं थी।

बोल रही थी, मैं बिना बात किए नहीं रह पाऊंगी। फिर मुझे उसकी बतियाने वाली बात याद आ गई। वो पूरी रात बात करती है मुझे नींद नहीं आती। उसके साथ और भी कई प्रॉब्लम थी।

मेरा नंबर ट्रैक करके कोई इस तक पहुंच सकता है!

मैं अपना नंबर बंद रखूंगी तो मेरी फैमिली को टेंशन होगी। मगर यहां रहना नहीं चाहती थी।

मैं बहुत कन्फ्यूजन में रही, बहुत स्ट्रेस था। मैंने उस दिन तो उसको बोल दिया तुम जाओ। फिर दूसरे दिन भी टेंशन रही, मैं यहीं रहूं या ज्योति के पास ही जाऊं। यहाँ आके बहुत कुछ याद आ रहा था।

नेहा बार बार बोल रही थी "यहीं रहो जॉब करना उधर जाना ही मत।"

फिर मैं गई अपना बैग लेके आई जाके। पता नहीं कितने ख़्याल आ जा रहे थे दिमाग में पास्ट और प्रेजेंट के मिक्स हो कर।

"मेरी क़िस्मत देखो फिर खींच लाई मुझको वहीं।
जहां आके मैं रहा कहीं का नहीं।।"

मैं 15 को आई मार्केट भी नहीं गई। बिल्कुल भी बाहर नहीं निकली रूम से दो चार दिन तक। एक दिन गई मास्क लगाके शिवानी मिली, बोली "पता है तूने क्यों मास्क लगाया है, कहीं विशाल पहचान ना ले।" मैं बस मुस्कुराई।

मैं चाह रही थी उसे पता ना चले मैं आ गई हूं। मगर उसे देखने का मन करने लगा था। बस एक बार दिख जाए।

दिल आज भी तेरा दीदार चाहता है।
मुझे देखते ही तेरा मुस्कुराना याद आता है।।

मुझे देखे मुस्कुराए और चला जाए। सोची बोलेगा कुछ तो समझा दूंगी उसे "मुझसे बात मत करना, दिख भी जाऊं तो इग्नोर मार के चले जाना। मजबूरी में आना पड़ा है मुझे यहां फिर से। प्लीज़ और ज्यादा कश्मकश में मत डालना मुझे। दूर रहना मुझसे। तुम बोलोगे तो मैं खुद को रोक नहीं पाऊंगी।

मुझे जॉब के लिए बहुत प्रॉब्लम झेलनी पड़ रही थी। उसकी 23 को वीडियो कॉल थी एक मैसेज भी था मैंने सोचा था बात नहीं करूंगी उस से। लेकिन उस दिन 24 को मुझे जॉब छोड़ कर आना पड़ा। लगातार मिलती प्रॉब्लम से हताश हो चुकी थी मैं। वापस रूम पर आ कर अकेली थी। मन बहुत उदास हो रहा था उसकी ही याद आ रही थी। जैसे उस से बात कर के सारी प्रॉब्लम ख़त्म हो जाएगी। मैंने उसे मैसेज रिप्लाई कर दिया उसने दो मिनट में ही वीडियो कॉल कर दी। मैंने काट कर ऑडियो की। उसने काट कर वीडियो की। मैंने ऑडियो फिर उसने ही ऑडियो पर बात की एक घंटे तक बात करते करते फिर उसने वीडियो कॉल की। मैं कैमरा क्लोज करके बात कर रही थी। कहीं वो रूम पहचान ना ले। उसने पहचाना नहीं बस बार बार यही पूछता रहा,

"कहां हो?"

"भाड़ में हूं।"

"सच सच बताओ।"

"बताऊं?"

"हां।"

"गेस करो।"

"बताओ ना कहां हो?"

"एक सरप्राइज़ दूं?"

"हां दो।"

"तुम्हारे शहर में हूं।"

"क्या?"

"हां।"

"कहां हो?"

"सैक्टर 16 गोल चक्कर!"

"हां। दिखाओ।"

"ये देखो"

फिर मैने उसे रूम दिखाया बहुत खुश हुआ पूछा,

"कब आई।"

"15 दिन हो गए।"

एक दम से मायूस हो गया। आंखे नम करके बोला, "तुमने मुझे बताने के लायक भी नहीं समझा ना।"

"तुम अच्छे से बात ही नहीं करते।"

"तुम नहीं बोलती हो।"

"हेलो हेलो करता रहता हूं।"

"मैं कॉल करती हूं तो तुम अच्छे से कभी बात ही नहीं करते मैं कितना भी सोच लूं मगर तुम्हारा लहज़ा मुझे हर्ट कर ही देता है।"

"अभी तो नहीं हो ना?"

"नहीं हूं क्योंकि तुम अच्छे से बात कर रहे हो और वो इसलिए क्योंकि कॉल तुमने की है।"

"ज़रूरी है मैं गुस्से में बात करूं तो तुम भी करो?"

"सामने वाले का देख के वो अपने आप ही अन्दर से आ जाता है। तुमको किसी ने बताया है ना कि मैं आ गई हूं!"

"नहीं तो।"

"फिर कैसे कॉल कर ली?"

"याद आ गई थी। कई दिन से मन नहीं लग रहा था अजीब सा फील हो रहा था। तुम्हारी याद आ रही थी बार बार। कई बार तो सोच कर कॉल नहीं की। कल पूरे दिन उसी जूस वाली दुकान पर बैठा रहा। शाम को मिलना मार्केट में।"

"नहीं।"

"मुझे कुछ नहीं सुनना इतने दिन बाद देखूंगा।"

"कल मिल लेंगे होली है दिन में।"

"मुझ में कहां है इतना सब्र, तुम रह ली इतने दिन बिना बताए।"

छः बजे उसके मैसेज देखे एक घंटे से आ रहे थे, "हेलो कहां आ रही हो, मैं खड़ा हूं मार्केट में, फोन ऑफ क्यों की है? मैसेज कर सकती हो नहीं आना तो।"

यहां रूम में जिओ के नेटवर्क नहीं आते वोडा वाली सिम में रिचार्ज था मगर वो मेरे दोनों नंबर डिलीट कर चुका था।

6:10 पर मैंने कॉल की, उठाई बोला,

"कितनी देर से वेट कर रहा हूं अब तो बस में बैठ गया। फोन ऑफ आ रहा है।"

स्क्रीनशॉट दिया, "देखो 4:20 से कितनी कॉल की हैं" 20 कॉल थी।

"तुम भूल गए कि मैं किस नंबर से कॉल करती थी यहां।"

"मेरे पास वो नंबर नहीं है ये भी किसी से लिया था परसों ही।"

"किस से?"

"मेरे पास अब आई है कॉल, मैंने रिसीव की।"

"अब सुबह मिलना।"

"ओके।"

"सुबह पांच बजे कॉल करुंगा मैं उठा लेना वॉट्सएप करुंगा।"

उसने किसी और के नम्बर से की कॉल।

इतना पागल हो रहा था मिलने को, जैसे कि वो मुझसे कब से मिलना चाह रहा हो। और आज मैं उसके पास हूं।

मैं भी उसे देखना कब से चाह रही थी कि

"उनका दीदार कुछ इस तरह हो जाए
मैं उन्हें जी भर के देख लूं वो मुझे देख ना पाए। "

"इतनी सुबह नहीं।"

"होली जलेगी वो नहीं देखोगी?"

"वहीं चलेंगे।"

"ओके।"

3 दिसंबर के बाद आज हम 25 मार्च को मिले।

सुबह को उसकी कॉल आई मैं तो फोन उठा के देख चुकी थी कई बार कॉल तो नहीं आई! अभी तो दो बजे हैं, अभी तो चार बजे हैं और आते ही झट से उठाई।

चुपचाप बाहर निकल गई वो गली मैं खड़ा था। देख के ना मुस्कुराया ना गले लगाया सीधा बोला चलो।

होलिका दहन देखा फिर वो अपने रूम ले गया। चाय पानी कुछ नहीं पूछा बोला "खाना खाओ तो बना लेना।"

"अभी बना दूं?"

"अभी मत बनाओ अभी तो मैं सोऊंगा तुम खाओ तो बना लो, इतना दूर क्यों बैठी हो इतने दिन बाद मिले हैं फिर भी, आओ मेरे सीने पर सर रख के सो जाओ।"

"तुम्हारे सीने पर सर रख के तो मैं सदियों गुजार दूं।"

सोया नहीं अपनी मम्मी से बातें करता रहा फोन पे। आधे घंटे बाद नेहा की कॉल आ गई ‘‘कहां हो व्याख्या? यहां होली खेल रहे हैं सब।’’

मैं आ गई अपने रूम। 11 बजे उसने फिर मैसेज किया।

"अब क्या करूं मेरा मन भी नहीं लग रहा, अकेला हो गया हूं, नींद भी नहीं आ रही।"

"होली नहीं खेली तुमने मुझसे मैं होली खेलने आई थी।

"क्या खेलूं यार अब खेल लो।"

"अब मेरे अपार्टमेंट वाले खेल रहे हैं सबके साथ हूं।"

"अभी इधर ऐसा कुछ नहीं है। मैं सोने जा रहा हूं तुम करो एंजॉय, गुड नाइट।"

सुबह को उसने फिर किसी लड़की से बात करने की बात बता दी "साली को पटा रहा हूं"। ये देखो "फोटो दिखाते हुए बोला" इसको।

मेरे गुस्सा करने पर बोला, "यार तुम जब इस बात पर रूठती हो मुझे बहुत अच्छा लगता है, एक्चुली तुम्हारा रूठना अच्छा लगता है। बात ये कि तुम सिर्फ़ इसी बात पर रूठती हो तो मैं ऐसी बात ना करूं तो और क्या करूं! मन करता है कभी कभी मनाने का।"

"हां मन करता है! मैं रूठ गई ना तो कभी मना नहीं पाओगे तुम।"

"कोई नहीं रो लूंगा फिर।"

"तुम! रोएंगे मेरे लिए तुम!"

"मुझे पता है तुम मेरा कभी यकीन नहीं करोगी।"

बैंगलोर से पुलिस की कॉल आई मैंने सब बता दिया जो प्लान मैंने और ज्योति ने बनाया। मुझे कोई डर नहीं लगा। मुझे पता था पुलिस ज्यादा कुछ नहीं पूछेगी जो पूछेगी सब बताऊंगी मैंने कोई जुर्म तो किया नहीं जो डर होता। मगर हां टेंशन तो थी इस बात की, कहीं अलग से सवाल ना पूछले पुलिस, झूठे जबाव मैं तुरंत नहीं दे पाऊंगी।

मेरे पास पैसे नहीं थे कई लोगों से उधार ले रखे थे। रिचार्ज भी बहन से कराया, खाना पीना नेहा का खाया उन दिनों। तीन दिन डेली बेसिस पर गई एक कंपनी में। इतनी सारी प्रॉब्लम्स एक साथ पहली बार आई लाइफ में तो बहुत रोना आता था मुझे। उसे कुछ नहीं बताती थी मैं। मगर चाहती थी कि वो मेरी प्रॉब्लम को समझे हेल्प करे मेरी। उसने तो कभी बताने से भी नहीं समझा। लेकिन आज सोचती हूं तो खुद पर गर्व होता है मैंने किसी के आगे रोए बिना वो सब पार कर लिया।

अध्याय 9

मेला लगा था गोल चक्कर के नीचे नेहा और मैं बोलते थे देखने चलेंगे तीन चार दिन तक कहते रहे।

मैंने उस से कहा "मेला नहीं दिखाओगे?"

"पैसे नहीं है अभी।"

"पैसे तो मेरे पास हैं, कुछ नहीं बस झूलना ही तो है।"

"मैं नहीं झूलता।"

"मेरे साथ झूलना प्लीज़।"

"नहीं झूलता डर लगता है मुझे।"

"चलना प्लीज़ कल चलेंगे।"

दूसरे दिन वो कुछ नहीं बोला मैंने मैसेज किया "झूला नहीं झुलाना!"

"टाइम नहीं है इतना फिर किसी दिन, ऑफ वाले दिन। और झूला अभी चला नहीं है।"

"कोई नहीं ज़रूरी नहीं है तुम्हारे साथ ही जाऊं, मन किया उसी दिन अकेली चली जाऊंगी मुंह उठाकर।"

"ठीक से बात करो यार, ऐसे बोल रही जैसे मैं पूरे दिन मेले में ही रहता हूं, गुस्सा मत दिलाओ, मैं जानता हूँ तुम कुछ भी कर सकती हो।"

"गुस्सा नहीं दिला रही बता रही हूं।"

"ये तरीका ठीक है मुंह उठाकर चली जाऊंगी! तो जाओ जाने वाले को कौन रोक सकता है।"

"मुंह उठाने का मतलब अचानक से बिना कोई प्लानिंग के।"

"ओके थैंक्स।"

अगले दिन उसका मैसेज था गुड मॉर्निंग, मैंने बताया "इंटरव्यू के लिए आई हूं।"

"खाया कुछ?"

"अभी नहीं। तुमने?"

"बनाऊंगा सो रहा था।"

"रोटी बनाना और अभी बना लो।"

"आ रही हो क्या?"

"नहीं।"

वहां काम पसंद नहीं आया बिना इंटरव्यू दिए आ गई। ऑटो भी नहीं मिल रहा था। मन में आया उसे बाइक लेके आने को बोल दूं।

(नहीं उसने खुद से मेरे किसी काम को करने को नहीं बोला है तो मुझे भी किसी काम के लिए उससे हेल्प नहीं लेनी) नहीं बोला।

किसी और की बाइक पर बैठ कर आई। कंपनी के अंदर ही एक आदमी बोल रहा था "सैक्टर 16 जाओगी तो चलो मैं भी वहीं जा रहा हूं।"

"नहीं, चली जाऊंगी मैं।"

"इधर ऑटो नहीं मिलते इतने टाइम इसलिए बोल रहा हूं, बाकी तुम्हारी मर्जी।"

"नहीं जाना।"

रोड़ पर आ कर वेट किया एक घंटे। ऑटो वाले आ तो रहे थे रोक नहीं रहे थे। एक बाइक वाला देखता जा रहा था। वहां अकेले खड़े होने में भी अजीब लग रहा था। थोड़ा आउट एरिया था। वो फिर लौट के आया।

"कहां जाना है मैडम? सैक्टर 16 जाना हो तो चलो मैं उधर ही जा रहा हूं, आप परेशान सी लगी इसलिए लौट के आया हूं।"

मैं कंफ्यूज थी हां कहूं या ना मगर यहां खड़ा रहने से अच्छा है चलते हैं देखने से सही लग रहा था बंदा फिर 10, 15 मिनट में तो पहुंच ही जाएंगे।

"कहां से आ रही हो? यहीं रहती हो क्या?"

वो हेलमेट हटा हटा के पूछ रहा था।

"मैं कई बार लिफ्ट दे देता हूं लड़कियों को डरने वाली बात नहीं है। डर तो हमारे लिए भी है एक बार फंसा दिया था एक लड़की ने इल्ज़ाम लगा दिया कि ये छेड़ रहा था।"

उसकी ये बात सुन कर मन में शक होने लगा डर लगने लगा कि कुछ तो बोला या किया होगा कोई लड़की ऐसे कैसे बोल सकती है हेल्प करने वाले के लिए।

खैर मैं अपने स्टॉप पर पहुंची उसने बाइक रोकी उसको थैंक यू बोला और जल्दी चल दी वहां से।

मन की उदासी और बढ़ गई। ये तीसरी जगह थी जहां से लौट रही थी मैं। मन इतना उदास हुआ, लग रहा था किसी के कंधे पर सर रख कर जी भर कर रोऊं। आंखों में आंसू थे। आते में मन कर रहा था उसके सीने से लग के रोऊं सारा ग़म बाहर निकाल दूं। मगर उसके पास आ के अपना दर्द बयां ही नहीं कर पाती। उसको कॉल की मैं आ रही हूं। वो खाना बना रहा था मेरे पहुंचते ही और आटा गूंथने लगा।

"किसी ने देखा तो नहीं आते हुए आस पास वाले रूम वालों ने?" उसने मुझसे पूछा।

"नहीं।"

"आज पहली बार तुम्हारे साथ इतना खाना खाया है।"

"चुप ऐसे मत बोलो खाओ बस, खाया करो खाना यार तुम कैसी हो गई हो, खाती नहीं हो।"

"उसके रूम पर शादी के बाद दूसरी बार गई थी।"

मैंने शाम को मैसेज किए "तुमसे मिल कर बहुत खुश हूं एक सुकून मिलता है हर बार। अब पहले की तरह हर्ट नहीं होता कि तुम मेरे नहीं हो। जितना टाइम साथ मिल

रहा है मैं ख़ुशी से जीना चाहती हूं। बस एक डर रहता है कि मेरी वजह से तुम्हारी लाइफ में कोई प्रॉब्लम ना आ जाए।"

"मुझे भी तुम्हारे साथ सुकून मिलता है, मैं हैप्पी हूं, हां कभी कभी ख़्याल आता है कोई प्रॉब्लम हो गई तो कैसे क्या होगा!"

"सॉरी यार मुझे नहीं आना चाहिए था।"

"नहीं यार ये बात नहीं है। तुम आई हो तो क्या हुआ।"

"मैं कोशिश करूंगी जाने की जल्द से जल्द।"

"मैं तो चाहता हूं तुम हमेशा खुश रहो। जाने की बात मत करो अच्छे से रहो। कोई दिक्कत नहीं है। तुम मेरी बातों का या हरकत का बुरा ना मानो प्लीज।"

"तुम्हारी बातों का बुरा नहीं मान रही हूं यार।"

"फिर तुमको मेरे से कोई प्रॉब्लम है?"

"नहीं है।"

"दूर रहूं तुमसे, टच ना करूं तुम्हें?"

"क्लियर बता दिया करो यार मुझे तो कोई प्रॉब्लम नहीं है, मस्त रहो एक दम फ्री होके।"

"तुम्हारी वाइफ को पता चला गया तो? बस इस बात का डर है।"

"कोई दिक्कत नहीं है। मैं सब संभाल लूंगा। ज्यादा टेंशन ना लो तुम।"

"मैं तुम्हे कोई प्रॉब्लम में देखना नहीं चाहती।"

"कोई प्रॉब्लम नहीं है, होगा तो वो भी देखा जाएगा।"

"हां तुमसे सीख लिया है मैंने हर मुश्किल में मुस्कुराना।"

"मेरी बातों को मेरे ऊपर ही अप्लाई कर रही हो बता देता हूं फिर... ।"

"सच में मुझे तुम्हारी ये अदा बहुत मोटिवेट करती है।"

"ये मोटिवेशन नहीं है लाइफ में यूं ही रहना चाहिए।"

"हां आई एम हैप्पी नाउ।"

"हां सीख लो मस्त रहो सब अपने आप ठीक हो जाएगा, प्रोमिस।"

"गुड नाइट।"

"झूठ क्यों बोल रहे थे तुम इतने दिन से, तुम हमेशा ही ऐसा करते हो। गलती मेरी थी जो मना रही थी तुम्हें। जानते हुए भी कि तुम मेरी फीलिंग्स कभी नहीं समझते।"

मैंने फिर गुस्से में ब्लॉक कर दिया।

दो घंटे बाद फिर अनब्लॉक कर दिया।

"तुम चाह रही हो किसी की जान चली जाए, कुछ हो गया तो मुझे डर लगता है बहुत। बोला तो समझ नहीं आता क्या? तुम चाहे जो बोलो मेरे को बात नहीं करनी वो बात भी अलग है ओके। तुम जैसा चाहो कर सकती हो। मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम खुश रहो।"

"कुछ भी! क्या होगा झूलने से।"

"फालतू की ज़िद्द कर रही हो।"

"ज़िद्द तो तुम कर रहे हो। मैं तो रिक्वेस्ट कर रही थी।"

"मैं आज तक नहीं झूला हूं बचपन से कभी, रस्सी वाला भी नहीं झूला।"

"सॉरी।"

"समझ भी नहीं रही सॉरी का क्या मतलब है। मैं तुमको हर्ट

नहीं कर रहा तुम को लग रहा है।"

"नहीं करनी चाहिए थी रिक्वेस्ट मुझे। तुमने क्यों बोला था फिर 'ऑफ वाले दिन चलेंगे'?"

"समझ नहीं रही हो तुम यार, मैं कुछ नहीं बोलना चाहता तुमसे ज्यादा फालतू की बात करोगी तो मैं कुछ भी बोल दूंगा गुस्से में। वो मुझे अच्छा नहीं लगेगा फिर।"

"डर मुझे भी लगता था अब नहीं लगता सोच रही थी तुम्हारा भी ख़त्म हो जाएगा।"

"मैं चाहता हूं कि तुम हैप्पी रहो जब तक भी रहो, बाकी तुम्हारी मर्जी। जैसा तुमको ठीक लगे, बात करके, बात ना करके, दूर रह के।"

"सब बोल दो मन में मत रखो कुछ।"

"तुम जैसे रहना चाहो रहो। लड़की का मुझे किसी कि ज़रूरत नहीं है ओके। मैं बोलता हूं तुमको सुनाने के लिए कि तुम मुझको क्या बोलोगी। बाकी मेरी कोई ग़लत सोच नहीं है।"

"इतना लंबा चौड़ा क्यों सुना रहे हो एक छोटी सी बात के लिए। नहीं झूलना मेरे साथ मत झूलो, नो प्रॉब्लम।

लड़की की ज़रूरत नहीं मतलब?"

"मार्केट में बोली थी ना! जाओ तुम फिर हर्ट करोगे किसी लड़की के पीछे जाओगे। मैं बोला मुझे कोई ज़रूरत नहीं है और किसी लड़की की। अब के लिए इतना बहुत है। मेरा दिमाग ख़राब हो गया अब, प्लीज़ कुछ मत बोलना अब, मैसेज भी नहीं करना। मुझे गुस्सा आ रहा है मेरा पांच कॉल कट की थी।"

"गुस्सा जता रही थी शायद तुम समझ सको।"

"तुम क्यों दिमाग गर्म कर रहे हो।"

"प्लीज मैसेज ना करो, पढ़ लो अब रिप्लाई नहीं करना।"

शाम को मैं नेहा और मिलन गए मेले में। मैं और नेहा झूला झुलके आए।

नेहा भी तो मेरे कहने से झूली थी। वो नहीं झूल सकता था।

मैंने वीडियो बना स्टेट्स पर लगाई जान कर। स्टेट्स देख कर बोला।

"झूल लिया झूला? किस के साथ गई थी?"

"तुम्हें क्या मतलब किसी के साथ जाऊं। तुम नहीं गए ना! बस।"

"यार मुझे डर लगता है।"

"चलो झूलने से लगता है, वहां जाने से भी......? सॉरी मुझे कुछ नहीं बोलना।"

तीसरे दिन मैसेज किया उसने

"गुड मॉर्निंग।"

"मॉर्निंग, कब तक जागोगे?"

"क्या?"

"दोपहर में कितने टाइम जागते हो?"

"12 बजे, आ रही हो? कहीं जा रही हो?"

"नहीं।"

"मेरे रूम?"

"यार क्या बताऊं।"

"दिमाग ख़राब नहीं, सुबह सुबह समझी।"

"उस दिन आई थी इंटरव्यू देके उस दिन।"

"तो क्या हुआ?"

"बहुत अजीब लगा मुझे इधर उधर लोग थे और मुझे उनकी नजरों से बचके जाना था, जैसे बहुत बड़ा जुर्म कर रही हूं मैं।"

"मेरे रूम पर आ रही हो या नहीं?, 10, 11 बजे तक आ जाना, ठीक है ना, कॉल कर लेना, गुड नाइट।"

"प्रोमिस करो पहले किसी लड़की की बात नहीं करोगे। मैं खाना देने आती हूं सिर्फ़ तुमसे लड़ने नहीं।"

"करूंगा, करूंगा करूंगा। मेरा बहुत मन कर रहा है यार तुम्हारा हाथ के खाने का आ जाओ जल्दी, गुड नाइट।"

"इमोशन भी रखो कुछ मेरे लिए सिर्फ़ ये फीलिंग ही नहीं।" "ठीक है आ जाओ नहीं करूंगा फालतू बात।"

शाम को मैंने बहुत सारे मैसेज सेंड करके डिलीट कर दिए।

"मैसेज क्यों डिलीट किए, जब लिखा था तुमने तो देखने का टाइम तो देना चाहिए था ना!"

"सॉरी यार।"

"किस लिए?"

"नथिंग। आज तुम्हारी बातों ने रुला दिया यार पहले की तरह, जब से मैं आई हूं तुम सिर्फ़ खाना लाने को रूम पर आने को बोलते हो और कुछ नहीं। ऐसा फील होता है जैसे हमारा रिश्ता सिर्फ टाइमपास हो। इसलिए पूछ रही थी कि हमारे बीच क्या रिश्ता है। तुम तो......।"

"क्या बताऊं यार मुझे कुछ नहीं पता।"

"आपकी लाइफ में इंपॉर्टेंट क्या है?"

"कुछ नहीं ऐसे ही जी रहा हूं। मेरी फैमिली के लिए जी रहा हूं।"

"तुमने नॉर्मल फ्रैंड भी नहीं बताया तुम तो रिश्ते से ही मुकर गए।"

"मैं कब मना किया, तुम एक बेस्ट जी एफ हो आई लव यू। ऐसा नहीं है हमारा रिश्ता सिर्फ टाइमपास नहीं है ये तुम ग़लत सोच रही हो। अपना टिफिन ले के नहीं गई।"

आधे घंटे बाद देखा उसके सात मैसेज थे "मैसेज भी नहीं दिख रहे इग्नोर मार रही हो ना!"

"बोलो।"

"कुछ नहीं।"

"तुमने अपना फिर भी नहीं बताया तुम क्या हो मेरे।"

कोई रिप्लाई नहीं किया।

"तुम्हें कोई प्यार व्यार नहीं है मुझसे तो प्लीज दिखावा भी ना करो। अपनी लाइफ देखो, अपनी वाइफ देखो उनको खुश रखो बस। मैं पहले जैसी हालत नहीं चाहती अपनी। कल से मूड ख़राब है बहुत ज्यादा। सो प्लीज मुझे रहने दो मेरे हाल पर, वैसे भी तुम मुझे खुश नहीं रख पाओगे। तुम्हें पता ही नहीं है मेरी खुशी क्या है। तो अपनी वाइफ को ही खुश रख लो प्लीज़। उनकी ख़ुशी का तो ख़्याल रख लेना यार। अपनी वाइफ की खुशी के लिए अब मुझसे कोई बात मत करना। मुझे गिल्टी फील हो रहा है कोशिश कर रही थी ना मिलूं मगर क्या करें प्यार है नहीं रोक पाती खुद को। मुझे बहुत गिल्टी फील होता है यार जिस दर्द से मैं वाक़िफ हूं किसी के लिए उस दर्द की वजह कैसे बन सकती हूं मैं। मुझे नहीं पता तुम्हारी वाइफ को तुमसे प्यार है कि नहीं इतना तो जानती हूं तकलीफ़ तो ज़रूर होगी। तुम्हें भी मुझसे प्यार होता या अपनी वाइफ के साथ खुश नहीं होते तो बात अलग थी। खुश रहो अपनी वाइफ को भी खुश रखो जो हमें खुश रखते हैं हमें भी उनकी खुशियों का ख्याल रखना चाहिए। जो तुम्हे नहीं आता है। सीख लो।"

"मुझे उस से प्यार नहीं है आज मॉर्निंग से अभी तक बात नहीं किया हूं समझी। मेरी लाइफ में कितनी प्रॉब्लम है मैं जानता हूँ। मेरी बहन हॉस्पिटल में है भाई जेल में बंद है। पापा की तबियत ख़राब है, मैं घर भी नहीं जा सकता हूं छुट्टी नहीं मिल रही करूंगा पैसे कट जाएंगे। बहुत ज़रूरत है पैसे की। मेरे से दूर रहना है रहो।"

(इतना इमोशनल ड्रामा करके दूर जाने की कह रहा है। ताकि फिर ब्लेम कर सके, मुझे प्रॉब्लम में देख के छोड़ दिया ना!।)

मैं समझती हूं तुम्हारी प्रॉबलम मैंने मुश्किलों में मुस्कुराना तुम्हीं से सीखा है, मुझे तुमसे कोई शिकायत नही है यार। बस तुमसे दूर रहना मुश्किल है, मेरा तुमसे रिश्ता कुदरत का जोड़ा हुआ है, देखो फिर मिला दिया उसने मुझे तुमसे। तुम्हें क्या लगता है मैं दूर रहने की कोशिश नहीं करती।"

"मैं कितना प्रॉब्लम मैं हूं मैं ही जानता हूँ अभी खाना खाया हूं, मम्मी का कॉल था रो रही थी। बहन की तबियत ख़राब है।

क्या हुआ है उसे?"

"भाई जेल में है उसकी भी तबियत ख़राब है।

टाइफाइड हुआ है शाम को एडमिट किया था के आर हॉस्पिटल में। दर्द होता है रोती है, समझ नहीं आ रहा है क्या करूं? मैं अच्छा नही हूं मेरे से कोई उम्मीद मत रखना। मैं किसी लाइक नहीं हूं। मैं जैसा हूं बस रहने दो। तुम अपने बारे में सोचो मैं अपनी प्रॉब्लम किसी को बताना नहीं चाहता। ना ही किसी को दिखाता हंसता रहता हूं तुमको पागल लगता हूं।"

"जानती हूं और इसी बात पर गुस्सा आता है मुझे।"

"तुम अपने बारे में सोचो मेरी लाइफ में बहुत प्रॉब्लम हैं। तुम क्या करोगी बताओ मैं बताऊंगा तो?"

"यार प्रॉब्लम तो आती जाती रहती हैं लाइफ में।"

"मैं मेरी प्रॉब्लम देखूंगा या कोई और? सबकी लाइफ में आती हैं तो क्या रोके दिखाऊं सबको!"

"मैं अपनी प्रॉब्लम अपनी मम्मी तक को नहीं बताती यूं तो। यहां भी किसी को नहीं बताया कौनसे कौनसे केस चल रहे हैं मुझ पर। मैं अपनी प्रॉब्लम खुद हैंडल कर लेती हूं तो दूसरों को क्यों टेंशन दूं।"

"मेरे से कोई उम्मीद मत रखना आज के बाद। समझो कि मर गया हूं। कोई पूछे तो यही बता देना एक्सीडेंट में मर गया, था कोई मेरा बी एफ।

तुम किस बात का केस चला बैठी हो, तुम क्या कर दी?"

"ज्यादा बुलवा दूं, था कोई।"

"रखो मैं सोने जा रहा हूं, ड्यूटी जाना है गुड नाइट"

रात का एक बज चुका था।

"तुमको जलाने के लिए नहीं बुलाता मैं समझी, हर टाइम टेंशन होती है घर को लेकर, कोई होता नहीं है मेरे पास, अकेले होता हूं।"

"मैं कुछ नहीं बोल रही उस बारे में।"

"डे ड्यूटी है नींद भी नहीं आएगी अब डे में तो भी सो जाता हूं, कुछ नहीं बोल रही मैसेज देख लो अपने।"

"कौनसे?"

"हमारा रिश्ता सिर्फ टाइमपास लगता है तुम्हें, मैं तुम्हें सिर्फ़ रूम पर आने को ही बोलता हूं।"

"वो एक मिनट के लिए माइंड में आया हुआ ख्याल था।"

"ना तुम्हारी ना तुम्हारे टाइम की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है।"

"कई बार बोल चुके हो कि तुम्हें मेरी कोई ज़रूरत नहीं है।"

"ये लास्ट और फाइनल बोला है, सच में। तुम मेरे से पूछ सकती हो कुछ भी, मैं तुमसे पूछा तुम मेरे से क्या चाहती हो तो मैं गलत हूं।"

"मैंने कब बोला गलत हो यार, मैं तो सिर्फ फीलिंग शेयर की

थी बस।"

"थैंक्स, बट अब कोई ज़रूरत नहीं है मेरे से कुछ शेयर करने की।"

"जानती हूं तुम्हें मेरी कोई ज़रूरत नहीं है।"

"मैं भी जानता था तुम ये ही बोलोगी।"

"तो तुम भी मेरी जरूरत नहीं हो।"

"बात ये है कि तुमको मेरी जरूरत क्यों होगी!"

"तुम मेरी ज़रूरत नहीं मोहब्बत हो।"

"बस करो यार, मैं अपनेआप को नहीं जानता।"

"मतलब?"

"सो जाओ अब, सुबह जल्दी उठना है।"

"बहुत गलत हूं यार, दूर रहो मेरे से, मैं तुम्हारे लिए बहुत गलत हूं।"

"कल डिसकस करना कल अभी सो जाओ डेढ़ बज गया।"

"क्यों सोऊँ?"

"जल्दी उठना है ना।"

"जाओ ना उठ कर कहां जाना है।"

"तुम्हें उठना है ना।"

"तुम्हें क्या मेरे से?"

"तुम लड़ना चाह रहे हो ना?"

"कौन हो तुम जो लड़ूंगा, और क्या समझ सकती हो तुम मेरा।"

"मुझे खुद नहीं पता कौन हूं मैं, मैं गुस्सा समझ सकती हूं तुम्हारा।"

"क्या? लड़ने का क्या मतलब आ गया?"

"लड़ाई तो बिना रीजन वाली ही होती है, गुस्से के पीछे भी कोई ना कोई रीज़न होता है।"

"रीज़न है तुमको चिढ़ाना पास बुलाना, तुमसे बात करना। और बहुत कुछ।"

"प्लीज सो जाओ यार मूड फ्रेश करके।"

"हां जा रहा हूं नहाने।"

"फालतू के बातों बातों में कुछ निकल गया उल्टा सीधा तो मुझे खुद ही बहुत बुरा लगता है बोलने के बाद।"

"बोलो ना तुम बोलती बहुत कम हो।"

"नहीं बोलना यार, लम्बा चौड़ा बोल चुकी पहले ही।"

"जैसे किसी को लेटर भेजा हो।"

"बस करो यार।"

"बहुत बोलना होगा तुमको अभी तो, बोल दो।"

"नहीं बोलना अब कल बोलूंगी।"

"क्यों? कोई ज़रूरत नहीं कल का आज के बाद कोई बात नहीं सोच लिया मैंने।"

"मुझे कुछ नहीं बोलना यार।"

"लाइफ टाइम के लिए जो बोलना है आज सब बोल लो जो कुछ भी है।"

"आज तुम बोलो।"

"तुम्हारे इतने बड़े पैगाम पढ़ के मेरा मन भर गया है यार।"

"मैं ऑलरेडी बहुत टेंशन में हूं प्लीज।"

"मैं फालतू लग रहा हूं तुम्हें मुझे टेंशन नहीं है मैं पागल हूं जागा पड़ा हूं, कुत्ते ने काटा है मुझे।"

"मैं कई प्रॉब्लम में हूं एक साथ।"

"बता सकती हो इतनी सारी प्रॉब्लम कैसे आईं?"

"आ गई ऐसे ही किस्मत से, लाइफ में पहली बार गुजर रही हूं इस हालात से।"

"मेरी वज़ह से?"

"यार फिर तुम, अपने ऊपर...... ।"

"फालतू की बात करने का टाइम है तुम्हारे पास।"

"कौनसी काम की बात नहीं की मैने?"

"कोई मेरी वज़ह से प्रॉब्लम है?"

"नहीं है।"

"हो तो मैं सॉल्व कर सकता हूं बता देना अभी।"

"मुझे भी तो सॉल्व करना सीखना है, वैसे सॉल्व होने जा रहीं हैं धीरे धीरे सब।"

"सीख लो कर लो मैं आज के बाद कभी नहीं बात करना चाहूंगा लाइफ टाइम। बहुत बड़ी गलती कर दी मैंने तुमसे फिर मिलके, हर टाइम वाइफ वाइफ करती रहती हो। क्यों आई थी मेरे पास जानते हुए भी वाइफ वाला है तो?"

"तुम रह सकते हो बिना बात किए यकीन है मुझे।"

"लेकिन अब मैं नहीं करूंगा कोई शिक़ायत तुम से नहीं कोई बात नहीं तुम्हें कोई प्रॉब्लम देना मुझे।"

"मैं आज भी नहीं रोक सकती बात करने से खुद को।"

"अब रोक लेना।"

"पता है मेरा मूड ख़राब हो जाता है ऐसी बातों से।"

"अपनी बातों से, अपने मैसेज पढ़ लेना, अगर तुमको लगे मेरे से बात करनी है।"

"मेरा मूड वैसे भी चार पांच दिन तक अपसेट रहेगा।"

"मैं तुमको इमोशनल करने की कोशिश करता हूं।"

"तुम क्या चाह रहे हो?"

"मैं तुम्हारे लिए मर चुका हूं अगर दिख जाऊं कहीं अनदेखा कर देना।"

"मेरी नींद खराब कर दी ना कब से बोल रही हूं सो जाओ।"

"पहले बोलना था तुम्हारी नींद खराब कर रहा हूं।"

"अब मुझे नींद नहीं आएगी सुबह 6 बजे उठना है वैसे भी।"

"मैं क्या करूं फिर? मेरे से कोई मतलब मत रखना अब कभी। ओके बाय।"

"मैंने तुमसे मतलब का रिश्ता नहीं रखा समझे।"

"जानता हूँ मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं हूं अब, ना था।"

"तुमसे कोई कंफ्यूजन शेयर कर दो तुम उसे उछालते रहते हो। यार तुम्हें कैसे समझाऊं, तुम क्या चाह रहे हो मुझसे? कुछ समझ नहीं आ रहा।"

(रात के दो बज चुके थे उसने मुझे ब्लॉक कर दिया।)

आठ दिन बाद अनब्लॉक कर मैसेज किया, वीडियो कॉल की। फिर लाइन लगा दी दोनों की।

नॉर्मली बात हुई। "

ये वाला फ़ोटो है ना! ये मेरे घर का है स्टोरी पर लगाई थी कभी।"

"हां यही है, याद मत दिलाओ अब।"

दो दिन बाद बोला "मैं घर जा रहा हूं" बताता इसलिए था कि मैं कॉल मैसेज ना करूं।

मैंने कोई रिप्लाई नहीं किया। दो दिन बाद मेरा स्टेटस रिप्लाई किया था। स्टेट्स था

"तमन्ना थी तेरी दुल्हन बनूं।
कोशिश है तेरी कुछ ना रहूं।।"

सैड इमोजी रिप्लाई किया था।

चार दिन बाद उसका मैसेज आया– "ब्लॉक कर रखा था ना!, सुकून मिल रहा होगा।"

"मैंने नहीं किया था कहीं से भी।"

"झूठी, कितनी कॉल मैसेज किया, अभी तक नहीं सेंड हुआ है, मैं पागल हूं।"

"दिखाओ।"

"पांच दिन से अब याद आ रही है मेरी?"

"और एक स्टोरी लगाई थी मेरे लिए उसे देख के मन भर गया मेरा, मुझे पता भी चल गया मैं कितना गलत कर रहा हूं।"

"तुम क्यों सुनाते हो मुझे ऐसी स्टोरी सुनने के बाद मुझे पता नहीं क्या क्या हो जाता है।"

"मैं कुछ नहीं सुनाता, तुमको ड्यूटी जाना है आज?"

"हां।"

"जाओ फिर, ऑफ कब का है?"

"वेडनसडे का।"

"ओके।"

"तभी कॉल करोगे बस, है ना!"

"मेरा भाई आ गया है जेल से, घर जा रहा हूं।"

"कोई बंदा नाराज़ है मना भी नहीं सकते है ना!"

"क्यों हो? मैं कुछ बोला तुमको?"

"नहीं तुम कुछ नहीं बोलते।"

घर से आ के, चार दिन बाद कॉल की। मैंने रिप्लाई "किया व्याख्या मर गई है विशाल जी।"

"अच्छा जी, मेरा रिचार्ज ख़त्म हो गया था। नहीं दिख रहा ना कॉल।"

अजीब बंदा है यार। बात नहीं करता तो बीस बीस दिन तक नहीं करता। करता है तो कॉल पे कॉल। कॉल पे कॉल बात होने के बाद भी आधे घंटे बाद फिर कॉल। शाम को कॉल सुबह के पांच बजे कॉल। रात के एक बजे कॉल। क्या ही समझा जाए इसके पन को पागलपन दीवानापन या कोई

और सा पन?"

अध्याय 10

अब नहीं मिलना तुमसे यार अब बिल्कुल मन नहीं है। और इस रिश्ते का हमारे बीच रिश्ता ही क्या है? ना केयर, ना रिस्पेक्ट ना टाइम कोई प्रायरिटी नहीं। सिर्फ़ टाइमपास के चक्कर में किसी की बद्दुआ क्यों लूं। अब मुझे कोई परवाह नहीं तुम किसी से भी बात करो। फीलिंग्स मर गईं यार। और ऐसे ही तुम्हारे किसी खास की भी मर जाएंगी। गर ऐसा ही बर्ताव करोगे उसके साथ भी तो। उसकी फीलिंग्स मरने से पहले संभल जाओ, वैसे,, कुछ भी करो, मुझे क्या फ़र्क पड़ेगा। एक बात बताऊं यार मैं भी एक इंसान हूं मेरा मन भी चाहता था कि कोई मुझे भी बिना कहे गले से लगाए। मेरे खाने के लिए कुछ प्यार से बनाए। कोई मेरे लिए भी झुमका, पायल, फूल लेके आए। किसी से कुछ लेना नहीं चाहती लेकिन कोई लेके आता तो बहुत खुशी होती। संभाल कर रखती, खैर अब कुछ संभाल कर रखना नहीं पड़ेगा।

"मैं तुम्हें देना चाहता था यार, दूंगा।"

"अब कुछ नहीं चाहिए।"

"मैं अब क्या कर सकता हूं यार तुम खुश रहो मैं बस इतना चाहता हूं।"

"खुश रहने की बात मत करो मैं अब कभी खुश नहीं रह सकती। कोई छीन ले गया मेरी खुशी और हंसी। अब किसी पर यकीन नहीं होता सब ऐसे ही लगते हैं सिर्फ़ अपने फायदे के लिए करीब आना चाहते हैं बस और हमारे पास, पास करने के लिए टाइम ही नहीं है। और हां मैं भी तुम्हें इस बार खुश रहने की हमेशा मुस्कुराते रहने की दुआ नहीं दूंगी, तुम हंसते रहोगे तब तक दूसरों को रुलाते रहोगे। रोयोगे नहीं तब तक क्या दर्द देते हो तुम समझ नहीं पाओगे। रोने वाला किसी को रुलाता नहीं है ना।"

बातों बातों में एक दिन उसके सामने बोल दिया। "घर वाले पैसे मांग रहे हैं मुझे खुद पैसे की जरूरत है। अब कन्फ्यूजन में हूं पैसे घर वालों को दूं या अपना काम करूं?"

"तुम्हें पैसों की ज़रूरत क्यों है?"

"ज़रूरत है।"

"मैं दे दूंगा 20 तक तो।"

"नहीं यार।"

एक दिन मेरा सिर दर्द हो रहा था।

"तबियत ठीक नहीं हुई है, वजन जरा भी नहीं बढ़ा है, आने की क्या जरूरत थी। पैसे की ज़रूरत है मैं दे दूंगा 20, 30 तक। अपना बुकस्टोल खोलने को बोल रही थी। खोला क्यों नहीं।"

"पैसे ही नहीं हो पाते यार, बीस तीस हजार हो पाते हैं दूसरे कामों में ही खर्च करने पड़ जाते हैं। बीमार हुई उस में ही लग गए 80 हजार। अब फिर से कोशिश करूंगी जब तक कोई दूसरा झमेला ना निकल आए।"

"मैं दे दूंगी। बचा लिए हैं अब की बार मैंने पचास साठ।"

"मुझे तेरी मदद लेनी पड़े

खुदा मुझे वो मजबूरी ना दे।।"

"हां तुम्हें कोई ज़रूरत ही नहीं है मेरी।"

"ज़रूरत नहीं मेरी मोहब्बत हो तुम मगर तुमने मुझे ज़रूरी

भी नहीं समझा है। कोई नहीं जाने दो।"

फिर बाद में मुझे बीस हजार रुपए की ज़रूरत पड़ी, पांच घर से लिए पांच नेहा ने दिए, अभी दस की कमी थी।

नेहा ने बोला "विशाल से बोल के देख लो एक बार।"

"नहीं उससे नहीं उसके पास नहीं है फैमिली प्रॉब्लम चल रही है उसकी और मैं उससे नहीं मांगती कभी।"

(मगर मेरे मन में ख्याल आया एक बार मांग के देखो वो बार बार बोलता है ज़रूरत हो तो बताना, जान कर मैंने ज्यादा बताए उसे कि वो दे ही ना सके।)

कॉल की। "हां बोलो" (अकड़ में बोला)।

"ऐसे बोल रहे हो तो अब बोलने का भी मन नहीं है।"

"क्या बोलना था बोलो।"

"बोलने वाली थी कुछ।"

"क्या? बोलो अब फिर वही।"

"पैसे मिल जाएंगे?"

"हां सैलरी आने के बाद।"

"हां तब ही चाहिए मगर ज्यादा चाहिए, मिल जाएंगे?"

"कितने?"

"15 हज़ार।"

"क्या करोगी इतने का?"

"काम है कुछ।"

"क्या काम है?"

"फीस जमा करनी है।"

"अब किस की फीस भरनी है तुम्हें?"

"मिल जाएंगे के नहीं?"

"नहीं।"

"ओके।"

"मैं ड्यूटी के लिए तैयार हो रहा हूं।"

"यही उम्मीद थी तुमसे।"

ये कह के मैंने कॉल काट दी उसने वापस भी नहीं की।

दो दिन तक। और उससे पैसे मांग कर मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, बोलना चाह रही थी बोल दूं "मज़ाक किया था"। कॉल की तो उसने रिसीव नहीं की। दूसरे दिन की तब भी नहीं की। जाने क्यों मुझे बुरा लग रहा था। जबकि मना उसने किया था। मैंने पहली बार उससे पैसे मांगे थे फिर भी उसने झट से मना कर दिया।

"हां, तो" मैं मेरे पैसे वापस मांग रही हूं ये समझ कर बोल दिया था उसने। मैंने फिर तीसरे दिन सुबह को की कॉल। तब उठाई उसने वो ही सोई हुए वाले अंदाज़ में हम्मम, हम्मम में बात कर रहा था।

"मैंने उस दिन मज़ाक किया था।"

"मेरे पास वैसे भी नहीं हैं।"

"खाना खा लिए?"

"मैं खाना ही नहीं बनाता दो तीन दिन से तो कुछ भी नहीं खाया रूम पर।"

"बनाते क्यों नहीं हो?"

"हम्मम"

"तबियत ठीक है"

"हम्मम"

"कितने टाइम उठते हो?"

"हम्मम।"

"तुम सोते हुए बात करते अच्छे लगते हो।"

"हम्मम।"

"कितने टाइम उठोगे?"

"हम्मम।"

"सो लो फुरसत मिले तो कॉल कर लेना।"

उसने बिना कुछ बोले कॉल काट दी। फिर मैंने शाम को फोन देखा उसकी कॉल थी दो, चार घंटे पहले की। मैंने रूम पर पहुंच कर की, उसने उठाई नहीं।

एक दिन कॉल पर बोला "शाम को मिलना मार्केट में।"

मैं गई बर्गर चाउमीन लाया और उसी ओवर ब्रिज पर जाने को बोला। जहां जाने को मैंने उसे जब पहली बार बोला था।

"उस ब्रिज के ऊपर चलते हैं।"

"उस पे, क्यों?"

"ऐसे ही घूमने।"

"चल हट, क्रैक माइंड हो क्या? कुछ भी बच्चों की जैसी बातें। फिर एक दिन अपने आप बोला था इसका सीढ़ी इधर से हैं चलो ब्रिज पर चलते हैं। मैं इसकी सीढ़ी देखा था उधर से हैं।"

उस दिन के बाद हम कई बार उस पर गए। तो वो आज भी ले गया।

"ये लो खाओ"

मैं बैठी सोच रही थी आज क्या है, आज से पहले ना इसने यहां बुलाया ना कुछ लेके आए।

बार बार बोल रहा था "खाओ।"

मैं उसके साथ होती हूं तो कुछ खाने का मन नहीं करता। खाया भी नहीं जाता था।

वो आज बहुत प्यार से बोल रहा था बार बार– "खा लो बेटा।"

खाया दोनों ने। आराम से रैपर फेंक के बैठा। थोड़ी देर चुप रहा।

"क्या हुआ? क्या सोच रहे हो?"

"मम्मी बोल रही हैं बहू को ले जा। यहां इसका मन नहीं लगता, साथ ले जा संभाल अपनी बहू को।

वो भी बोलती है, कभी साथ नहीं रखा जब से शादी हुई है। नौकरानी बनाने के लिए लाए थे मुझे खाना बना के खिलाते रहो बस।

मैंने बोला था लाऊंगा। बहुत दिन से बोल रही है।

तुम मेरे पास कॉल मत करना। मैं कर लिया करुंगा ऑफिस से आते जाते।"

(मैं बहुत देर तक चुप रही वो मुझे चुटकी ले रहा था बार बार)

"तुमसे मेरी खुशी देखी नहीं जाती है, कैसे भी ना कैसे तुम्हें मुझे रुलाना होता है।"

"मम्मी रो रही थी, वो भी बोल रही थी मुझे नौकरानी बना के लाए थे काम करते रहो बस। कभी साथ नहीं रखा अभी तक।"

मेरा चेहरा देख कर बोला मैसेज दिखाऊं।

मैं फिर से टूट गई, मैं कुछ नहीं बोल पा रही थी बस चुपचाप बैठी रही। वो बार बार मेरी पीठ में चुटकी लेके बोले जा रहा था "चलो।"

"जाओ तुम।"

"मेरे रूम पर चलो तो।"

"अब कहीं नहीं जाना तुम्हारे साथ।"

"यार समझो मेरी शादी हुई है उसके साथ, उसे ऐसे कैसे छोड़ सकता हूं।"

"मैंने कब बोला है छोड़ने को। अच्छे से निभाओ अपनी शादी। अपनी मां को देखो। मैं कब कुछ कह रही हूं। मैं बस यही कहती हूं मुझसे दूर चले जाओ, जाओ तुम।"

फिर चुप हो कर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद बोला, "चलो यार, बहुत टाइम हो गया।"

"तुम जाओ, फिर कहोगे मेरा टाइम वेस्ट करा दिया।"

"नहीं यार।"

"तुम्हारे पास टाइम कहां होता है, तो अपना टाइम वेस्ट मत करो मेरे साथ। जाओ तुम।"

ज़ोर ज़ोर से चुटकी लेने लगा मैं एक दम शांत बैठी रही। मुझे सीरियस देख के खुद भी चुपचाप बैठ गया कुछ देर तक।

"मेरे से अब कभी बात मत करना, बस जाओ। नहीं कर सकते तुम मुझे कभी खुश। और मैं किसी की खुशियां छीनना नहीं चाहती।"

"मम्मी को बोला मैंने, वो भी बोल रही थी मेरी बात नहीं सुनता है।"

"तुम अपनी मम्मी को हमेशा क्यों नहीं देखते हो? जाओ यार तुम।"

"चलो" (मुझे पकड़ कर उठाने लगा)

"मेरी तो मां है ही नहीं, है ना! और जब भी मेरी याद आए तो अपनी मां को याद कर लेना।"

अगले दिन मैंने उसे दो विकल्प दिए।

पहला "तुम, अभी अपनी वाइफ को मत बुलाओ। मैं एक दो महीने बाद चली जाऊंगी तब ले आना।",

दूसरा "या फिर ज़िंदगी में मुझसे कभी भी बात मत करना।"

उसने बिना वक्त लगाए बोल दिया, "हां नहीं करुंगा।"

सुन कर फील हुआ जैसे मेरी वफाओं को लात मार कर धकेल दिया गया हो। फिर सीने का टेंपरेचर एक सौ चार हो गया। हाथ कांपने लगे। भूख गायब हो गई। कैसे इस इंसान ने मेरे बारे में बिना सोचे समझे बोल दिया "हाँ नहीं करूंगा, बात कभी।"

फिर मैंने उसे शाम को मिलने को बोला।

मैंने ऑफिस से निकलते में देखा उसकी कॉल पड़ी थी। मैंने वापस की – 10, 15 मिनट्स में पहुंच रही हूं। (वो वेट कर रहा था)।

बोला सब्जी की दुकान पर मिलूंगा साइड में।

मैं उसके रूम की साइड वाली समझ कर जा रही थी उसने कॉल की – कहां रह गई। गेट के पास आओ।

"हां बोलो क्या बात करनी थी?"

"तुम बोलो कौनसा ऑप्शन सेलेक्ट किया?"

"क्या बताऊं यार रो रही थी वो। बोल रही थी तुम मुझे कुछ नहीं समझते खाना भी नहीं खाया। भाई ने वीडियो कॉल करके दिखाया भाभी रो रही है देखो। मैं क्या करूं समझ में नहीं आ रहा है।" मम्मी भी रो के बोल रही थी। ले जा बेटा बहुत दिन हो गए अब तो दूर दूर।"

"इमोशनल ब्लैकमेल मत करो, ओके। मेरी बात आज से पहले समझी कभी, सीधे मना करने में भी मम्मी रूठ जाएंगी तुम्हारी।"

"क्या ब्लैकमेल कर रहा हूं?"

"अभी कर रहे हो ना इमोशनल ब्लैकमेल।"

"क्या किया है बताना?"

"इमोशनल करके अपनी बात मनवाना ही तो इमोशनल ब्लैकमेल होता है।"

"तो मैं कब इमोशनल कर रहा हूं तुम्हें?"

"मम्मी भी बोल रही थी....। तुम ही चाहते हो, ये नहीं बोल सकते ना!"

"मम्मी ही तो बोल रही हैं......।"

(मैं उसकी बात काट कर बोली) "हर बात में मम्मी का नाम लेकर अपनी मनमानी मत किया करो, जाओ तुम निकलो, जाओ।"

"ठीक है जा रहा हूं।"

(और चला गया, मैं आज दुखी कम गुस्सा ज़्यादा हो के चली आई)

उसने मुझे ब्लॉक किया था या नहीं मैंने कॉल या मैसेज करके ही नहीं देखा। ना उसने किया।

मेरे माइंड में जाने क्या क्या कैसे कैसे ख़्याल आने लगे। एक आया कि उसे बोलती हूं मैं प्रेगनेंट हूं देखती हूं क्या करेगा।

मैंने उसे व्हाट्सएप मैसेज किया,

"एक प्रॉब्लम हो गई है।"

"अब क्या हुआ?"

"आई आम प्रेग्नेंट"

(तुरंत कॉल की) "कब हुआ? ये सब ऐसे कैसे हो सकता है? लास्ट टाइम कब का डेट था कितने दिन एक्स्ट्रा हैं?"

(वो कभी खाने के बीच में कॉल पर बात नहीं करता लेकिन उस दिन की ये बोल कर काट दी "खाना बना लूं", फिर 1 मिनट में ही वापस कर दी)

"ये प्रॉब्लम थी तो बता सकती थी ना! जब से कॉल क्यों नहीं की।? और ये हुआ कैसे? कैसे हुआ, ऐसे कैसे हो सकता है यार?"

"तुमने ब्लॉक कर रखा है।"

"मैंने ब्लॉक नहीं किया है नंबर सेव नहीं है तब भी डी पी नहीं दिखती है। तुम्हें पता है ना मैसेज करके तो देखती।"

"मैंने सिर्फ़ बताने को कॉल की है।"

तुम ब्लॉक ही रखो मैंने इस बार बात करके कॉल काट दी। उसने 12 बजे तक कॉल की मैसेज दूसरे नंबर पर भी व्हाट्सएप किए। दूसरे दिन भी किए मैंने अनब्लॉक ही नहीं किया था। उसने अननोन नंबर से कॉल की मैंने रिसीव नहीं की। मुझे पता था कि वो मेरी गली में पहुंच सकता है।

ऑफिस से आते समय वो गली के नुक्कड़ पर खड़ा दिखा। एक दम से मैं उसे इग्नोर मारती आगे बढ़ती जा रही थी। वो पास आया और हाथ खींच के ले गया मुस्कुराता हुआ बोला – "फोन दिखाओ कितनी कॉल की हैं। ब्लॉक कर के रखा है ना!"

फिर मार्केट की तरफ़ ले गया। फिर रोड़ पर खींचा तानी चलती रही उसने मेरा फोन ले लिया था। मैं बिना फोन के नहीं आ रही थीं आने लगी तो वो मुड़ने से पहले ही हाथ पकड़ लेता। इतना लंबा चौड़ा इंसान चार कदम भी मेरे एक कदम में ही कवर कर ले रहा था। सब लोग देखे जा रहे थे। बीच ट्रैफिक में ऐसे ड्रामे में पहली बार शामिल थी मैं। मैं उस से हाथ छुड़ाने को खींच रही थी वो अपनी तरफ़ खींच रहा था इस चक्कर में, ट्रैक के सामने आ गई, उसने घबरा के अपनी तरफ खींचा मुझको।

फिर इलेक्शन फंक्शन वाले मंडप के सामने बैठने की जगह थी वहां बैठे। वहां एक गार्ड था उसने मुझे मुड़े पर बैठने नहीं दिया बोला टूट जाएगा।

विशाल बोला, "इतनी पतली सी तो है इसके वजन से भी टूट जाएगा! कमाल है!"

"हां जो भी हो।"

उठा के साइड में रख गया। फिर भी हमें देखता रहा फिर आ के बोला "यहां सामान रखा है इधर से और कहीं जाके बैठो।"

मैं आने लगी, वो मेरा हाथ पकड़ कर खींच कर रोक रहा था बार बार फिर वहां से उठ कर गाड़ी खड़ी थी वहां खड़े हुए। वहां भी गाड़ियों वाले आ जा रहे थे। मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।

उसने आज ऐसी बातें कहीं जो मैं हमेशा से सुनना चाहती थी।

"ये बोलती हो ना नहीं बात करूंगी कभी, बहुत बुरा लगता है सुनके हर्ट करता है।"

वो इतना टेंशन में कभी नहीं देखा मैंने।

"रूम पर चलो" हाथ पकड़ कर खींच के ले जा रहा था। मैं हाथ छुड़ा रही थी।

फिर बैठे तो भी बातें करते करते हाथ पकड़ कर अपने ओर कर रहा था। मैं गुस्से में बोल रही थी "हाथ छोड़ो, छोड़ो।"

बोला"

पहले तो तुमने ऐसा कभी नहीं किया सच में यार। हाथ को कभी ऐसे नहीं छुड़ाया।"

"तुमने कभी पकड़ा भी नहीं ऐसे।"

मुझे हाथ पकड़ के पहली बार रोड़ पर नौटंकी की उसने। मैंने पहली बार उसे इतने स्ट्रेस में देखा था। तब भी एक डेढ़ घंटे तक बातें बना कर भाग आई थी। उन डेढ़ घंटे में उसने ऐसी बातें कहीं कई, जिन्हें मैं सुनना चाहती थी कभी लेकिन।

"मां बनोगी मेरी?"

"तुम्हारी नहीं तुम्हारे जैसे की।"

"कैसे हुआ ये सब, हम तो ऐसे कभी मिले नहीं....? क्या जवाब दोगी किसका है? बताओ किसका है?"

"जानती थी इन सवालों का सामना करना पड़ेगा , मैं तैयार हूं सब सहने को।"

"कैसे झेलोगी तुम यार? ये ठीक नहीं है।"

"तुम्हारे मन में कभी किसी लड़की को लेके ख़्याल नहीं आया कि उसका और तुम्हारा बच्चा हो?"

"नहीं शादी से पहले कभी बच्चे का ख्याल नहीं आया।"

"मैं ये दवा नहीं लूंगी कितनी प्रॉब्लम होती है इससे।"

"मैं कराऊंगा इलाज़ जो भी पैसे लगेंगे। ख्याल रखूंगा बस तुम घर मत जाना।"

"मैं लेके फैंकने लगी तो छीन ली।"

मैं बोली, "हाथ में रख कर विश करो कि "मुझे ये दवा कभी खानी ना पड़े।"

वो साहब फिर से दुनियां भर की लड़कियां ले आए। मुट्ठी बंद करके बोला,

"मैं भगवान से दुआ करता हूं मुझे किसी लड़की को, ये दवा ना देनी पड़े।" उसे अब भी दूसरी लड़कियों की परवाह हो रही थी।

"मेरी ज़िंदगी तो ख़राब हो चुकी है शादी करके। उसके लिए कोई फीलिंग नहीं है मेरे दिल में। घर वाले भी मान ही जाते हैं यार। मैं ही फैमिली फैमिली करता रहा। कुछ नहीं होता अब फैमिली को क्या प्रॉब्लम। मुझे झेलनी पड़ेगी अब उम्रभर। तुम पसंद

के लड़के से शादी करना तुम खुश रहना भगवान तुम्हें खुश रखे मैं हमेशा चाहता हूं। तुम खुश रहो जहां भी रहो। ये ले लो ना प्लीज़।"

"अब कभी बात नहीं करूंगी तुमसे।"

"ये मत बोला करो यार बहुत हर्ट होता है। हर बार जब भी बोलती हो बहुत हर्ट होता है।"

"अब फ्यूचर में मिलाउंगी तुम्हें, तुम्हारे जैसे से कभी। खुशियां झीन कर खुश रहने की दुआ तो सब देते हैं, एक खुशी ये नहीं दे सकते मुझे?"

"यार ये बहुत प्रॉब्लम होगी तुम्हें कैसे झेलोगी तुम ? प्लीज़ खा लेना।"

"ज़हर लाके दे दो मैं खा लूंगी।" मेरी आंखों में आसूं आ गए। वो देख कर चुप हो गया मैं बोलती रही "ज़हर लाके दे दो इस से अच्छा ये भी स्लो पॉइजन है। ज़हर खा कर सीधा मर जाऊंगी तड़पूंगी तो नहीं।"

"हां यार बहुत हालत खराब कर देती है ये।"

"तुम मेरा छोड़ो तुम्हारा बता देती हूं तुम्हें कोई प्रॉब्लम नहीं आने दूंगी। जो भी प्रॉब्लम होगी मैं सब झेल लूंगी तुम पर कोई आंच नहीं आने दूंगी।"

"यार मेरे भाई ने भी देख लो कर ली शादी। अब घर रह रही है उसकी वाइफ। सब खुश हैं। यार मुझे तो अब बस ज़िंदगी काटनी है कैसे भी।"

बीच में मेरे फोन पर कॉल आ गई अननोन नंबर से, "कौन?"

"कहां हो तुम?"

"बोल कौन रहे हो अपना नाम तो बताओ?"

"सब पता है तुम्हें अनजान मत बनो, कहां हो तुम ये बताओ बस?"

(विशु बोल रहा था कौन है दिखाओ मैं बात करूं)

"मैं नहीं पहचान रही हूं तब ही तो पूछ रही हूं। कॉल क्यों की है?"

"कहां हो तुम?"

(बार बार एक ही बात सुन कर मुझे गुस्सा आ गया मैंने कॉल काट दी)

"कौन था?"

"था कोई"

"कौन था?"

"पता नहीं।"

"तो कॉल क्यों काट दी?"

"नहीं करनी मुझे बात किसी से बता ही नहीं रहा है कौन है। आवाज़ तो पहचानी सी लग रही थी, वो बता ही नहीं रहा था। भाड़ में जा फिर।"

पता है लडके ऐसे ही होते हैं पहले से तो कद्र नहीं करते बाद में रोते रहते हैं और लड़की हर संभव कोशिश करती हैं रिश्ता को बचाने की। अपनी जान सम्मान सब कुछ लगा देती हैं। और पलटती जब ही हैं जब समझ जाती हैं अब जान भी दे दो तो कोई फ़र्क नहीं पड़ने वाला। और लड़के को जब घंटा फ़र्क नहीं पड़ता।"

"हां यार लड़के जब तक लड़की दूर नहीं जाती तब तक उसकी वैल्यू नहीं समझते। बाद में कुछ भी करो लड़की फिर नहीं मुड़ती। तुम उससे बात नहीं करती उसे कितना बुरा लगता होगा मैं समझ सकता हूं। तुम मुझसे भी यही बोलने लगी हो बहुत बुरा लगता है। ये बात मुझे हमेशा हर्ट करेगी।"

"यार ये ले लो ना"

"इसकी ज़रूरत नहीं है" (मैंने हंस के कहा)

"सच में ज़रूरत नहीं है?"

"हम्मम"

"मैं नहीं ला रहा उसको, मना कर दिया मैंने।"

"लाओ मत लाओ मुझे क्या? अब मुझे तो लताड़ दिया ना तुमने"

"ऐसा नहीं है यार।"

"फैंक दो इस दवा को।"

"सच में झूठ बोल रही थी?"

"हम्मम"

"मैं बार बार सोच रहा था। ऐसा कैसे हो सकता है! हम तो ऐसे मिले ही नहीं।"

"इतने भी मासूम नहीं हो तुम।"

"चलो, कुछ खाओगी?"

"नहीं, मैं जा रही हूं।"

मैंने उसे कहा "एक बात बोलूं मानोगे?"

(बहुत सोच कर बोला) "बोलो।"

"रहने दो अब मैं कुछ कहना नहीं चाहती।"

"जानती हो? तुम्हारी ये बात हमेशा हर्ट करेगी मुझे एक बात कहूं! फिर जाने दो, रहने दो, तुम नहीं समझोगे। बोलोगी तब ही तो समझूंगा मैं। बोलती हो तो बस, अब कभी बात नहीं करूंगी, कॉल नहीं करूंगी कभी, मुझे कितना हर्ट करता है हमेशा करेगा।" (उसकी आंखों में आसूं थे, वीडियो कॉल पर था)।

उसने बोला अनब्लॉक करो मैंने नहीं किया फिर दूसरे दिन वो फिर मिला। बस स्टॉप पर वो फिर से लाने की बात कहने लगा अपनी वाइफ को।

"बीमार है वो, 7 प्वाइंट ब्लड रह गया है। अच्छे से खातिर करनी है उसकी।"

मैं अब क्या बोलती आज तक उसने मेरी केयर की बात तक नहीं की तो और कैसे समझती उसके दिल में मेरे लिए कोई जगह नहीं है।

25 दिन बाद वो मुझे मार्किट में दिखा, नेहा और मिलन थे साथ में। मैं अनदेखा करके आगे बढ़ गई। आगे जाके नेहा रुकी तो मैं भी दूसरी तरफ मुँह करके खड़ी हो गई। पता था उसका रास्ता इधर से ही है। मैंने फिर देखा उधर वो अभी भी सब्जी ले रहा था। मैं फिर से मुंह फेर के खड़ी हो गई। वो भी साइड से निकल रहा था नेहा बोली

डार्लिंग देखो तुम्हारा विशाल। मैं ये समझ के पलटी कि वो पास आया है। मगर वो तो देखे बिना ही चला गया। उनके साथ तो मैं नॉर्मल होके घूमती रही। रूम पर आके मैं बहुत रोई।

अहमद फराज का ये शेर तब समझ आया मुझे।

(तेरे पास से जो गुज़रे तो जुनून में थे फ़राज़,

जब दूर जा के सोचा तो ज़ार-ज़ार रोए।)

मैं गेट के बाहर बैठी रोती रही। सिर्फ़ मिलन ने पूछा था "क्या हुआ व्याख्या मैम कैसे सेड हो?" बाकी मैं गेट पर बैठी रही रात ग्यारह बजे तक किसी ने कुछ नहीं पूछा। पूरी रात सोच सोच के रोना आता रहा (इस बंदे के लिए मैं सच में कुछ

भी नहीं हूं।)

इंतज़ार में थी सैलरी आते ही वो कॉल करेगा। क्योंकि मैंने उसे ब्लॉक किया था ऑनलाइन पेमेंट वाली सारी जगह से। लेकिन उसने ना कॉल की ना मैसेज शायद वो पैसे भी भूल गया मेरे। मैं सोच रही थी देगा तो बोल दूंगी 'विदा समझ कर रख लो तुम बहुत गरीब हो वैसे भी।' हर बात पर बोलता रहता था 'हम गरीब आदमी है। हम तो गरीब आदमी हैं।'

कभी कभी उस पर तरस भी आता था। कभी छुट्टी नहीं करता था। ड्यूटी से सीधा घर जाता और घर से सीधा ड्यूटी। घर एक दिन के लिए भी जाता तो भी इधर उधर भागना पड़ता था उसे। आराम तो बहुत बीमार पड़ने पर भी दो से चार दिन करता था बस। जब मैं बहुत गुस्से में सुनाती थी तो सुन भी लेता था। बस इन्हीं बातों से प्यार आ जाता था उस पर वापस से।

अध्याय 11

उसको ब्लॉक करने के बाद रोज सुबह शाम अनब्लॉक करके देखने की तलब पता नहीं क्या क्या करवाएगी मेरे साथ।

उसने बोला था एक बार

"अब जो भी है जैसी भी है वही सब कुछ है मेरा।"

"ठीक है तो मेरे पास कॉल मत करना।"

"मैं कहां करता हूं तुम ही पीछे पड़ी हो मेरे।"

"मैं पीछे पड़ी हूं! याद रखना ये बात जब भी मेरी याद आए, इसे ही याद कर लेना।"

"मैं भूल जाऊं तो तुम याद दिला देना।"

"याद दिलाने को मैं नहीं होऊंगी ना। "

"क्या?"

"याद दिलाने को मैं नहीं होऊंगी ना।"

"मैं कर लूंगा याद।"

मैंने सोच लिया था कि मैं खुद से कॉल नहीं करूंगी। मगर उसकी कॉल मैसेज का इंतज़ार करती थी। तीन महीनों में ना उसकी कॉल आई ना मैसेज। एक दिन मैं उदास बैठी सोच रही थी कैसे उसे मेरी बिल्कुल याद नहीं आती। सिर्फ़ काम से क्यों याद आती है। क्या वो पूरी तरह भूल चुका मुझे।

नेहा आई ड्यूटी से मुझे उदास देख के बोली–

"व्याख्या तुम्हारे बारे में सोच के बहुत बुरा लगता है। इस शहर में ना तुम्हें प्यार मिला ना पैसा, सब कुछ गया ही तुम्हारा। उसको देखो अब कभी कभी भी कॉल नहीं करता ना! ऐसा इंसान क्यों मिला तुम्हें। मैं तो ऐसा नहीं समझती थी उसे।"

(पहली बार मेरे आंसू निकल आए, नेहा के सामने)

"क्या नहीं किया था मैंने उसके लिए। देखो कैसे भूल गया मुझे। हाल भी नहीं पूछता।"

ऑफिस में भी उदास हो जाती उसको सोच कर। मगर इस बार सोच लिया था कि वो अब ना आए मेरी लाइफ में तो ही अच्छा है। वो था तब भी क्या अच्छा हुआ था। उसके ना होने से ये तो है कि कोई नहीं है इस अजनबी शहर में अपना। खुद ही खुद को संभालना है।

मैं खुद को खुश रखने की कोशिश में लग गई। ऑफिस में दो लड़कियां मसखरी थीं। मैं भी मज़ाक करने लगी उनके साथ हँसने लगी थोड़ा थोड़ा। खुद को इस सदमे से निकलने की कोशिश कर रही थी।

मुझे कई दिन से उसकी याद आ रही थी। पर मैं उसके पास कॉल नहीं करूंगी। मन बार बार आवाज़ सुनना चाह रहा था उसकी। मगर अपनी फीलिंग्स को मैं कंट्रोल में रख ले रही थी।

दो तीन दिन बाद किसी ने मुझे बताया "विशाल का प्रमोशन हो गया है।"

मेरा नियंत्रण टूट गया। मैंने सोच-समझ, त्याग कर कॉल की। सिर्फ आवाज़ सुनने के लिए। उसने उठाई,

"हेलो, हेलो, हेलो।"

मैंने कॉल काट दी।

उसने वापस की।

"कॉल काट क्यों दी? आवाज़ नहीं आ रही थी? सिर्फ आवाज़ सुनने को की थी?"

"हम्मम। तुम्हें सच में याद नहीं आती मेरी?"

"आती है। आ रही थी। मैं जान कर नहीं किया कॉल।"

"झूठ बोल रहे हो तुम। याद आती तो चार महीने में एक दिन भी कॉल मैसेज नहीं करते तुम?"

मैं बात करते करते रोने लगी।

मैंने पूछा नही प्रमोशन के बारे में। मुझे पता था गर हुआ होगा तो वो मुझे खुद बताएगा। हुआ ही नहीं था। मगर मुझे ये मालूम नहीं था कि उसकी वाइफ नहीं है यहां। पता होता तो मैं कॉल ही नहीं करती उसके पास। क्योंकि वो अब रोज कॉल करेगा और मैं इग्नोर नहीं कर पाऊंगी।

रक्षा बंधन आने में चार दिन थे। मैंने उस से पूछा

"घर जाओगे?"

"हां, जाऊंगा।"

"बाइक से जाओगे?"

"हा, तुम्हें चलना हो तो बता देना।"

मैंने छुट्टी मांगी नहीं थी। उसने बताया था उसने ले रखी है।

सोच रही थी इसके साथ ही चली जाऊं। शाम को ड्यूटी करके जाएगा। एक छुट्टी कम हो जाएगी।

एक दिन पहले बताया उसने।

"तुम चलोगी ना मेरे साथ? एक लड़की भी कह रही है। उसे भी ले चलेंगे।"

"उसे ही ले जाना तो।"

"अरे यार आ जाएंगे बाइक पर। पूछ रहा हूं। उसे ही ले जाने का क्या मतलब है।"

"मुझे नहीं जाना किसी और के साथ।"

"मैं किसी को नहीं ले जा रहा।"

"नहीं उसको ले जाना।"

"मैं अकेला जाऊंगा। किसी को नहीं ले जा रहा।"

"मुझे पता था, डायरेक्ट मना नहीं कर सकते मुझसे। इसलिए बीच में लड़की को ले आए।"

"ठीक है मना कर दूंगा उसको।"

"कुछ भी करो।"

"सुबह को बोला। शाम को दो घंटे जल्दी आ जाना ऑफिस से। मैं जल्दी आ जाऊंगा।"

"सीनियर आने ही नहीं देगा आज जल्दी। कई लोग छुट्टी पर हैं पहले से ही।"

"आने दिया गर और चलना हो तो कॉल कर देना मेरे पास।"

मैंने सीनियर से पूछा उसने एक बार में ही बोल दिया चली जाना।

मैंने ऑफिस से निकलते ही उसे कॉल की। नो आंसर। रूम पर पहुंच कर की। नो आंसर।

हो सकता है चला भी गया हो बाइक पर है इसलिए कॉल नहीं उठा रहा है।

जाने दो, चला गया होगा तो मैं सुबह चली जाऊंगी बस से।

मैं नहा धो के, बैग पैक कर के उसकी कॉल का वेट कर रही थी। शायद नहीं गया होगा तो करेगा। नहीं करेगा तो कल सुबह बस से चली जाऊंगी ही।

5 बजे उसने कॉल की।

"कहां हो तुम?"

"रूम पर।"

"अरे यार सीनियर आने नहीं दे रहा था। कई लोग छुट्टी पर थे तो मुझ पर ही सारा लोड डाल दिया। बैग पैक कर लिया?"

"हां।"

"मैं बस आया 15 मिनट्स में।"

मैं बाइक पर उस से थोड़ा दूर होके बैठी थी। अपने दोनों हाथों से मेरे हाथ पकड़ के बोला। पकड़ लो मुझे, पतली सी तो हो। कहीं गिर गई तो पता भी नहीं चलेगा मुझे।

बाइक पर बैठे बैठे मैं उसके बारे में सोच रही थी। बस लड़की को सिर्फ मेरे साथ बैठने को ही तो पूछ रहा था। मैं कुछ और सोच लेती हूं। ये हर बार गलत नहीं होता। इतना भी बुरा नहीं है।

"कभी कभी मैं गलत समझ लेती हूं बातों को।"

"समझ आया ना तुमको कि गलत समझ लेती हो कभी कभी। मुझे मालूम था तुम और कुछ सोच कर मना कर रही हो, वैसे नहीं करती। वैसे अच्छा ही है उस लड़की को नहीं लाया तो। तुम भी लड़ रही थी फालतू का गुस्सा कर रही थी। जा के गुस्से में बोलके आया था उस लड़की को।

'मेरी बाइक पर जगह नहीं है। देख लेना जैसे भी जाना हो।' हां फालतू का तुम और गुस्सा कर रहीं थी।"

घर पहुंच कर किसी ने कोई कॉल या मैसेज नहीं किया।

वापस आते में मैं बस स्टैंड पर वेट कर रही थी बस का। (वो एक दिन बाद आने वाला था।)

"उसकी कॉल आई कहां हो?"

"बस स्टैंड हूं।"

"पूछा भी नहीं एक बार भी।"

"तुम कल जाने का बोले थे।"

"आ रहा हूं, वेट करना दूसरी बस से चलेंगे।"

फिर से किसी बात पर लड़ाई हो गई हमारी 3 सितंबर को। ब्लॉक, ब्लॉक हो गया दोनों तरफ से।

3 के बाद 29 को उसकी मिस कॉल थी। मैंने कोई रिप्लाई नहीं किया। फिर 30 को ऑफिस से निकली तो उसकी दो कॉल थी मैंने उन्हें भी इग्नोर मार दिया। (सोचते हुए– जाओ तुम अब चले ही जाओ) बस में बैठते में देखा मैसेज भी आए हुए हैं।

"मेरी तबियत ख़राब है, बोतल चढ़ रही है मीना मार्केट के मोड़ पर हॉस्पिटल में हूं। अकेला हूं आ जाओ मेरे पास प्लीज़"।

मैसेज पढ़ते ही एक दम से धड़कन रुक सी गई। सीने में घबराहट होने लगी। थोड़ा सोचा और तुरंत कॉल वापस की।

"कैसे हो? कहां हो?"

"आ रहा हूं रूम पर।"

"अभी कैसी तबियत है?"

"अभी थोड़ा ठीक है, मैं ठीक हूं।"

"मैं तो ऑफिस से ही आ रही हूं अभी तो, गर टाइम रहा तो आऊंगी।"

"चलो मैं फिर कॉल करता हूं।"

मुझे बस में आते में पूरे रास्ते उसका ही ख्याल आ रहा था। एक सदमा सा लग गया हो जैसे। कितनी तबियत ख़राब हुई है, पता नहीं। अगर ज्यादा कुछ हुआ तो कैसे करूंगी? इतनी रात में कैसे जाऊंगी उसके पास? मैंने रूम पर आ कर फिर कॉल की उसने उठाई नहीं, दो कॉल की थी फिर डर लगने लगा कहीं ज्यादा ही तबियत ख़राब तो नहीं हो गई। कॉल भी नहीं उठा पा रहा। फिर उसकी कॉल आई।

"मैं एक लड़के के रूम पर आया हुआ हूं मन नहीं लग रहा।"

"तबियत कैसी है?"

"पहले से बेहतर है।"

सोचा अब ठीक है वो। अब कॉल नहीं करूंगी। लेकिन वो फिर कॉल पे कॉल करने लगा और उसकी कॉल मुझसे इग्नोर नहीं होती "इट्स माई वीकनेस एंड इट्स माई फॉल्ट"

उसने सुबह कॉल की मैं उठाते ही बोली "हम्मम"

"हम्मम, हम्मम क्या है? ना गुड मॉर्निंग, ना हेलो बस हम्मम।"

"हम्मम।"

कॉल काट दी उसने। मैंने भी नहीं की तैयार हो रही थी ऑफिस के लिए रास्ते में की

वो बोला– "बस आ गई।"

"मैं भी रोड़ क्रॉस कर रही हूं कॉल काट दो।"

दोबारा करके बोला "मैं घर जा रहा हूं शाम को ऑफिस से सीधा चला जाऊंगा।"

"तो चले जाओ ना।"

"ऐसे क्यों बोल रही हो गुस्से में?"

"गुस्से में नहीं बोल रही मेरी आदत हो गई है ऐसे ही बात करने की, तुमसे ये वायरस मुझमें भी आ गया है।"

"हर इल्ज़ाम मुझ पर ही लगा देती हो तुम।"

दरअसल जब भी वो घर जाने की बात करता था मेरे सीने में एक टीस उठ जाती थी। और वो बात याद आने लगती अब तो "मैं नहीं आ सकता"।

मंडे को गया, थर्सडे को सुबह सीधा ड्यूटी पहुंचा आते में कॉल की बोला–

"भूख लग रही है खाना बनाने का मन नहीं है मेरा, बना दो। मैं यही उतर गया हूं तुम्हारी गली के सामने, दीपक है मेरे साथ।"

"उसके रूम पर ही चले जाओ खाना बन जाएगा तो मैं बुला

लूंगी।"

"मैं नहीं बैग है मेरे पास।"

"तो साथ ले जाओ।"

वो चला गया शिवानी थोड़ी ऐसी है उसके सामने उसके लिए खाना बनाना थोड़ा अजीब लग रहा था। किसी और के रूम पर जाने में संकुचा रही थी उसे कॉल की–

"ले जाओ।" मैं गली में खड़े हो के बोल रही थी।

"तुम आओ, मैं आ रहा हूं।"

चलते चलते दीपक के रूम तक पहुंच गई। तब वो बाहर आया और बोला "साथ खाएंगे आओ।"

"नहीं मैं जा रही हूं।"

फिर दीपक भी कहने लगा, "आ जाओ आज हमारे हाथ की चाय पी लो।"

उसने दीपक के सामने ही मुझे अपने हाथ से खाना खिलाया और बोला "कैसा खाना बनाई हो आज ना नमक है ना मिर्च।"

दीपक बोला, "नहीं अच्छा है टेस्टी है खाना तो तेज मिर्च गांव में खाते हैं लोग। अब तो मुझे भी ऐसा ही अच्छा लगता है।"

"नहीं खाना तो अच्छा बनाती है ये। आज का अच्छा नहीं है थोड़ा।"

मैं दोनों के लिए बना के ले गई थी वो खा नहीं रहा था बाहर जाने को था विशाल ने बोला "आ यार खाओ ऐसे कैसे।"

जब मैं निकल के जा रही थी एक आदमी गेट के सामने बैठा देख रहा था अजीब नज़रों से। मैं क्या बताऊं कैसा फील हुआ मुझे और ये भी आया ख़्याल, ये कहीं उल्टा समझ के दीपक की जीएफ को ना बोल दे कुछ।

"क्या बोल के भाग गए थे कल?"

"याद नहीं है।"

"मतलब ऐसे ही कुछ भी बोल देते हो याद भी नहीं रहता?"

"नहीं याद भूल गया।"

"ऐसे ही मुझे भी भूल जाओगे?"

"मैं किसी को नहीं भूलता।"

"अच्छा सब याद हैं?"

"हां।"

"मैं भूल जाऊं फिर!"

वो थोड़ा इमोशनल हो के चुप बैठ गया फिर बोला "मैं इतना भी फालतू नहीं जो सबको याद करूं।"

"तो मैं ये याद कर लिया करूंगी जब तुम मुझे भूल जाओगे, 'वो इतने फालतू कहां जो हमें याद करेंगे'।"

"क्या?"

"यही सोच लिया करूंगी तुम इतने फालतू नहीं हो जो हम याद आएं।"

कुछ नहीं बोला चुप रहा।

"हम अभी तक रिलेशन में क्यों हैं बताओ? मैंने पूछा!" बोला "हां यार बताओ ना क्यों हैं?"

"तुम बताओ।"

"प्रश्न मैंने किया है।"

"पता नहीं यार क्यों हैं?"

उसकी नाइट ड्यूटी थी दिन में रूम पर था मेरा ऑफ था मैंने सुबह 10 बजे कॉल की

"खाना बना दी हूं आ जाओ खाने।"

"लेने आऊं या खाने? कहां आना है?"

"रूम पर।"

"मैं नहीं आ रहा।"

"मत आओ तो ले जाना।"

"आ रहा हूं कौन कौन है?"

"कोई नहीं है।"

"अभी आई नहीं तुम्हारी साथ वाली?"

"नहीं।"

"तो मैं आ रहा हूं लेट तक रुकूंगा।"

"आ जाओ।"

फिर मुझे बुरा लगा कि मैं तो दूर रहने की कोशिश कर रही हूं और फिर हां बोल दिया। वो आते में पूछ रहा था "क्या खाओगी?"

"कुछ नहीं तुम आ जाओ बस।"

आंटी के पड़ोसी भाई देख रहे थे झांक कर, मुझे थोड़ा अजीब लगा मगर कोई नहीं इश्क़ है।

आंटी अंकल सब थे ऊपर। वो फोन पर किसी से बतियाने लगा बाहर तक आवाज़ आ रही थी। मैं मोबाइल पर तेज आवाज़ में रील देखने लगी ताकि बाहर आवाज़ ना जाए। वो बात करते करते पीछे से मेरी कुर्ती खींच रहा था। उसे लग रहा था मैं नाराज़ हो कर ऐसा कर रही हूं। हां बुरा लग रहा था मुझे। कॉल काट कर बोला

"ऐसे क्यों बैठी हो दूर, जाऊं मैं?"

"तुम बात कर रहे थे।"

"अब बात भी नहीं कर सकता मैं!"

"अरे बाबा।"

खाना खा के मैं फिर दूर बैठी मोबाइल चलाने लगी। बोला

"मैं पास हूं फिर भी इतनी दूर जाऊं तो फिर मैं!"

मैं पटाक से उसके सीने पर सर रखके सो गई और बोली "तुम्हारे सीने पर सर रखके तो मैं सदिया गुजार दूं, क्या तुम्हारे सीने में मेरे लिए जगह है?"

"क्या?"

"मेरे लिए जगह है तुम्हरे सीने में?"

"तुम जो मांग रही हो वो तो नहीं है।"

हर्ट हुआ सुनके मगर मैं चुप रही फिर मैं बोली

"मैंने तो कभी कुछ मांगा ही नहीं है तुमसे।"

"हां नहीं मांगा कभी।" (मेरे मन में ख्याल आया ,और तुमने दिया भी नहीं।)

फिर रूम पर जा कर कॉल की बोला

"मुझे फोटो चाहिए अभी मैंने ब्लू लाइट लगाई है अपने कमरे में तो उसे सामने लाऊंगा। जब भी रात में भी जागूं तो उसे देख सकूं।"

"ओके फ्रेम तो हो जाने दो।"

"नहीं मुझे तो अभी चाहिए, क्यों दिखाई थी, मैं तो पहले वाला ही समझ रहा था।"

"तो कल आ जाना मार्किट तब फ्रेम करवा के ले जाना।" "ठीक है।"

(वो फोटो मैंने ही क्लिक किया था। उसके बाल संभाल कर, हाथ ऐसे रखो, थोड़ा सा बच्चों की तरह रूठों। बहुत क्यूट इनोसेंट लग रहा था उसमें। वो फोटो मुझे बहुत अच्छी लगती थी उसकी। आज भी मेरे पास है। उसकी ही हार्ड कॉपी निकलवाई थी। उससे बोली इसे अपने साथ रखना जहां भी रहना इसे वहीं रखना।)

अगले दिन मैंने कॉल की उठाते ही "बोला घर जा रहा हूं।"

"तो जाओ, क्यों जा रहे हो?"

"काम है कुछ।"

"क्या काम?"

"काम है।"

"मैं ही पागल हूं जो बता देती हूं।"

"तो बता तो रहा हूं।"

"क्या काम है ये कहां बताया है?"

"बहन के लिए लड़का देखने जाना है।"

"और कल क्या बोल रहे थे?"

"अरे यार मैं भूल गया अब आके जाऊंगा। आ जाऊंगा तब चलेंगे।"

"ऐसे ही करते हो तुम हमेशा भूल गया ये हुआ वो हुआ? और क्या बोल रहे थे उस दिन रात में! मैंने भी तुम्हें दिल से निकाल के फैंक दिया, ठीक है।"

(मैंने बोल के कॉल काट दी)

उसने भी नहीं की दो तीन घण्टे तक। मैं बार बार फोन देख रही थी। उसको कोई फ़र्क ही नहीं पड़ा। बाद में मैंने ही मैसेज किया

"क्यों सुकून मिल गया होगा?"

"सुकून तो तुम्हें मिला होगा मुझे निकाल के जो फेंक दिया।"

"जब तुम्हारे दिल में मेरे लिए कोई जगह नहीं है तो मैंने भी निकाल कर फेंक दिया।"

"झूठी मैंने कब बोला था।"

"और क्या बोला था!"

कोई रिप्लाई नहीं।

चार दिन बाद घर से आ कर, उसने कॉल किया।

"अब क्यों अनब्लॉक किए?"

"कर दिया ना अब।"

"एहसान में!"

मैंने उसे बोला था"पनीर बनाके नहीं खिलाए हो अभी तक।"

"खिला दूंगा यार, मेरा भी मन है बनाऊंगा कभी।"

"हां तुम्हारा कभी देखा है जब से बोला है तब से खुद भी बनाके नहीं खाया है। और फिर हम ना रहे तब बनाओगे।"

"मार्किट चलोगे किसी दिन?"

"चलेंगे नेक्स्ट मंथ।"

"हां नेक्स्ट मंथ बोल दोगे नेक्स्ट मंथ।"

"नहीं यार सैलरी आने दो ना अभी पैसे नहीं है।"

"इस मंथ की कहां गई?"

"खर्च हो गई पता नहीं चला किधर किधर।"

"ओके तो नेक्स्ट मंथ।"

"तुम्हारे लिए एक ड्रेस दिलाऊंगी, कुछ नाटक मत करना पहले ही बोल रही हूं।"

"नहीं यार तुम मुझ पर पैसे खर्च मत किया करो।"

"बस यही ड्रेस दिलाऊंगी और ये मत बोलना मैं ये नहीं पहनता, मुझे पसंद नहीं है, मैं दिलाऊंगी पहननी पड़ेगी।"

"मैं दिलाऊंगा तुम्हें कपड़े।"

"अरे मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

"मैं दिलाऊंगा।"

"पहले मैं दिलाऊंगी।"

"क्या दिलाओगी?"

"कुर्ता पायजामा।"

"मैं नहीं पहनता।"

"बोला था ना मना नहीं करोगे।"

"जो शादी पार्टी में पहनते हैं लड़के वैसे, ओके चलेंगे।"

"हां देखता हूं।"

दूसरे दिन में ऑफिस आ रही थी उसकी कॉल आई,

"पराठे बनाऊं या रोटी?"

"मतलब! क्यों?"

"पनीर बनाया हूं, खाना लेके आऊंगा।"

"ओह! और कुछ मत बनाओ, बस पनीर ले आओ। रोटी मैं बना लूंगी।"

"मेरे लिए भी बना लेना फिर।"

"ओके।"

"और चार पैक कर देना सुबह के लिए पराठे।"

"ओके।"

"रोड़ पे खड़ा तो नहीं करोगी रूम पर आ जाऊं?"

"आअआअ रूम पर....... ! आ जाना।"

"रूम पर ही खिलाओगी ना!"

"हां आ जाओ।"

(रूम पर वो थप्पड़ वाला सीन हुआ था तब से मैं उसे रूम पर अंकल नहीं होते, और शिवानी नहीं होती थी तब ही बुलाती थी। कई दिन उसे गली के बाहर रोड़ पर खड़े हो के मेरे खाना देने आने का वेट करना पड़ा। एक दिन मुझे बनाने में देर हो गई वो आधा घंटे से ज्यादा खड़ा रहा। मैं देने गई। "तुम्हें यहां खड़ा करना मुझे अच्छा नहीं लगता लेकिन रूम पर शिवानी के सामने तुम्हें ले जाना भी मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

"कोई नहीं मुझे इतना भी बुरा नहीं लगता यहां खड़े हो के वेट करना।")

रूम पर आ कर कॉल की उसने। मैंने पहले ही कुर्सी किचेन में रख ली थी। मैं कुर्सी पर बिठा कर किचेन में ही खिला रही थी बनाते बनाते। वो अपने हाथ से मुझे भी

खिलाता जा रहा था। आंटी उतर कर आई ऊपर से। पहले बाहर गई बाइक देखी फिर अंदर आई। वो नमस्ते करने लगा मैंने तब देखा, बोलने लगी "बेटा तेरे अंकल ने देख लिया तो पहले की तरह ना हो जाए।"

"पनीर देने आए थे मैंने ही बोला है ख़ा के जाने को।"

"तेरे अंकल ने देख लिया तो पनीर हो जाएगा।"

आंटी चली गई तब मैं बोली "अंकल इतना कुछ नहीं करते आंटी बस यूं ही।"

"हां पता है मुझे मेरी भाभी भी ऐसे ही करती है।"

दूसरे दिन मेरा ऑफ था मैंने कॉल किया

"खाना बना रही हूं कॉल कर दूंगी लेने आ जाना।"

"आज नहीं आऊंगा, अच्छा नहीं लगता रोज़ रोज़। आज ही बना रही हूं आ जाना। ओके दोस्त के रूम पर जा रहा हूं, हां दोनों के लिए बना दूंगी।"

"लेट आऊंगा।"

ऑफिस से आ के कपड़े चेंज कर रही थी तब ही उसकी कॉल आई, "मार्केट आ रही हो?"

"पैरों में दर्द हो रहा है।"

"दर्द तो मेरे भी हो रहा है, गोलगप्पे खाने का मन था यार, आ जाओ ना।"

"नहीं आ सकती मैं तुम खा लो जाओ।"

"ठीक है मत आओ मैं भी नहीं आ रहा।"

दूसरे दिन फिर कॉल की थोड़ी लेट की थी।

"बाहर आ जाना जलेबी लेके आ रहा हूं।"

"आज कैसे देने आ रहे हो?"

"क्यों लाया नहीं था पहले कभी?"

"अरे वो बात नहीं आज कुछ खास है क्या?"

"आ रही हो या नहीं?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैं कुछ पढ़ रही हूं।"

"सच बोल दो ना तुम मिलना नहीं चाह रही कितने दिन से देख रहा हूं, पहले तो ऐसा नहीं होता था।"

"हां नहीं मिलना मुझे और वैसे भी मिलके करना क्या है?"

"ऐसा है क्या?"

"क्यों तुम खुद सोचो क्या किया है हमने साथ मिल कर, टाइम जाया और कुछ नहीं।"

"तो क्यों नहीं की कुछ और?"

"क्योंकि तुमने करने ही नहीं दिया।"

"मैंने कभी किसी चीज के लिए नहीं रोका ठीक है।"

"साथ देने की बात कर रही हूं मैं। कब किस चीज़ में दिया है मेरा साथ सोच के बताना?"

"यार मैं मेरा भी कुछ नहीं कर पा रहा हूं। चार साल से वहीं का वहीं हूं। सैलरी भी नहीं बढ़ी है। अभी आ रही हो या नहीं?"

"नहीं आ पाऊंगी।"

मूड फैमिली की कुछ बातों से परेशान था पैसे उनको दूं या अपने काम में लगाऊं बहुत कंफ्यूज थी। माइंड में यही बात घूमती रही ऑफिस में भी पूरे दिन। शाम को होते होते मैनेजर ने भी सूना दी। रूम पर आ कर उसकी याद आ रही थी बार बार सोच रही थी नहीं करना अब मैसेज फिर भी कर ही दिया 6: 45 pm पर "हेलो", ऑनली वन टिक डीपी तो दिख ही नहीं रही थी मैंने दूसरा मैसेज किया। कॉल की

नहीं, यहां भी ब्लॉक हुई तो हर्ट होगा। और फिर बार बार फोन उठाके देख रही थी लगा उसने ब्लॉक कर दिया है शायद। कोई नहीं अब ना करे कुछ तो ही अच्छा है। बहुत रोना आया मुझे कि अपने राह ए मंजिल में बिल्कुल अकेली हूं मैं। आज बहुत दिन बाद ऐसे रोई शायद कोई होता जो मेरा दर्द समझता तो मुझे उतना दर्द फील नहीं होता। मगर जब भी मुझे किसी के साथ की जरूरत हो तब मैं बिल्कुल अकेली होती हूं। दो घंटे बाद उसका मैसेज आया, "कल बात करुंगा।"

"क्यों? योर विश।"

"थैंक्स।"

उसका मैसेज देख कर थोड़ा सुकून मिला लेकिन उसने बात ही नहीं की तो बुरा लगा। कुछ देर बाद मैंने फिर मैसेज किया

"आज मैं थोड़ी अपसेट थी इसलिए बार बार याद आ रही थी तुम्हारी।"

"मैं उस से भी ज्यादा हूं तुम सोच भी नहीं सकती, तो प्लीज़ खाना खाओ, सो जाओ आराम करो।"

मुझे उसकी टेंशन की चिंता हो गई। अपनी भूल कर पूछा उसे, "क्या हुआ? कहां हो तुम?"

उसने मैसेज देखे भी नहीं। मुझे कॉल करने का मन हुआ फिर सोचा वो घर हो सकता है। आज उसकी शादी की दूसरी सालगिरह है। मैं बिना कुछ खाए पीए ही रोती हुई सो गई। फिर दूसरे दिन उसने मैसेज किया

"कहां हो"?

मैंने भी सीन नहीं किया। फिर शाम को कॉल की उसने। मैंने सुना दिया –

"अब तुम पूरी तरह से चले जाओ मैं जानती हूं सोचती हूं पर फिर भी जाने क्यों? एक उम्मीद होती हैं। फील होता है कोई मेरा है यहां। तुम कुछ परसेंट तो मेरे होंगे! मगर अब नहीं एक परसेंट भी किसी और का है वो सौ प्रतिशत उसे मुबारक। तुम कभी मेरे बुरे टाइम में मेरे पास नहीं होते कभी नहीं। एक दो बार को छोड़ कर मैंने हमेशा ही देखा है तुम या तो कॉल नहीं उठाते या सीधा मना कर देते हो या ब्लॉक ही होती

हूं मैं। खैर तुम्हारी इस गैरमौजूदगी ने मुझे अकेले प्रॉब्लम झेलना सिखा दिया है। तो कृपया करके अब आप दूर हो जाओ पूरी तरह से लॉक करके ब्लॉक करके जाओ हमेशा हमेशा के लिए।"

उसका रिप्लाई था

"जो तुम्हें ठीक लगे"।

(और फिर मैं ब्लॉक)

(पांचवें दिन)

"वैसे तो तुम्हें एक मैसेज करने की भी फुरसत नहीं होती और कल कैसे इतनी कॉल करे जा रहे थे।"

"कहां बिजी जा रही थी?"

"क्यों बताऊं?"

"आधे घंटे से ज्यादा हो गया बिजी, बिजी।"

"छाया दी थी फंक्शन है उनके घर, बुला रही है।"

"चली जाना।"

"एक तो वैसे ही दिमाग ख़राब था ऊपर से तुमने और कर दिया।"

"तो क्यों बात कर रही हो मुझसे?"

"दिमाग़ में उथल पुथल चल रही है इसलिए।"

"तो मैं क्या करूं?"

"बात करो।"

"मैं तुम्हारी तरह नहीं हूं बातों से कुछ कर सकूं।"

"वो बात नहीं है। तुम बस बात करो, मेरी सारी प्रॉब्लम खत्म, सुकून मिलता है।"

"मुझ में ऐसा कुछ खास नहीं है।"

"मैं खास मानती हूं।"

"मत मानो, मैं कुछ नहीं हूं।"

"तो प्रूव करो।"

"और कैसे करूं?"

"क्यों मेरा दिल मानता है कि कोई है मेरा यहां?"

"कोई है तो उसको ही बोलो मैं कुछ नहीं और ना ही मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत है।"

"पता है।"

"हां तुम्हें तो सब पता होता है। मुझे तो कुछ बताने की ज़रूरत ही नहीं है। तुम सब तो जान जाती हो। मैं क्या करुंगा। जैसे मेरा माइंड तुमने ही लिखा हो।"

"तुम जाना चाहते हो ना!"

"मैं कहीं जाना नहीं चाहता।"

"मुझसे दूर?"

"हां चाहता हूं।"

"तो ऐसा कुछ करो मुझे तुमसे नफ़रत हो जाए।"

"करने की ज़रूरत ही नहीं है मुझे तुममें कोई इंटरेस्ट ही नहीं है ना तुम्हारी कोई ज़रूरत है।"

(सुनके बुरा लगा मगर खुद को संभालते हुए रिप्लाई किया)

"वो तो पता है।"

"हां तुम्हें सब पता होता है मैं चार लड़कियों से बात करता हूं।"

"ये स्ट्रांग रीजन नहीं है (मैं हंसते हुए बोली)।"

"यही है स्ट्रांग रीजन।"

"इस से तो कुछ नहीं हुआ, ये स्ट्रांग नहीं है, ये नहीं है स्ट्रांग। तुम जाना चाहते हो तो पूरी तरह से जाओ लॉक करके ब्लॉक करके हमेशा हमेशा के लिए।"

"तुम कर दो ब्लॉक।"

"मैं नहीं कर सकती तुम ही करो।"

"तुम करो।"

"मैं नहीं कर..... ।"

"क्यों नहीं कर सकती?"

"नहीं कर सकती , तुम कर सकते हो।"

"तुम करोगी।"

"नहीं कर सकती, तुम कर सकते हो।"

"कैसे?"

"कर सकते हो।"। (कॉल काट दी उसने।)

और फिर ब्लॉक कर दिया।

सोच सोच के। हँसी भी आती है और हर्ट भी होता है कि तुम मुझे प्रॉब्लम में देखते ही मुझे इग्नोर कैसे कर देते हो? सीधा ब्लॉक। पता है एक बार बस बताया था तुमको मेरा रिचार्ज ख़त्म हो गया है। तुमने सीधा ब्लॉक कर दिया। जबकि मैंने बताने के तुरंत बाद कर लिया था कि कहीं तुम कर ना दो। और अब मैं इतनी टेंशन में हूं अपनों से लड़ रही हूँ सपनों के लिए ऑफ़िस रोज़ सा ही सुन रही हूँ। तुम्हें बता दिया मैं अपसेट हूं इसलिए तुम्हारी याद आ रही है। तुमने बात कल पर टाल दी और कल आते ही बहाना बना कर ब्लॉक कर दिया। (उसने मैसेज सिर्फ सीन किए कोई रिप्लाई नहीं।)

अध्याय 12

हर बार उसके ऑफ पर कुछ ना कुछ बनाती थी। इस बार कॉलिंग ब्लॉक हूं या नहीं कर रखी। सोचती रही कॉल करूं या ना करूं? इतना सब कुछ सुनने के बाद तो मन नहीं हो रहा था। मगर मेरा मन मेरी कभी माना ही नहीं। क्या पता वो वेट कर रहा हो मेरे कॉल का। की तो सोच रही थी वो ना उठाए तो अच्छा है।

मेरे पास पैसे नहीं थे तो कुछ बनाई नहीं थी। शायद वो वेट कर रहा हो इसलिए कॉल की थी। तो पाया हम यहां भी ब्लॉक थे। जान कर भी मन नहीं भरा तो फ़िर से की एक और कॉल। (जिस नंबर से आप संपर्क करना चाहते हैं वो अभी व्यस्त है।)

नेक्स्ट डे मैंने मैसेज किए तुम मेरे पास अब कभी कॉल या मैसेज मत करना, मेरी ज़िंदगी में अब तुम्हें भूल कर ही सुकून आएगा। पूरी तरह तो कभी भूल नहीं सकती कुछ ज़ख्म कभी नहीं भरते। हां कुछ राहत ज़रूर मिलेगी। अब किसी पर यकीं नहीं होगा। शादी करने का तो बिल्कुल ख़्याल नहीं आता। बस यही मलाल होता है बार बार, मेरी तरह क्यों नहीं चाह सके तुम मुझे। अगर तुम्हें साथ नहीं चलना था तो मेरे पास क्यों आए?

उसके बर्थडे को लेके बहुत उत्साहित थी मगर अंत में यही होता है हर बार कुछ दिन पहले लड़ाई हो जाती है। इस बार भी हो ही गई थी। मैंने दो दिन पहले कॉल की मार्किट जा रही थी तो आता तो आ जाता। उसने तो ब्लॉक कर रखा था मैंने फिर भी दो कॉल की। उसने कुछ मिनट बाद की। मैंने भीड़ में सुन नहीं पाई कॉलर ट्यून। मैंने फिर की तो हम तो ब्लॉक थे ही। कोई नहीं जाने दो वैसे भी मैं वापस आ रही थी। अब नहीं करूंगी बर्थडे पर भी। करूं ना करूं ये सोच रही थी कि ना करूं तो ही अच्छा है।

मैंने नेहा को बोला "लेट करूंगी।"

नेहा बोली, "नहीं फिर बोलेगा तुम्हें तो याद भी नहीं था। कर देना।"

"हां मैं रह पाऊंगी बिना करे!"

19 को पूरा प्लान था कि कल ऑफिस नहीं जाऊंगी। रात को नींद नहीं आ रही थी सोच रही थी 12 बजे तक जाग लूँ पर सो गई आंख खुली 12:45 पर, लेकिन मैंने कॉल नही की। उसके दूसरे नंबर से स्टेटस देख रही थी तो छुट्टी पर था। स्टेटस लगा था दोपहर का। क्या पता घर गया हो इसलिए कॉल नहीं की। मैसेज किया कॉल करने को बार बार आंख खुल रही थी कि करूं क्या पता घर होगा रात में सही नहीं है। फिर छः बजे की। पुराना नंबर ब्लॉक था। दूसरे से की उठाया। "हेलो।"

"हम्मम।"

मैने विश किया तो रिप्लाई भी हम्मम ही दिया।

"आज ऑफ है?"

"कल ले लिया।"

"क्यों? मैंने बोला नहीं था, मंडे को मत जाना।"

"मैं दो तीन बार से संडे का ही ले रहा हूं।"

"आज मत जाओ तो।"

"पागल नहीं हूं।"

"तो शाम को मार्किट में आ जाना।"

"नहीं आऊंगा बोल कर कॉल काट दी।"

"मैंने फिर मैसेज किए।"

मैं थोड़ी देर सोची इतने दिनों से छुट्टी का बोल रही थी 20 को लेकिन अब मैं भी जा रही हूं फालतू का दिमाग़ खराब रहेगा पूरे दिन। नहीं गई तो। चली गई।

शाम को आते में दो कॉल की ये नंबर भी ब्लॉक कर दिया था। कोई नहीं जाने दो। फिर मैं और शिवानी मार्किट जा रहे थे। एकदम सामने आके साइकिल खड़ी कर दी।

मैं गुस्से में देखती रही, (कितना एटीट्यूड है इस बंदे में।) साइकिल पर टिफिन थे मैं समझ गई (टिफिन देने का बहाने ले कर आया है।)

"ऐसे क्या देख रही हो।"

"सुबह बोल नहीं सकते थे?"

"क्या?"

"आओगे।"

"मैं तो खाना खाने आया हुं इस ढावे पर आटा खत्म हो गया है रूम पर।"

"चलो अग्रवाल स्वीट्स चलते हैं।"

"नहीं कहीं नहीं जाना मुझे। तुम जाओ।"

"ज्यादा नखरे मत दिखाओ।"

"मैं कुछ नहीं दिखा रहा।"

"चलो चुपचाप।"

"मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

"मैं लेके जा रही हूँ ना!"

"जाओ तो।"

"सुबह सोच रही थी कुछ मीठा बनाऊंगी।"

"मैं खाता ही नहीं मीठा।"

"मैंने नेहा को बोल रखा था कब से। तुम्हारा बर्थडे आने वाला है। पार्टी दूंगी।"

"कौन देगा पार्टी?"

"मैं।"

"तो दो जाओ।"

"बोल तो रही हूं चलो।"

"तुम जाओ मुझे नहीं जाना कहीं।"

"क्यों आए फिर?"

"मैं टिफिन देने।"

"उधर चलो चाउमीन खाने।"

"मलाई चाप खाना है मुझे तो।"

"चलो तो।"

"नहीं अब नहीं खानी।"

"चलो यार।"

"मैं जा रहा हूं।"

फिर रुका बोला "तुम जाओ मैं इस ढावे पर खाना खा के जाऊंगा।"

"तो चाप ही खा लो।"

"ओके चलो।"

आज पहली बार दूर दूर रहा।

"इतना दूर जा के क्यों खा रहे हो?"

"एक लड़का है जानने वाला।"

"मेरे जानने वाले भी हैं इधर वाले दो जो हैं वो मुझे जानते हैं।"

"वैसे तो तुम कभी किसी की नजरों से नहीं बचते? फिर आज क्यों?"

"तुम्हारी नज़रों से बचना है ना।"

"ओह! इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

पे करके मैं बोली "चलें!"

"जाओ तुम।"

"ठीक है जा रही हूं मैं, इतने भी टशन नहीं देखने किसी के।"

"कहां दिखा रहा हूं एटिट्यूड, मैं खा रहा हूं खुद ही छोड़ के जा रही हो।"

"मैं बोल रही हूं, जबाव ही नहीं दे रहे हो।"

"खाऊं नहीं फिर?"

खड़ा हो गया खाना रोक के।

"खा लो अब, मारूंगी फिर" (मैंने प्यार से कहा।)

अकड़ के बोला "मुझ पे क्या मारा नहीं जाएगा?"

उसके लहज़े में बेगानापन देख कर दूर हट कर चुपचाप खड़ी हो गई। चुपचाप खाता रहा।

खा कर बोला, "अब घर जाऊंगा जब लाऊंगा आटा।"

"कब जाओगे? मैं भी जाऊंगी?"

"कब आओगी? क्यों जा रही हो?"

"मम्मी बुला रही हैं।"

"क्यों?"

"पता नहीं।"

"ऐसे ही जा रही हो या हमेशा के लिए?"

"जाने दो तुम मैं अकेली चली जाऊंगी।"

"मैं तो ट्रैक से जाऊंगा हॉफ ड्यूटी करके। बाइक है नही।"

"वैसे भी नहीं जाना तुम्हारे साथ। आटा लाने को बोला था मैंने तो....।"

"लाया था, रखा रहा, फिर मैं ही खा गया।"

मैं जा रही थी घर तो रहा नहीं गया, कॉल करके पूछा।

"घर कब जाओगे? मैं जा रही हूं।"

"मैं नहीं जा रहा अगली बार देखूंगा।"

"मैं बोल रही हूं ना इसलिए।"

"देखूंगा चलो ओके लेकिन मैं सुबह 3 बजे ही आऊंगा। क्या लेके आओगी।"

"बताओ क्या लाऊं?"

"कुछ भी ले आना। फिर बोलोगी तो तुमने बोला इसलिए लाई हूं। आटे की बोल रही थी ना।"

"मैं वजन वाला कुछ नहीं ला पाती।"

आते में, घर से निकली बस स्टैंड पहुंच के उसको कॉल की

"कहा हो?"

"मार्किट हूँ।"

"चल नहीं रहे।"

"कल जाऊंगा बोला नहीं था।"

"मैंने भी तो बोला था आज का।"

"मैं कल जाऊंगा।"

"ठीक है।"

फिर बोला, "मैं आया ही नहीं हूँ घर, रूम पर हूँ। पागल बन गई ना!"

"हम्मम।"

फिर मैंने पहुंच कर कॉल की, "आ जाओ"।

"क्यों?"

"आ जाओ यार हर बार सवाल जवाब नहीं करते।"

"मुंह उठाके ऐसे ही चला आऊं! कोई भी कुछ बोल दे मैं भागा चला आऊं!"

"कभी कभी तो किसी का मन रख लेना चाहिए।"

"हां मैं नहीं आ सकता।"

"ठीक है। कुछ लाई हूं।"

"क्या?"

"मिठाई।"

"मैं नहीं आ रहा।"

आधे घंटे बाद कॉल करके बोलता है "आ रहा हूं"

फिर आया तो बोली "कॉल नहीं कर सकते थे लेट पहुंची थी मैं"।

"सो गया था 5 बजे जगा हूं।"

दूसरे दिन मेरी तबियत खराब थी कॉल की, ब्लॉक, दूसरी ब्लॉक फिर उसकी आई।

"क्या कर रही हो?"

"तबियत खराब है कल से निकली नहीं हूं बिस्तर से, बुखार आ रहा है।"

"तो दवा नहीं ली?"

"नहीं तुम लेके दे जाओ उठने का मन नहीं है।"

"मैं खाना बना रहा हूं दूध भी नहीं लाया, मैं नहीं आ पाऊंगा। वो कहां गई तुम्हारे साथ वाली उसे बोल दो।"

"वो खुद सो गई है आके।"

"बोल दो जगा के मैं दूध लेने जा रहा हूं।" (कॉल काट दी)।

(मैं इंतज़ार कर रही थी शायद आए। मालूम तो था वो नहीं आएगा। मैंने एक घंटे बाद कॉल की उसने उठाई ही नहीं। मैंने अपने मूंह से बोला था मेडिसिन दे जाना स्टोर से लेके मेरी तबियत बिगड़ी है। फिर भी बोल दिया "मैं नहीं आ पाऊंगा")।

दूसरे दिन शाम को कॉल की, "तबीयत कैसी है?"

"ठीक है नहीं भी।"

"ड्यूटी गई थी?"

"हां। खाना बना लिया अभी नहीं?"

"हम्मम अंडे बनाया हूं।"

"मुझे दे जाओ।"

"मैं नहीं आ रहा पैरों में दर्द हो रहा है।"

"कोई नहीं बहुत ठंड है मत आओ।"

मैंने फिर कॉल की देखूं तो सही बोलके, देके जाएगा कि नहीं! मेरा मन रखता है कि नहीं! "मुझे नहीं पता देके जाओ।"

"मैं नहीं आ रहा और किसी दिन।"

देखे हैं तुम्हारे और दिन, उसने कॉल काट दी इससे पहले कि मैं गुस्से में कुछ और बोलती।

तो मेरा मन कैसे उसे अपना समझे कब तक एक तरफा रिश्ता चलाए। फिर मेरा वीकऑफ आया मैंने भी कॉल नहीं की। अब कुछ भी हो करेगा तो अपने वीकऑफ वाले दिन भले करे।

पता नहीं क्यों मैं उससे कभी गुस्सा नहीं रह पाती। अगले दिन मेरा ऑफ था तो उसके लिए कुछ स्पेशल बनाने का मन करता रहा। ये बनाऊं वो बनाऊं। फिर साग ख़रीद लाई। उसे बहुत पसंद है।

मैं बनाने लगी टाइम देखते हुए (पहले कॉल नहीं करती उसी टाइम करूंगी। 6 बजे के आस पास वो उठा सके, और मैं बोल कर कॉल काट दूं।) बार बार फोन देख रही थी अभी टाइम है, फिर भी दस मिनट पहले ही कॉल कर दी। उसने उठाई

"साग बना रही हूं खाना मत बनाना।"

"मैं नहीं आ....।"

मैंने तो बस बोल कर ही कॉल काट दी। फिर उसने की।

"बहुत जल्दी थी कॉल काटने की!"

"बोलना था बोल दिया फिर बना रही हूं मैं।"

"आ रहा हूं अभी। तो यहीं उतर जाऊंगा। आ जाऊं सीधा कोई प्रॉब्लम?"

"नहीं है।"

"अपनी उस रूम वाली से पूछ लेना।"

"नेहा वाले में आ जाओ।"

"ओके।"

आया कॉल की मैं दरवाजे तक लेने गई। उसको नेहा के रूम में बिठाया।

मैंने जान कर वैसा ही स्टॉल लिया था जैसा उसकी वाइफ ने मेरी स्टोरी पर देख कर उसे सुनाया था। देखते ही बोला, "ये स्टॉल कहां से ली थी?"

"ये वो नहीं है, वो रील थी।"

"हां वो तो थी। फिर तुमने ये जान कर लिया ना!"

"मम्मी के लिए लिया था। भूल गई थी ले जाना रखा रह गया।"

"हां वो मुझे इतना सुना रही थी। क्या लगती है वो तुम्हारी? कौन है वो तुम्हारी? इसलिए ही कम बात करते हो मुझसे! क्या लगती है बताओ? पता नहीं क्या क्या बोल रही थी यार, फिर मैं तुमसे क्या बोलता। क्या लगती है कौन है तुम्हारी?"

(बोले ही जा रहा था बोले ही जा रहा था मैं बीच में ही बोली)– "बस बस।"

"चाय बना रही हूं पीनी पड़ेगी।"

"नहीं।"

"पीनी पड़ेगी।"

"हम्मम दो घूंट पी लूंगा।"

मैं लेके गई। शिवम से चैट कर रहा था।

"तबियत खराब है उसकी पैसे नहीं है उसके पास। मांग रहा है।"

"क्या हुआ है उसे?"

"सर्दी जुकाम।"

"मेरे पास भी पैसे नहीं थे कल।"

(मेरे पैसे सेंड करने लगा) "किस को किए हैं पैसे सेंड?"

"तुमको।"

"क्यों?"

"तुमसे लिए नहीं थे, भूल गई?"

"नहीं मार्किट जाती तब लेती"।

"मैं नहीं जाऊंगा मार्किट।"

"पता है मुझ को।"

"पता है मुझे, सब पता होता है तुमको। मक्के की रोटी! खरीद के लाई थी आटा?" (रोटी देख के बोला।)

"घर से लाई थी तुम्हारे लिए ही।"

"तुम नहीं खाती हो?"

"खाती हूं।"

"अच्छी बनाई है। मम्मी की तरह।"

"चूल्हे की अच्छी लगती है ज्यादा।"

मेरा बर्थडे भी याद नहीं था उसे मेरी फ्रेंड की स्टोरी देख कर विश किया। मैं समझ गई। पहले तो कॉल की मैं तब ही समझ गई स्टोरी देख ली होगी।

"पार्टी?"

"तुम दोगे।"

"पार्टी?"

"बोल रही हूं ना तुम दोगे।"

"ओके, यार पैरों में दर्द हो रहा है।"

"विटामिन डी के कैप्सूल या टैबलेट लो ना, कितनी बार बोली हूं।"

"तुम दे देना आज हैवी वाला, पार्टी, दोगी ना? आऊंगा शाम को, आ जाऊं?"

"आ जाना।"

शाम को मैं आई उसकी कॉल का वेट की, नहीं आई तो फिर मैंने ही की, "आओगे?"

"क्यों ?"

"आओ तो खाना बनाऊं।"

"मुझे भूख लग रही है मैं खाना बना ने जा रहा हूं। पार्टी दे रही हो क्या?"

"मुझे पसंद नहीं है बर्थडे पर पार्टी। किसी और दिन दे सकती हूं।"

"खाना बना रही थी मूली की भुजिया। आओ तो बनाऊं?"

"एक घंटा तो लग जाएगा। मुझे भूख लगी है।"

इतनी नौटंकी करके तो आया।

नेहा केक लेके आई थी ऑफिस से आते में। वो आया मैंने उसके रूम में ही बिठाया खाना खाया बोला जा रहा हूं। "रुकना पड़ेगा थोड़ा।"

"क्यों?"

"नेहा केक लेके आई है।"

"बताई नहीं थी।"

"मुझे खुद नहीं पता था।"

"तुम लोग काटो सब, मैं जा रहा हूं।"

"रुक नहीं सकते?"

"नहीं मैं जा रहा हूं। मैं जा रहा हूं यार, घर से कॉल आ सकती है, अभी मार्किट जा रहा हूं बोला था आई थी तो। फिर आएगी तो!"

मेरे मन में आया बोल दूं, जाओ। मगर सोच के चुप रही बोल दिया तो समझेगा, मैं कुछ गिफ्ट नहीं लाया इस लिए गुस्से में बोल रही है। मैं चुप खड़ी हो गई जब रुका।

फिर से बोलने लगा "नाराज़ हो तो हो जाओ मैं जा रहा हूं"।

फिर नेहा बोली– "इतने उससे बोल रही है तो रुक जाओ।"

चॉकलेट उठा कर अपने हाथ से खिलाने लगा। मैंने गुस्से में हाथ हटाया, बोला "मैं नहीं लाया इसलिए!"

आज तो मौका था कोई गिफ्ट लाने का आज तक कुछ नहीं दिया। ऐसा नहीं उसे देना नहीं आता मैंने देखा है उसे और लड़कियों को गिफ्ट खरीदते हुए। रेखा का बर्थडे था तो मुझे साथ ले जाके गिफ्ट लाया था उस के लिए। एक लड़की को बुके ले गया था। मैं हर बार सोचती थी मुझे कभी नहीं लाया कुछ। हां खरीदते हुए एक दो बार बोला तो था। तुम भी ले लो कुछ। मगर लाया नहीं कभी।

सुबह ऑफिस में आंटी मिली जो मुझे देखते ही गाती थी "व्याख्या तेरे बर्थडे में....."।

मैंने उनको बताया "आज मेरा बर्थडे सच में है" उन्होंने कई बार गले लगाया, माथा चूमा। एक हेयर पिन दी निकाल कर पर्स से "अभी तो यही है मेरे पास"।

"मुझे सिर्फ़ प्यार स्नेह चाहिए चीज़े तो हम खुद ख़रीद सकते हैं।" "अच्छा जी मुझे पता है मैम आपकी सोच।"

उस से कोई उम्मीद तो नहीं थी

फिर भी ना जाने क्यों बुरा लग रहा था। मैंने सुबह कॉल की (मेरी एक फ्रेंड पैसे मांग रही थी मेरे पास हजार कम पड़ रह रहे थे। तो उससे लेके दे दूंगी उसके शाम को निकाल कर दे दूंगी।)

उसने कॉल ही नहीं उठाई। शाम को ऑफिस से निकल कर देखा तो उसकी कॉल थी 1: 55 की। मैंने बैक नहीं की शायद अब घर पहुंच गया होगा। उसके स्टेटस से पता चला और उसने पहले बताया भी था कि वो संडे शाम को जाएगा ट्यूज़डे शाम को आ के ड्यूटी जाएगा। नाइट शिफ्ट हो गई है ट्यूज़डे से।

आके उसने भी नहीं की मैंने भी नहीं। अब मन कर रहा था अब कभी ना करूं उसकी हरकतों और बातों से। मैंने एक बार पूछा था मेरी याद नहीं आती है ना तुम्हें तो!

आती है, "जब कोई काम हो तब"।

"मतलब उसे मेरी सिर्फ़ मतलब के लिए याद आती है! उसके लिए मैं सिर्फ ज़रूरत हूँ"! (टीस हुई सुन कर)।

मैंने इंतज़ार करते करते भी विश कर ही दिया था नया साल रात 9:30 बजे।

अगर वो सुबह ही कर देता तो मैं आज छुट्टी करने के मूड में थी। उसने किया ही नहीं। मैं ऑफिस गई मूड अच्छा रहा। शाम को आते आते सिर दर्द होने लगा; उल्टी भी हुई।

नेहा की भी तबियत खराब हो गई। उन्होंने भी पकवान बनाए तो थे, खा नहीं पाई। मेरे पूरी रात सिर दर्द होता रहा। उसका मैसेज देखती रही व्हाट्सएप ओपन कर करके अब आया अब आया। शाम पांच बजे देखा। मैंने मैसेज किया "आ सकते हो मेरे पास?"

फिर तबियत ठीक नहीं लगी तो डिलीट कर दिया। फिर दूसरे दिन उसकी कॉल आई दोपहर को दो बजे कुछ बोला नहीं। फिर मैंने की।

"बोलना नहीं था तो कॉल किए क्यों थे?"

"उठाई थी तुमने कॉल?"

"हम्मम, तबियत ठीक नहीं है।"

"क्या हुआ?"

"बुखार, खाना भी नहीं खाई हूं कल से। अभी भी सोई हूं नहाई भी नहीं।"

"उठ जाओ तो।"

"वीक ऑफ है आज?"

"हम्मम।"

"खाना क्यों नहीं खाई अभी तक?"

"बनाने की हिम्मत नहीं है।"

"और कोई नहीं है साथ वाली?"

"नहीं है।"

"तुम आके बना दो।"

"ओके आ रहा हूं, क्या लेके आऊं, जलेबी?"

"नहीं।"

"फिर क्या लाऊं जूस ले आऊं।"

"हां।"

"किसका?"

"किसी का भी, पपीते का।"

"ओके एक घंटे मे आऊंगा।"

"ओके आ जाओ जल्दी।"

"उठ जाओ तो खाना बना लो नहा लो।"

जूस लेके आया, थोड़ी देर रुका, चला गया।

"फिर खाना नहीं खिलाओगी करके कॉल की। मैं उसे खाने का कभी मना नहीं कर पाती ना तो वो ऐसे ही बहाने ढूंढ लेता है करीब आने के।

उस दिन मैंने क्या क्या सोचा था। आ गया तो बुक पढ़ेंगे साथ में। तेल डलवा के चोटी बनवाऊंगी और भी पता नहीं क्या क्या। आज चार पांच घंटे रोकूंगी उसको।

वो आए, खाना खाए, थोड़ी देर बतियाए। और चल दिए।

मैं जा रहा हूं।

टाइम नहीं था तो आए क्यों?

रुक तो गया, डेढ़ घंटा हो गया। और कितना रुकूं।

"जाओ, जाओ।"

"भाई वेट कर रहा होगा।"

शिवानी घर गई थी फिर भी मैंने नहीं बोला उसे आने को। आज फ़िर मेरी तबीयत खराब थी इस बार अपने आप बोला– "आ जाओ दवा दिलवाऊं।"

पहले तो मैंने मना कर दिया। मेरे पास पैसे नहीं थे सोच रही थी सैलरी आ ही जाएगी शाम तक। फिर सोचा नहीं आई तो! फिर कॉल करके पूछा,

"पैसे हैं?"

"हैं।"

"रुक जाओ तो आ रही हूं।"

दवा दिला के रूम तक छोड़ के भी गया बाइक से। खुद भी लेके गया। उसकी भी तबियत ख़राब थी।

"चाय पीनी हो तो आ जाओ।"

"कल बना लेना तुम चाय आज मेरा दोस्त है रूम पर अब तो मेरा डे ही रहेगा। कल आऊंगा।"

अगले दिन उसने खुद कॉल की, "कॉल भी नहीं कर सकती!"

"अभी आई हूं मार्किट चली गई थी सीधी। आओगे ना!"

"हां।"

"आज देर तक रुकना।"

"क्यों कोई है नहीं क्या?"

"नहीं। हां मगर मूड में नहीं मन से आना।"

"मूड में नहीं आता, ठंडी ही इतनी है मूड ख़राब हो ही जाता है इतनी दूर आते आते।"

"दवा लेके आना खाना खा के, खा लेने को।"

फिर उसने कॉल की ढेड़ घंटे बाद, "मैं सो रही थी।"

"सो रही हो अभी तक! मैं तो आ रहा हूं। भूख लग रही है मुझे बहुत तेज।"

"आ जाओ खाना बना है।"

"ठंडा खाना खिलाओगी मुझे?"

"आ तो जाओ गर्म भी बना दूंगी।"

मैं उठके चाय बनाने लगी। आटा गूंथ लिया उसकी कॉल नहीं आई।

फिर मैंने की, "कहां रह गए चाय बन गई।"

"गोलगप्पे खाने का मन था।"

"खा के आओ तो जल्दी।"

वो आके फोन पर लग गया। मैं चाय रख के आई। उसे पीने को बोला कई बार। फिर मैं भी इधर उधर सामान संभालने लगी। वो फिर भी फोन पर ही लगा रह रहा था। मैंने एक बार और इशारा किया चाय की तरफ, फिर भी चिपका रहा फोन से। मैं अकेली बैठ के पीने लगी।

"मैं रुकूंगा नहीं"।

मैं पीने लगी तो बोला

"क्या हुआ।"

"कुछ नहीं।"

"कुछ तो हुआ है।"

"कुछ नहीं।"

"हाल ऐसा क्यों बना रखा है फिर?"

"कुछ नहीं वो ऐसे ही है।"

"मैं जा रहा हूं।"

"चाय तो पी लो।"

"मैं जाऊंगा।"

"जाओ तो।"

"हां जा रहा हूं।"

अभी जाओ अभी। (मैं एक दम गुस्से में छल्ला कर बोली,

उससे शायद पहली बार ऐसे बोली मैं)

तुरंत उठ के चल दिया। मैंने दरवाजे पर रोका पीछे से शर्ट पकड़ कर। बोला, "अब आऊंगा भी नहीं कभी"।

"खाना तो खाके जाओ।"

"नहीं खाना।"

"मैं आ रही हूं ऐसे ही नंगे पैर।"

रुका, बोला – "जाओ यार।"

"खाना तो खा के जाओ। ऐसा क्या हुआ जो तुम तुरंत उठ के भाग उठे? किस की कॉल थी?"

"घर पर बात कर रहा था, देखो "कॉल व्हाट्सएप मैसेज दिखाए" किसी का नहीं है घर के सिवा, वो लड़के की फ़ोटो भेजी थी बहन के लिए।"

"मैं रूम तक चली आऊंगी तुम्हारे पीछे ना रुके तो।"

"जाओ यार मेरा मन हुआ। तुम्हारा हुलिया देख के डर लग रहा था मुझे मैं खाना नहीं खा पाता।"

"क्यों?"

"पता नहीं डर लग रहा था मुझे।"

"मेरी तबियत खराब है इसलिए तुम आज मेरे साथ नहीं रह सकते! मेरी तबियत खराब देख के, घिन आ रही है तुम्हें!"

"ऐसा नहीं है।"

"कैसा है फिर?"

"अब तुम कुछ भी सोचो, मैं कुछ नहीं बोल रहा। तबियत खराब है कल दवा दिलवा दूंगा छुट्टी करुंगा कल मैं। ठीक है कल दवा दिलवा दूंगा।"

मुझे मालूम है उसने आज तक मेरे लिए कभी छुट्टी नहीं की और ना ही वो करेगा।

मैंने नंबर ब्लॉक कर दिया। मेरे कानों में मेरी ही आवाज़ आज पहली बार गूंजी "अभी जाओ अभी" शायद मैंने पहली बार उसको इतने गुस्से में अकड़ कर बोला था इसलिए।

सुबह को अनब्लॉक किया देखूं तो कॉल करता है कि नहीं, छुट्टी तो वो करने से रहा।

सुबह उसकी कॉल आई। मैं उठा नहीं पाई मैंने की तो उसने काट दी दूसरी की तो उठाई बोला "क्यों की है कॉल मेरे पास"?

मैं बोली "बोलो।"

बोला "गलती से लग गई थी मेरे से।"

ओके।

"अब ऐसा लगता है जितनी बार हम तुमको माफ़ी दिया।

उतनी बार हम खुद पे ज़ुल्म किया"।।

जब पता चला, तीन महीने से तुम मेरे जाने का इंतज़ार कर रहे हो बहुत हर्ट हुआ था। मुझे और आज भी सोच कर आंसु आ जाते हैं। तुम बोलते हो ना "मुझे माफ़ कर देना"। मैंने तो कर दिया लेकिन मेरा दिल कर पाया या नहीं या कभी कर पाएगा कि नहीं! पता नहीं।

मैं मानती हूं हमारा अफेयर चला आपकी तरफ़ से ये अफेयर ही था और मेरे लिए रूहानी रिश्ता। ये रिश्ता शुरु तो दोनों की गलती से....., ये स्वीकारती हूं मैं "मेरी भी गलती थी" मानती हूं।

मगर तुमने प्यार जगा कर प्यार नहीं किया। तुमने ये दुनिया का सबसे बड़ा गुनाह कर दिया।

इसके लिए शायद मैं कभी माफ़ ना कर पाऊं तुम्हें।

हां तुम्हारे वो खुशनुमा अहसास हमेशा मेरे साथ रहेंगे और हंसाएंगे मुझे मगर तुरंत बाद वो रुलाने वाली बातें याद आ जाती हैं। हंसती हुई आंखें अचानक से समुंद्र बन के फिर बंजर हो जाती हैं।

अध्याय 13

"अब हमारा बिछड़ना तकलीफ़ तो देगा मगर मुलाकातों से ज्यादा नहीं"।

हम मिले हों और तुमने मुझे रुलाया ना हो, ऐसा बहुत कम हुआ।

अब बस विशु मैं और नहीं देख सकती अपने अस्तित्व को मिटते, अपने शरीर को दुवराते, आंखों को अश्क बहाते, चेहरे को मुरझाते।

तुम कभी समझ ही नहीं सकते कि मैं अब पहले जैसी नहीं हो सकती कभी।

मुझे चीज़ें याद नहीं रहती, रिश्तेदारों से मिलने का बिल्कुल मन नहीं करता। सजना संवरना नए कपड़े खरीदना सब ख़त्म; यहां तक कि मैं इंटरव्यू भी मुंह उठा के देने चल देती हूं, कुछ तैयारी नहीं करती। रिजेक्ट होने पर भी मुझे बुरा नहीं लगता बस तुम याद आ जाते हो।

और सोचती हूं

"तुम साथ होते तो मैं बीमार ना होती।

तुम साथ होते तो कोई मुझे कुछ भी नहीं बोलता।

तुम साथ होते तो ये मुश्किल ना होती।

काश तुम साथ देते मेरा, तो मुझे ये दिन देखने नहीं पड़ते।

कोई मुझ पर कितना भी झल्ला जाए उसकी बातों से नहीं कुछ होता तुरंत तुम याद आ जाते हो फिर तुम्हारी बेकद्री बस वही हर दर्द में रुला देती है मुझे।"

सोचती हूं चाहती हूं अब तुम कभी कॉल ना करो क्योंकि तुम बता चूके हो काम पड़ता है तब ही मेरी याद आती है। मतलब तुम्हारे लिए मैं एक नौकर हूं। उस से ज्यादा शायद आपने कभी कुछ और समझा भी नहीं। आपकी मेरे लिए बेपरवाही तो

यही कहती है। तुम्हें आज बारह दिन हो गए मेरी याद नहीं आई। मैं अब की बार पहली बार रूठी थी। इस तरह मगर मैं तुमसे नाराज़ हूं तुम्हें तो पता भी नहीं चला।

हां तुम्हें ब्लॉक कर रखा है मगर रोज़ सुबह जगते ही तुम्हारा नंबर अनब्लॉक करके देखती हूं। दिन में भी देख लेती हूं।और सोने से पहले ज़रूर देखती हूं। तुम्हारी आज तक एक भी कॉल ना देख कर बहुत तकलीफ़ होती है। घुटने टेक कर बाहें फैलाके मूंह फाड़ कर रोते हैं ना लोग "बिल्कुल उस तरह रोने का मन करता है"।

तुम्हारी एक भी ब्लॉक्ड कॉल नहीं है एक दम झक्कास हो तुम। शायद मुझे भी अब कोई तकलीफ़ नहीं है अफ़सोस के सिवा। अफ़सोस ये है कि तुम्हें पहले बहुत पहले ही ब्लॉक क्यों नहीं किया। पहले कर देती तो शायद मेरी भावनाएं बच जाती मेरा वक्त बचता।

(पता नहीं क्या क्या ख़्याल चलते रहते थे माइंड में। सिर्फ उसके ही आसपास घूमते रहते थे मेरे दिलों दिमाग। जैसे वो मेरे सामने बैठा है और मैं सुनाए जा रही हूं।

क्या है ना! कल्पनाओं में सामने वाला इंसान हमारे हिसाब से चलता है।)

उसकी मिसकॉल थी मैंने ऑफिस से निकल कर देखा।

लेकिन मैंने वापस नहीं की। दूसरे दिन उसकी कॉल आई।

"मार्किट आ रही हो?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैं आ जाऊं फिर?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"अब नहीं मिलना तुमसे।"

"फिर कब मिलोगी?"

"कभी नहीं?"

"क्यों?"

"टाइम नहीं है हमारे पास।"

"कहां बिजी हो?"

"हूँ नहीं, होना है।"

"अच्छा मैं तुम्हारा टाइम खाता हूं।"

"पता नहीं लेकिन तुम पे जाया किया तो है मैंने। अब और तुम पर वक्त जाया करने से कोई फ़ायदा तो है नहीं। कुछ भी कर लो मिलेंगी तो वो गालियां ही।"

जब मैं गुस्से में बोलती थी वो बिना कुछ बोले कॉल काट देता था। आज भी काट दी।

दूसरे दिन मेरा ऑफ था। मैंने कॉल की, और सोच रही थी वो उठाए ना। उसने उठाई और बोला

"खाना खाना है मुझे आ जाऊं?"

"अब हम कभी नहीं मिलेंगे।"

"बकवास बंद। कोई है रूम पर?"

"हां।"

"क्यों साथ वाली क्यों नहीं गई?"

"ऑफ है उनका।"

"झूठ बोल रही हो तुम! नहीं है ना कोई।"

(सच है ये, आज तक मुझे झूठ सलीके से बोलना ही नहीं आया)

"मैं दे जाऊंगी खाना।"

"फिर खड़ा होना पड़ेगा! मैं आ जाऊं या नहीं?"

नहीं, नहीं बोल पाई और फिर फंस गई। अंकल थे घर पर रूम वाले। डर लग रहा था कहीं तब ही ना आ जाए वो।

9 को मैंने उसे कॉल की बोला "ड्यूटी नहीं गई?"

"मैंने छोड़ दी ऑफिस कब की।"

"क्यों?"

"यूं ही बस। आज दिल्ली जाने को बोलने वाली थी तुमसे।"

"हां बहुत ठंड थी सुबह।"

"पता है इसलिए नहीं बोला तुम्हारे वही एक्सक्यूज, मुझे गर्मी से डर लगता है, ठंड में बाहर नहीं निकलता, बारिश की किच किच पसंद नहीं मुझे, इसलिए मैंने बोला ही नहीं तुमसे।"

"और कभी चलेंगे।"

"हां कब? गर्मी में पिघल जाते हो तुम, ठंड में जम जाते हो, बारिश में बह सकते हो। और सब कुछ सही हो तो घर की लाखों टेंशन हो जाती हैं। वो भी ना हों कभी तो टाइम नहीं होता। इसलिए अब हम कभी नहीं मिलेंगे।"

"क्यों?"

"मरने वाली है क्या?"

"हां तुम तो यही दुआ करते हो। तुम्हारी दुआ का ही असर हो रहा है।"

"हां असर हो रहा है! मैं कभी गलत नहीं सोचा तुम्हारे बारे में।"

"हां सोचते नहीं कर देते हो।"

"अरे यार।"

"घर जा रही हूं कल।"

"कब आओगी?"

"कभी नहीं?"

"कब जा रही हो?"

"बताया ना कल।"

कितने टाइम?

"सुबह 6 बजे।"

"दिल्ली गेट से मिलेगी बस।"

"पता है।"

"एक काम करोगे?"

"क्या?"

"मेरे लिए कुछ कर सकते हो?"

"बताओ तो पहले करने लायक होगा जभी तो।"

"इसका मतलब तो नहीं करोगे!"

"अरे यार बताओ तो सही।"

"तुमने हां ही नहीं बोला।"

(मेरे से बोला ही नहीं जा रहा था कि बोल दूं ब्लॉक कर दो मुझे हमेशा हमेशा के लिए।)

वो तो रह ही लेता है मेरे बिना। रह तो मैं नहीं पाऊंगी। कॉल नहीं करेगा तो मुझे बुरा लगेगा। वो तो कर सकता है ब्लॉक मैंने बात घुमा के बोल दिया। "कल क्यों नहीं मानी थी मेरी बात।"

"ठीक है अब नहीं करूंगा।"

"ये क्या है कभी बीस दिन तक बात नहीं करते कभी बहुत बनके दिखाते हो, ये कब खत्म होगा?"

"तुम ब्लॉक कर दो मुझे मैं तुम्हें ब्लॉक कर देता हूं, ब्लॉक कॉल देख के भी कॉल बैक मत करना।"

"हां तुम तो यही चाहते हो।"

"अरे यार अब इसका समाधान तो यही है।"

"और उस दिन जो तुम रूम से भागे थे तो कॉल क्यों नहीं कि थी तुमने जब से?"

"मैं तुम्हारी गली में आया प्रमोद के साथ एक बार। सोचा कॉल कर लूं। एक दिन गोल चक्कर पे आया तब भी सोचा था कॉल कर लूं फिर सोचा पता नहीं क्या सोचोगी तुम।"

"सच तो ये है तुम्हें याद ही नहीं आती। पता है पेट में दर्द हो रहा है।"

"दवा नहीं ली?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं ली? ले लो यार।"

"मुझे नहीं खानी।"

"ऐसे ही वो नहीं खाती है।"

"कल कॉल क्यों नहीं उठाई थी?"

"अरे यार बहुत गुस्सा कर रही थी, बीमार है वैसे ही तीन दिन हॉस्पिटल रही है, खून बहुत कम हो गया है।"

मैं चुप हो गई मन में थोड़ी सी टीस हुई थी आज तक हमारी कभी फिक्र नहीं हुई थी मिस्टर को। चलो कोई नहीं किसी की तो है।

"और पलट के भी नहीं देखा था कल।"

"देखा था।"

"तुम मुड़ गई थी जब तक।"

"टाइम नहीं है ना मेरे लिए तुम्हारे पास तो एक काम करो।"

"मेरे पास किसी के लिए टाइम नहीं है, ऐसे ही वो बोलती है।"

"बीच में किसी और को क्यों ले आते हो हमेशा?"

"अरे यार मेरे पास मेरे लिए भी टाइम नहीं है, अब बोलोगी अपना सोच रहे हो।"

"हां ठीक है नहीं है तो एक काम कर दो।"

"बोलो। मैं रख रहा हूं।"

"बोल रही हूं ना।"

"हम्मम बोलो।"

"कैसे बोलूं यार।"

"अब तुम बोलोगी नहीं।"

"मैं रख रहा हूं।"

"जो इन्फेक्शन मुझे हुआ है वही तुम्हारी वाइफ को हुआ है।"

"कैसे?"

"तुमसे।"

"क्या?"

"हां ऐसे ही होता है।"

"तुमने और टेंशन दे दी मुझे ऐसा क्या हो गया है जो मेरी वज़ह से सब बीमार होंगे। वो भी ऐसी रहती है डॉक्टर बता तो रही थी उसे इन्फेक्शन हो गया है। दवा भी नहीं खाती है वो।"

अपनी वाइफ के लिए तो झटपटा गया वो। थोड़ा मुझे अजीब लगा।

"हां अब तो टेंशन होगी ही तुम्हें? मेरे लिए तो कुछ हुआ ही नहीं है! पता है! जब उनको दोबारा देखा तो मैं शॉक्ड हो गई थी; चेहरे का नूर गायब था मुरझाया हुआ बिल्कुल। तुमने उन्हें भी ऐसा ही कर दिया।"

"बस करो डर लग रहा है। मुझे ऐसा क्या हो गया है? लॉकरूम में हूं मैं कभी बात नहीं किया ऐसे यहां खड़े हो के सब देख रहे हैं।"

"अरे सर" पीछे से आवाज़ आई उसको बोल रहा था कोई। "ठीक है रख रहा हूं।"

"ठीक है।"

मैंने दोबारा कॉल की

उठा के बोला, "अब क्या है?"

"और तुमने ये क्या बोल रखा है तुम्हारा तलाक़ हो रखा है?"

"क्या? कौन बोला तुम्हें?"

"तुमने किसी से बोला है तब ही तो बोला कोई।"

"पागल हूं मैं।"

"ऐसे ही कैसे बोल देगा कोई किसी को तो बोला है तुमने। तब ही तो मुझे पता चला। वो भी एक नहीं दो तीन लोगों ने पूछा है मुझसे?"

"मैं अंदर जा रहा हूं कल बात करुंगा। टाइम हो गया।"

मुझे पता था मैं वापस आऊंगी फिर भी मेरी आँखें आज रह रह के भरे जा रही थी जैसे मेरा मुझसे सब पीछे छूट रहा हो।

हम अब कभी मिल नहीं पाएंगे जैसे। मेरी हालत आज पिछली बार हम जब बिछड़े थे, ऐसी ही हो रही थी।

जाने क्यों लग रहा था हम कभी नहीं मिलेंगे जबकि मैं जानती हूं मैं चाहूं जब उस से मिल सकती हूं। फिर ये बिछड़ने वाला एहसास क्यों?

उसकी कॉल कटते ही मैंने उसे मैसेज किए

"मेरे लिए कुछ और तो नहीं कर सकते आप बस ब्लॉक कर देना हमेशा हमेशा के लिए; तो शायद मैं तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर सकूं। तुम बहुत आसानी से कर सकते हो, इतना तो कर देना प्लीज़।

बस इतना याद रखना ये क्रैक माइंड कभी खुश नहीं रह पाएगी, किसी को अपना नहीं मान पाएगी। किसी पर यकीं नहीं कर पाएगी। रोज़ दुआओं में मौत मांगती हूं इतनी बेबस हूं कि सुसाइड भी नहीं कर सकती। मेरे इतने चाहने के बाद भी तुम सबके सामने रोते रहते थे कि कोई तुम्हें नहीं चाहता। पता नहीं तुम्हारी वाइफ तुम्हें कितना चाहती है लेकीन ये क्रैक माइंड तुम पर सब कुछ लुटा चुकी है। अब ना कोई मेरे साथ है और ना कुछ मेरे पास।

तुमने मुझे प्यार के लिए कितना तरसाया है तुम मेरे इस दर्द तक कभी पहुंच ही नहीं पाओगे। मुझ पर बस इतना कर्म कर दो हमेशा हमेशा के लिए ब्लॉक कर दो मुझे।

सुबह 6 बजे बस के लिए निकली। बस का वेट करते में इधर उधर जान कर नहीं देख रही थी। मगर फिर भी एक तलाश थी।

मुझे पूरी तरह यकीन था वो नहीं आएगा। ये जान कर खुद को उम्मीद में नहीं रख रही थी। उसे पलकें उठा के भी नहीं देख रही थी इधर उधर। मगर फिर भी आँखें ढूंढ रही थीं उसे शायद वो आए। मुझे आख़िरी बार देखने की उसकी भी चाहत हो। कुछ मीठा खिलाने की। आख़िरी बार गले लगाना चाह रही थी मैं मगर उसकी भी तो कोई चाहत होनी चाहिए। नजरें इधर उधर घूमती रहीं। बस चल दी।

घर पहुंची उसकी कॉल का अब भी इंतज़ार था। दूसरे दिन शाम को कॉल आई उसकी।

"मेरे तलाक़ के बारे में किसने बोला था तुम्हें? मुझसे भी बोलते हैं कुछ कि मैंने सुना है तुम्हारा डिवोर्स हो रखा है। तुम से किसने बोला बताओ ना!"

"छाया दी बोल रही थीं बहुत पहले।"

"हां मेरे को भी बोला ऐसे ही पहले बोलते थे एक बेटा भी है इसका इसकी दो दो शादी हो रखी हैं। पता नहीं कौन फैलाता है ऐसी खबरें! नंबर दो छाया का।"

"अभी एक और लड़की बोल रही थी। मुझे ही बहुत बुरा लगा था सुन के तुम्हारी वाइफ को कितना बुरा लगेगा"।

"तो कौन बोला तुमसे नाम क्या है उस लड़की का?"

"पता नहीं सुमन, सुनीता याद नहीं है।"

"उसे जानती नहीं हो तो वो कैसे बता गई तुम्हें?"

"वो मेरी फ्रेंड की फ्रेंड है मेरी नहीं लेकिन हां मेरे सामने बोली थी।"

"यार कैसे बोल रहे हैं लोग मेरे बारे में?"

"तुम खुद ही बोलते हो।"

"अच्छा!"

"और क्या।"

"मैं पागल हूं क्या जो बोलूंगा।"

"तो मेरे बारे में क्यों कुछ ऐसा नहीं बोलते लोग! तुम ही बोलते हो।"

मैंने कॉल काट दी। फिर वापस करके पूछा, "बस इसलिए ही की थी कॉल"?

"हां इसलिए ही की थी।"

मैंने अब तेज़ गुस्से में काटी कॉल।

(ये भी नहीं पूछा, पहुंच गई नहीं पहुंची, कोई प्रॉब्लम तो नहीं हुई रास्ते में। एक बार मिल के जाती, मैं इन सब बातों की उम्मीद में थी।)

अध्याय 14

10 दिन बाद मैंने ही कॉल की

"कहां हो? कैसे हो? तुम्हारी वाइफ कैसी है? वो प्रेग्नेंट है ना!"

"क्यों?"

"तुमसे पूछा था तो बताया क्यों नहीं था?"

"क्यों बताता तुमको मैं?"

कोई नहीं आपकी मर्जी लेकिन मैं समझती थी हर बात बताते हो तुम मुझे कुछ नहीं छुपाते, हां तुम छुपाते थे पर छुपा नहीं पाते थे ये मुझे लगता था। वैसे छुपा तो अब भी नहीं पाए ना! जान से मार दूंगी तुम्हें चाहे कुछ भी हो किसी का भी। तुम्हारी वाइफ के बारे में भी नहीं सोचूंगी। अब कुछ हो भाड़ में जाए वो, अरे उसे तो तुमसे प्यार भी नहीं था फिर भी तुमने उसकी कद्र की। अब मेरे हिस्से का लूंगी तुम्हें, मार दूंगी तुम्हें।

(फिर एक दम से होश में आके बोली)

जाओ तुम। जाओ मुझसे दूर। मेरी ज़िंदगी से बहुत दूर। जाओ तुम। अच्छे से रहो। अपनी लाइफ जिओ ऐश से।

लड़कियां कितनी बेबस होती हैं ना वो अपने इस टूटे दिल का दर्द अपनों के सामने बयां भी नहीं कर सकतीं। उनको महसूस तक होने देना नहीं चाहती। लड़को का क्या है दर्द में खुलेआम शराब पी सकते हैं। विधवा विलाप कर सकते हो। लड़की ऐसी हरकतें करेगी भी नहीं सिर्फ़ ये दर्द फील करने पर ही अपनों के द्वारा पता नहीं क्या क्या घोषित कर दी जाती है। उसे अपने दर्द में भी अपनों की फिक्र करनी पड़ती है।

"अरे यार मैं सब समझता हूं सबका।"

"बस करो।"

दो मार्च को मुझे इसकी साली की इंस्टाग्राम स्टोरी से पता चला, उसका बेबी हुआ है। उसने "मेरा क्यूट भांजा" करके बच्चे की पिक लगा रखी थी।

मुझे देखते ही एक दम से सीने में टीस हो उठी, अचानक से आंसू गिर गए ज़मीन पर। फिर ये भी सोचने लगी कोई और भांजा भी तो हो सकता है। और उसकी कॉल का वेट भी कर रही थी उसकी इंस्टाग्राम आई डी पर भी देख रही थी। उसने ऐसी कोई स्टोरी नहीं लगाई दो तीन दिन तक। फिर उसकी वाइफ पोस्ट डाली उसी बच्चे की फिर भी कन्फर्म नहीं हुआ किसका बेबी है। मैंने उसके पास कॉल की उसने उठा ली, मैंने उसकी आवाज़ सुनके कॉल काट दी। उसने वापस नहीं की।

तीन चार घंटे बाद मैंने फिर की तो ब्लॉक था नंबर। मैंने व्हाट्सएप मैसेज किया टाइम मिले तो कॉल करना प्लीज। उसने आधे घंटे बाद कॉल की।

"कहां हो?"

"घर हूं।"

"कब आए?"

"थर्सडे को।"

"इतने दिन के लिए कैसे आए कोई काम या...?"

"तबियत खराब थी इसलिए।"

"किसकी? कब जाओगे?"

"संडे को, मन कर रहा था थोड़ा आराम कर लूं। शादी ना कर रही?"

"कर रही हूं।"

"सच में?"

"यकीन नहीं हो रहा है? सगाई हो गई।"

"यकीं नहीं हो रहा, "खुश होके बोला" लेकिन उसकी आवाज़ थोड़ा भारी लगी।

"यकीन आ जाएगा जब सब देखोगे तब।"

"फोटो दिखाओ।"

"और तुम्हारे बालक बच्चे ठीक हैं?"

"हां बालक भी ठीक हैं बालक वाले भी।"

"मतलब?"

"सब ठीक हैं। फिर करता हूं।"

दो घंटे बाद मैंने मैसेज किए।

"ऐसा क्यों लग रहा है तुम मुझसे कुछ छुपा रहे हो।"

"नहीं बता नहीं पा रहा, छुपा नहीं रहा हूं। बाद में बात करुंगा।"

"बता दो।"

"अब तुमको पता चल ही गया है तो नहीं बताऊंगा ओके, बाय।"

"मुझे कुछ नहीं पता बस इतना पता है तुम कुछ छुपा रहे हो।"

"बस नहीं पता कार तो पता है ना!"

"बताना चाहो तो बता दो, योर विश। बस मैं समझती थी तुम मुझसे कुछ नहीं छुपाते।"

"हां छुपाता हूं ओके। लड़के का फोटो भेजो।"

"जो मैं तुमसे सुनना चाहती थी वो तुमने कभी सुनाया ही नहीं।"

मैं इंतज़ार में थी वो सबसे पहले मुझे बताएगा खुश हो कर।

मैंने अपने कजिन को फोटो सेंड कर दिया चेहरा छुपा कर।

"छुपा कर क्या कर लिया, वैसे अच्छा है, कांग्रेचुलेशन।"

"थैंक्स। नज़र लग जाती। क्या नहीं बता पा रहे हो?"

"कुछ नहीं।"

"नहीं बताना रहने दो।"

"ओके बाय।"

मुझे दो दिन बाद श्योर हो गया उसका ही बेबी है। "उसकी वाइफ ने एक फोटो डाली इंस्टाग्राम पर "जिसमें वो उसकी वाइफ और बच्चा तीनों साथ थे"।

पहले तो मुझे ये लगा कि मेरी खुशी छीन कर किसी और की झोली में डाल दी गई। ऐसा लग रहा था जैसे मुझसे फिर कुछ लूट लिया गया हो। मेरी आँखो से आंसू गिरने लगे।

(फिर मैंने उसे मैसेज किए गुस्से में)

"मुझे सच नहीं बता पा रहे ना तुम्हारी सात नस्ले बर्बाद होने की बददुआ दे दूंगी फिर। मेरे ही हाथों मरोगे तुम।"

"अरे पागल क्या बोल रही हो! मैं इतना बुरा हूं क्या। इतना गलत सोच रखती हो मेरे बारे में! कल बोली थी ,योर विश, फिर क्या याद करके ये वर्ड बोल रही हो तुम? तुम चाह क्या रही हो?"

"क्यों अब कैसे रिप्लाई आ गया! मरने का इतना डर है तुम्हें! तुम्हारे मुंह से बुरी बात भी सुनके खुश हुई मैं। मगर ये बात छुपाना! और ये कुर्ता ऑर्डर कर लेना (मैंने लिंक के साथ सेंड करके कहा।)

"क्या सुना दिया मैं?"

"तुम ठीक ही कब रहती हो। मुझे ज़रूरत नहीं है कुर्ते की मैं कभी पहना भी नहीं। अच्छा भी नहीं लगेगा। मेरी नस्ले बर्बाद करने का क्या मतलब है? मुझे तो जीना है अपने घर वालों के लिए।"

"मैं कंफ्यूजन में हूं यार। कोई नहीं पूछ ही लेती हूं। तुम पापा बने हो ना? मैंने कभी बददुआ नहीं दी तुम्हें।"

"बोलती हो कम है क्या? मैसेज करके बता दी क्यों बोल रही हो। फिर क्या रह गया अब?"

"तो बताया क्यों नहीं, बार बार पूछ रही हूं फिर भी नहीं बता रहे।"

मैंने मैसेज फिर से कर दिया "तुम पापा बने हो ना"!

"हा।"

"मैं सोच रही थी जब से पता चला तभी से कि ये सच होगा तो तुम मुझे ज़रूर बताओगे। तुम पूछने पर भी नहीं बता रहे। बुरा लगा मुझे। फोटो दिखाओ मुझे बेटे की। मुझे गोद में लेने मिलेगा।"

"कौन बोला बताना ज़रा? कुछ नहीं हुआ है तबियत खराब थी इसलिए आया हूं घर। कल जाऊंगा। ब्लड कम है, बोतल लगा है।"

"बस करो यार ये आख़िरी उम्मीद थी तुमसे।"

"उम्मीद किस का?"

"इंतजार कर रही थी तुम कॉल करके बताओगे।"

"टाइम नहीं मिला।"

"पहले तुम कोई बात सबसे पहले मुझे बताते थे और कोई कुछ बताता था तुम्हारे बारे में, तो वो बात तुम पहले ही मुझे बता चुके होते थे। मगर अब तुम बहुत आगे जा चुके हो। दूर दूर तक तुम्हारा मुझसे कोई वास्ता नहीं रहा। आगे बढ़ो खुश रहो।"

"सब तो बताता हूं। और ज्यादा ज़रूरी नहीं समझा बताना कुछ।"

"मेरे बारे में पता करती क्यों हो? कर ही लेती हो तो मेरे से उस बारे में बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अपना काम करो मेरे से कोई मतलब नहीं रखना अब कभी। मेरा नंबर डिलीट कर दो। मेरे पास कॉल मैसेज कभी नहीं करना। ना मुझे कोई ज़रूरत पड़ी आज तक कि तुम कहां हो। क्या कर रही हो, कभी ना जाना ना पूछा आज तक। तुमको क्या ज़रूरत है मेरे बारे में जानने की कुछ?

मैं आगे बढ़ चुका, तो क्या चाहती हो तुम ना खुश रहे?"

"मैं हजारों बार बोल चुकी ब्लॉक कर दो मुझे। मुझे सच को छुपाने से सख्त नफ़रत है। और तुम मेरी नफरत से वाक़िफ नहीं हो। अब भी मैं नहीं चाहती कि तुम्हें मेरी

नफ़रत से रूबरू ना होना पड़े। सो प्लीज इज़्ज़त से हमेशा के लिए ब्लॉक कर दो मुझे।"

उसने पहली बार कोई बात छुपाई थी मुझसे। ये जान कर मुझे इतना हर्ट हुआ अब सच में सब ख़त्म करना चाहिए मुझे। उसे जाने देना चाहिए अब।

"फिर उसने चार दिन बाद खुद ही मैसेज किए। मैंने कोई रिप्लाई नहीं किया।

दो दिन बाद फिर उसने एक रील सेंड की कॉमेडी वाली। फिर मैंने भी की।

(उसका एक झूठ हमारे रिश्ते के अंत के लिए काफ़ी था।) उसने उसे लाइक किया।"

बहुत सोचती रही ना करूं उसे विश करते करते रह गई। फिर 11 बजे मैसेज किया तुरंत पहुंच गया। आधे घंटे तक रिप्लाई नहीं आया तो मैंने डिलीट कर दिया। फिर मन नहीं मान रहा तो फिर से कर दिया। इस बार मुझे लगा उसने मुझे ब्लॉक कर दिया। मैंने कॉल की उसने रिसीव की बोला

"कौन, हेलो।"

"हैप्पी होली।"

"हैप्पी होली।"

"कौन" बोल रहे थे ना?"

"नहीं तो फोन नहीं देखा जेब से निकाल कर आवाज से पहचान लिया ना। क्या कर रही हो?"

"कुछ नहीं।"

"तबियत ठीक है?"

मैं कुछ नहीं बोली चुप रही, उस से क्वेश्चन कर दिया

"खाना खा लिए तुमने?"

"अभी नहीं। 8 बजे उठा था इन लोगों की कॉल गई थी तब से इनके साथ ही घूम रहा हूं कम से कम 30 लोग हैं इस बार तो पूरे शहर में घूम रहे हैं ये।"

"मैंने मैसेज किया था उसका रिप्लाई नहीं दिया।"

"मैंने देखा नहीं शायद ब्लॉक कर रखा है मैंने। और बताओ क्या काम है? अभी सब लोग हैं बाद में करता हूं।"

"बात कर रही हूं ना।"

"सब लोग हैं यार।"

"फिर मेरे पास टाइम नहीं होगा।"

"ओके अभी करता हूं पांच मिनट में।"

"बात कर रही हूं इसलिए भाव खा रहे हो ना! खा लो, खा लो। जी भर के खा लो। शायद फिर कभी खाने ना मिलें।"

"पांच मिनट क्या पांच दिन हो गए उसकी कॉल नहीं आई और ना ही मैसेज का रिप्लाई। अब लग रहा है कि मेरी बर्बादी की वज़ह में खुद हूं। उसको अब मैं कैसे दोष दूं। मैं ही उसके दिखावे को सच ना समझती, इसके इग्नोर करने पर पीछे ना पड़ती तो मैं कहां पहुंच गई होती। उसकी हंसी को इस तरह पसंद नहीं करती तो मैं आज टूट कर ना रोती। हैप्पी होली बोली खुद को कि सैड होली।"

मुझे यकीं सा हो गया था इसके बाद मेरा उस से बात करने का अब कभी मन नहीं करेगा। इस बार पूरी तरह भूल चुकी हूं

10 दिन बाद उसका मैसेज आया "हेलो" मैंने रिप्लाई नहीं किया। चार दिन बाद उसकी कॉल आई दो मैंने तीसरी रिसीव की

"मैसेज का रिप्लाई क्यों नहीं की हो?"

"जब तुम खुश हो अपनी दुनियां में तो खुश रहो मुझे डिस्टर्ब क्यों करते हो बार बार।"

"तबियत कैसी है?"

"उस से तुम्हें क्या? पहले ही तुम्हें अपनी तकलीफ बता के जो अपनी सेल्फ-रिस्पेक्ट की ठेस जेली है अब और सहने की छमता नहीं है। आज भी उसी में ही टीस होती है गलती की तुमसे अपनेपन की उम्मीद रख के। अब हम नहीं बोलेंगे कि तुम्हें हमारी

याद नहीं आती। अब आए भी तो हमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। ये मेरे बेसब्री की आखिरी सीमा थी जिसे अब मैं लांघ चुकी हूं। पीछे पलट के देखा मैंने तो तुम ने कभी दूर जाने नहीं दिया और करीब कभी रहे नहीं।

बार बार मुड़ कर आ जाते थे तुम। और फिर मैं भी लौट जाती थी तुम्हारे साथ। जो मैं अपने साथ गलत करती रही। मगर अब नहीं। पलट के देखती हूं तो मुझे मेरी गलतियां दिखती हैं। तुम्हें क्या बोलूंगी मैं, सब गलतियां तो मैंने ही की हैं।

पहली तुम पर यकीन करना दूसरी तुम्हें वक्त देना, तीसरी तुम्हें प्यार करना चौथा एंड सबसे बड़ी गलती तुमसे प्यार ओ वफ़ा की उम्मीद रखना।

लेकिन अब सब मर गईं, मर गई व्याख्या तुम्हारे लिए। सुना के मैंने कॉल काट दी।

"कितनी बेहया बेशर्म होती है मोहब्बत की इतनी बार लताड़े जाने पर भी मरती नहीं है"।

10 दिन बाद ही उसकी याद आने लगी 15 दिन बाद उसके पास कॉल कर दी मैंने। खुद को बहलाते बहलाते भी आंखों में नींद थी, कॉल करूं! नहीं सो जाओ नींद आ ही जाएगी कल देखते हैं। आज को टाल दो। पांच मिनट बहलाने में लगती फिर एक मिनट बाद ही मन करता 'सिर्फ आवाज़ सुन लूं। इसी कशमकश में मैंने कॉल कर दी, वो हेलो हेलो करता रहा। मैं कुछ नहीं बोली,

फिर मैंने मैसेज किया "व्हाट्सएप अनब्लॉक कर दो बात करनी है।"

उसका व्हाट्सएप मैसेज आया,

"कोई ज़रूरत नहीं है, अभी कॉल की, क्यों नहीं बोली। ब्लॉक नहीं है।"

उसने फिर कॉल की मैंने रिसीव नहीं की।

"जब कॉल पर नहीं बोली तो मैसेज क्यों कर रही हो, बात करनी है?"

"तुम्हें बुरा लग रहा है?"

"क्या है? बोलो क्या बात करनी है?"

"कॉल करो नहीं तो सो जाओ मेरे पास कॉल मैसेज नहीं करना अब प्लीज़।"

"तुम्हें नहीं करनी बात?"

"नहीं, तुम्हें कुछ बोलना है तो बोलो। मेरे से दूर रहो प्लीज़।"

दूर ही हूं।"

"मैसेज कॉल भी नहीं करना अब कभी।"

"याद आ रही थी सोच रही थी पूछ लूं कैसे हो?"

"मेरी मां मुझे माफ करो मैं जैसा भी हूं मुझे नहीं करनी कोई बात। मैं अच्छा हूं सब अच्छे हैं तुम दूर रहो तो। मैं ब्लॉक कर रहा हूं। फैमिली है मेरे साथ और भाई भी।"

"कहां हो तुम?"

"रूम पर, शादी कर रही थी करो मस्त रहो।"

"अब कभी नहीं करूंगी बोला नहीं था कि मैं अब किसी से शादी नहीं कर पाऊंगी।"

"भाड़ में जाओ।"

"भाड़ में ही हूं।"

"मुझे जीने दो प्लीज़।"

"तुम्हें भूलने नहीं दूंगी।"

"मैं कुछ नहीं बोल रहा हूं समझी।"

"तुम्हारी फैमिली वहीं है तुम्हारे साथ?"

"यस, आठ दिन हुआ है।"

"मुझे नहीं मालूम था सॉरी, अब नहीं करूंगी कॉल मैसेज।

प्लीज़ कभी नहीं भूल कर भी नहीं।"

"पता नहीं क्यों लगता है तुम्हें मेरी याद आएगी।"

"नहीं आती।"

"देखते हुए भी कि तुम्हें मेरी याद आज तक कभी नहीं आई।"

"मेरे पास ना कोई ज़रूरत ना कोई कमी है।"

"हां मेरा सब कुछ तुम्हारे पास जो है, कमी कभी नहीं आएगी निश्चिंत रहें।"

"ये फालतू बात मेरे से नहीं और ना कॉल ना मैसेज कभी समझी।"

"सोच रही थी अच्छे से बात करोगे, लेकिन सॉरी बाय।"

"यहां पर आना भी नहीं, घर रहो या कहीं जाओ।"

"आऊंगी जल्दी ही।"

"जहां मैं हूं वहां से दूर रहो काम का शौक़ है कहीं और करो जा के।"

"वो शहर तुम्हारी सल्तनत नहीं है और ना मैं तुम्हारी अमानत, मैं वहीं करूंगी तुम्हें क्या?"

"फैमिली के साथ हूं यार।"

"आज पता चल गया अब कभी कॉल या मैसेज नहीं आएगा मेरा डॉन्ट वरी। व्याख्या आपकी तरह सिर्फ अपनी खुशी नहीं देखती, ख्याल रखूंगी आपकी खुशी का।"

"मेरी मां मैं जैसा हूं वैसा रहने दे बस।"

हर बार थोड़ी सी अनबन होने पर उसका ब्लॉक करना आज भी जारी था।

समझ में नहीं आया मुझे। जब उसे बात नहीं करनी थी तो मैसेज क्यों किया! इतना ही इरिटेट होता है मुझसे तो कॉल क्यों उठाई। फिर ऐसे बोल बोलता है। इतना खुदगर्ज कैसे हो सकता कोई मर्द।

जब से दस महीने हो गए मैंने कोई कॉल मैसेज नहीं किया और ना ही उसका आया।

बहुत दिन बाद उसकी कोई बात इतना चुभी थी मुझे कि अब अनंतकाल के लिए दूर होना चाहने लगी थी मैं।

जब से पता चला कि उसने मुझसे अपने बाप बनने की बात छुपाई ऐसा नहीं था कि उससे बताई नहीं गई। सच ये था कि उसने छुपाने की हर संभव कोशिश की। छुपाने की कोशिश के बारे में पता चला तो मुझे उस पर पहली बार इतना गुस्सा आया।

और आज उन बातों को सोचूं भी तो ऐसा लगता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। मैंने किसी गैर से बिना खता थप्पड़ नहीं खाए हों जैसे।

कुछ अच्छा होने की उम्मीद, दिल खोल के मुस्कुराने की वजह।

मेरे शौक़, मेरे सपने, मेरा गुरूर लगता है जैसे अब कुछ नहीं बचा।।

"वो इतना कुछ ग़लत कर रहा था तो जाने देती उसको बहुत पहले ही।" साधना ने ग़म भरी नजरों से मुझे देखते हुए कहा।

जाना उसे था तो उसे जाना चाहिए था ना, बिना मुड़े।

मुझे तो अभी तक इंतज़ार था। वो सब कुछ छोड़ के आ जाए मेरे पास। मैं तो सब कुछ छोड़ ही चुकी थी उसके लिए। और जब भी वो वापस आता था मैं सब कुछ भूल के उसके गले लग जाती थी। ऐसा नहीं था कि यूं ही। तब उसे बहुत कुछ बयां करना पड़ता था और मेरा दिल उसके झूठे फसाने जान कर भी पिघल जाता। बस यही गलती हुई हमारे दिल से और हमसे।

उसकी फ्लर्ट फितरत से ही तो नफ़रत है मुझे स्माइल पे तो उसकी आज भी फ़िदा हूं।

अध्याय 15

खैर कोई नहीं ये सच में हमारा अंतिम वार्तालाप था। पहली बार उस से बिना बात किए एक महीना बीता फिर दो भी बीत गए। लगता है अब तो उम्र भी गुज़र जाएगी।

हां सोच कर तो आज भी मायूस हो जाती हूं कि कोई पूरी तरह से कैसे भूल जाता है और हमें क्यों नहीं आई ये अदा। जाने दो उसे हम अब पूरा फोकस अपने काम पर देंगे।

"प्रॉमिस कर कि उस से बात नहीं करेगी अब कभी। और मिलेगी तो सातों जन्म तक नहीं।" साधना गुस्से में बोली।

"इसके बाद तो मिली थी मैं।"

"इतने सुनने के बाद भी मिली थी!"

क्या करें किस्मत के मारे जो थे। घर गई घर के काम निपटाए। दो महीने में। दूसरे महीने में ही घर से प्रेशर बनने लगा जॉब के लिए। मैं तो हमेशा से ही दूसरे किसी शहर में जॉब ढूंढ रही थी अच्छी सैलरी मिले तो। और वहां कोई अपना हो तो। कोई कहीं नेहा के जैसा मिला ही नहीं। इतनी बेबस हुई थी मैं उस वक्त मेरा उसके शहर आने का एक परसेंट भी मन नहीं था। मम्मी जब बार बार पूछती, जॉब पर कब जाएगी? हर्ट होता सुनके कि इनको भी अखर रही हूं मैं यहां। दूसरे शहर में तलाशते तलाशते जॉब मैं फिर इधर ही आ गई। क्योंकि घर रुकना मेरा अब दुश्वार हो रहा था।

फिर से बेबसी में आना पड़ा मुझे वहीं।
जहां आ के रहा मैं कहीं का नहीं।।

अप्रैल में आ गई थी वापस। उसका ना कॉल था ना मैसेज। बताया नहीं उसको। फिर जॉब तलाशी। उसके मोड़ की तरफ गई ही नहीं।

मैंने नेहा से बोला था कई बार मेरा इस शहर से मन भर गया है। मिलन जयपुर में जॉब कर रहा था। वो आया था नेहा से मिलने तो मैंने उस से कहा – "एक हेल्प करोगे मेरी?"

"क्या मैडम बताइए।"

"मैं ये शहर छोड़ना चाहती हूं हमेशा हमेशा के लिए।"

" ठीक है मैडम हम जुगाड़ करेंगे।"

उन्होंने जॉब तलाशी।

मैं और नेहा जयपुर जाने का प्लान बना रहे थे। महीनों से बोल रहे थे। लेकिन इस बार उन्होंने बोल दिया। इस बार पक्का है। वो बोल रही थी आज जा रही हूं ड्यूटी। रिजाइन देके आऊंगी कल या परसों चलेंगे।

मैं पूरे दिन उसके बारे में ही सोचती रही, एक बार देख लूँ उसको आखिरी बार। शायद फिर हम कभी नहीं मिल पाएं। उसे व्हाट्सएप मैसेज भी किए दोनों नंबर पर। जानते हुए ब्लॉक हूँ। मन करता रहा किसी बहाने से कॉल करूं उसके पास। पैसे मांग लूं कल वापस सेंड कर दूंगी। लेकिन वो तो मना ही करेगा।

(वो अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकता था लेकिन मेरे कहने से कुछ भी नहीं।)

नहीं की कॉल।

शाम को नेहा को ले गई उसकी साइड वाली मार्किट। नेहा पूछ रही थी "क्या लोगी उस मार्किट से? फालतू के पैसे खर्च हो जाएंगे यार।"

"कुछ नहीं खरीदना ऐसे ही गेड़ियां मारने।"

"यार कुछ ना कुछ उठा ही लाएंगे हम।"

"नहीं आज कंट्रोल करना सीखेंगे। चलो आज बिना पैसे खर्च किए, पूरा मार्केट घूमेंगे।"

गए मस्ती मज़ाक करते हुए। नेहा कपड़े के स्टॉल के सामने खड़ी हो गई।

मैं उन्हें खींचते हुए बोली, "कुछ खरीदने नहीं दूंगी आज तुम्हें।"

मैं इधर उधर नज़र घुमाती घूम रही थी कभी इस स्टॉल पर कभी उस स्टॉल पर। खरीदना तो कुछ था ही नहीं। 25,30 मिनट्स घूम लिए वो नहीं दिखा। फिर हम आने लगे।

बाहर आ रहे थे वो अंदर जा रहा था भीड़ थी मार्किट में। दो क़दम तक नज़दीक आ के वो मुझे दिखाई दिया। मैं नजरें नीची कर के आगे बढ़ गई।

उसने पीछे से मेरे सिर में थप्पड़ मारा मैंने पलट कर देखा वो खड़ा मुस्कुरा रहा था। मैं भी ना चाहते हुए मुस्कुरा गई। फिर वो इस तरह मुंडी हिलाता हुआ पलट गया, हां ठीक है कि बताया नहीं "जो भी थी, पता नहीं किस बात की, हां, नाराजगी थी" उसे जताते हुए।

मैं भी पलट कर आ गई।

मैंने आते में बताया नेहा को, "मैं इसे ही देखने आई थी। मिल ही गया आज तो।"

"बहुत तेज से पड़ गया तुम्हारे सिर में" नेहा बोली।

"हां मारा तो तेज था मगर दर्द या तकलीफ़ थप्पड़ या किसी भी बार के ज़ोर से नहीं उसके इरादे से होती है।

और आज उसका इरादा अच्छा लगा मुझे।"

मैंने पहुंच कर उसकी कॉल का वेट किया। मगर उसने कुछ भी नहीं किया।

नेहा ने रिजाइन नहीं दिया। ऑनलाइन इंटरव्यू दिया। उसमें वो रिजेक्ट हो गई। फिर मैंने भी यहीं फिर से जॉब शुरू कर दी। मेरा इंटरव्यू क्लियर हो गया था। मैं अकेले के वजह से नहीं गई।

उस मुलाकात के 2 महीने बाद उसकी कॉल आई। (वैसे कॉल 10 महीने बाद आई थी) मैंने रिसीव नहीं की।

"पिछले 33 दिन में वो चार बार 8 कॉल कर चुका था"।

मैंने फिर भी ना रिसीव की ना बैक। फिर मुझे याद आया। जब मैं बहुत दिन तक बात नहीं करती तो उसके बीमार होने की ही ख़बर मिलती है। पूछ लूं हाल उसका, अक्सर उसे मेरी दर्द ओ ग़म में ही याद आती है।

मैंने व्हाट्सअप मैसेज किया। और ये सोच के भी मैं खुश होती थी कि खुशी शेयर तो हम किसी के साथ कर लेते हैं मगर ग़म शेयर किसी बहुत ख़ास से ही किया जाता है। कहीं तो वो सिर्फ़ मुझे याद करता होगा।

मैंने मैसेज किया –

"हम्मम कैसे हो?"

"बहुत दिन बाद रिप्लाई किया।"

"हम्मम सोचा पूछ लूं कोई काम तो नहीं है।"

"काम क्या? काम तो कुछ भी नहीं है। मैं ठीक हूं। तुम्हारी तबियत ठीक है?"

फिर उसने कॉल की, बातों बातों में चारों बार की कॉल्स का बताया कि उसने कब किस काम के लिए कॉल की।

पहली कॉल "एक लड़की का बर्थडे था, समझ नहीं आ रहा था क्या गिफ्ट लूं"। इसलिए की थी।

"अच्छा लड़की को गिफ्ट देना था।"

"अरे यार सर बुलाती है वो मुझे।"

"हां पता था मुझे काम के लिए ही कॉल करोगे तुम।"

"तुम ऐसा ही समझती हो यार।"

"तो तुमने खुद गिनाए हैं चारों बार के काम, मैं तो समझ रही थी मेरी याद आई होगी। मगर तुम्हें तो मेरी याद सिर्फ़ काम से आती है।"

"यही मान लो तो।"

"मानना क्या, सच यही है।"

"तो तुम भी कर लिया करो काम से याद। तुम तो काम से भी याद नहीं करती हो।"

"हमारे संस्कार ऐसे हैं ही नहीं, अपनी खुशी के लिए दूसरों को तकलीफ़ दें।

जो हमारे बिना खुश है उसे खुश ही रहने देते हैं"।।

"मैं खुश नहीं हूं समझी"

मैंने उसके मैसेज के स्क्रीनशॉट सेंड कर दिए।

("मेरे पास ना कोई ज़रूरत ना कोई कमी है।"

" मैं अच्छा हूं सब अच्छे हैं तुम दूर रहो तो।")

बोला, "ये मैंने कब बोला यार"

"तुम्हें नहीं याद मुझे याद है तुमने ही बोला है। कोई कमी नहीं है तुम्हारे पास, जानती हूं।"

"ऐसा नहीं है यार"

"मुझे कोई बात नहीं करनी, फालतू के उल्टा सीधा सुनाना नहीं चाहती मैं"

"सुना सकती हो यार, हक़ है तुम्हारा।"

"नहीं चाहिए अब" (दो घंटे छब्बीस मिनट्स बात की उसने बिना गुस्से के, नरमी से।)

फिर वही रोज रोज कॉल करना सुबह शाम रात में। फिर मिलने को बोला। इतने दिन बाद मिल रहे हैं शायद कुछ अच्छा करेगा। अच्छे से बात तो की पर कुछ नया या स्पेशल नहीं था।

वो जब भी बहुत दिन बाद बात करता, मार्किट आने को बोलता था, अब भी बोला शाम को आते ही।

(उसके फोटो कॉपी रखी थी मेरे पास तो। डायरी में रखे थे जब भी वो डायरी देखती फोटो निकल पड़ते। उन्हें देख के का कभी वापस रख देती कभी सोचती फेंक दूं। नहीं कूड़े में फेंकने से अच्छा है जला दूं। जलाना भी ठीक नहीं होता।)

उसने कॉल कर दी 10 महीने बाद तो सोचा उसे ही दे दूं। दूसरे मसले ही ख़त्म। आख़िरी बार मिल लेती हूं। कुछ क्वेश्चन भी मन में चुभ रहे थे। कॉल पर तो लड़ाई हो जाती है। मिल कर पूछ लूं।

फिर से मिले हम।

"क्या है इसमें।"

"तुम्हारे फोटो।"

"अच्छा वो वाले, मैं क्या करूंगा इनका।"

"मैं भी क्या करूंगी।"

"लाओ तो। कुछ खाते हैं चलो।"

"मुझे कुछ नहीं खाना।"

फिर रोड़ पर रेस्टोरेंट के आगे कुर्सियां पड़ी थी। "चलो उधर बैठ के बात करते हैं।' बैठो।"

"अंदर जगह नहीं है। मैंने पूछा।"

"अभी इन सब को जाने दो।"

वहां बैठे मुझे एक अजीब सा डर लग रहा था। किसी ने देख के इसकी वाइफ को बता दिया तो। ये तो आज भी बेख़ौफ़ हो के घूमता है मेरे साथ और मुझे डर लगता है।

अब मैं तुम से कभी बात नहीं करना चाहूंगी, भले तुम कहो कि तुम बात नहीं करोगी तो मैं मर जाऊंगा। मैं तब भी बात नहीं करूंगी। क्योंकि मुझे पता है तुम मेरे लिए पोटी भी नहीं कर सकते।

कुछ भी बोलने लगी हो।

मेरे पास कभी कॉल मत करना। क्योंकि शायद मैं अब रिसीव ना करूं कभी। क्योंकि मुझे पता चल गया है, "यकीन हो गया है" तुम मेरे पास कब, कहां, क्यों, कॉल करते हो।

मैंने तुम्हें अपनी वाइफ अपनी फैमिली के सिवा भी किसी

और के लिए एफर्ट करते देखा है। किसी एक के नहीं कइयों के लिए मगर मेरे लिए कोई एक एफर्ट भी नहीं किया। इसका मतलब ये नहीं है कि मैं लालची हूं, बात ख्वाहिशों की है मुझे चाहत नहीं थी कि मुझे कोई सोने की पायल दे या कोई मंहगा गिफ्ट दे, मैं तो भावनाओं को फील करने वाली लड़की हूं। चाहती थी –

"कोई काला धागा ही मेरे पैरों प्यार से बांधे, एक बार ही सही कोई बिना पूछे मेरी पसंद का कुछ लाके दे, मेरी पसंद का खाना बना के खिलाए"। मेरा सिर दर्द करने पर सिर दबाए। मायूस होने पर गले से लगाए।

मेरी बस यही ख्वाहिशें पूरी नहीं हुई। खैर अब मैं सब जान चुकी हूं। मेरी उम्मीदें मेरा भरोसा ही मुझे तकलीफ़ देते हैं और कोई नहीं। तुम कभी मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते। तुमने कभी साथ नहीं दिया मेरा तो अब छोड़ तो दो। अपनेपन का दिखावा ना करो।"

"क्या दिखावा कर दिया मैं?"

"जो भी किया वो सब और क्या था?"

"और क्या था! तुम्हें हमेशा यही लगता है। करता हूँ तो दिखावा। ना करूं तो......।"

"तुम कुछ ना करो। मुझे जाने दो। क्योंकि मेरे और तुम्हारे बीच, तुम्हारे कुछ खास अपने ही नहीं पूरी दुनिया है।"

"कोई भी नहीं है, समझी।"

फिर 10, 15 दिन बाद उसका कॉल आया।

"कहां हो?"

"क्यों?"

"तुम्हारी गली मैं आया था। दोस्त के पास जा रहा हूं, बुला रहा है।"

"पीने के लिए ना!"

"मैं नहीं पिऊंगा, अब नहीं पीता मैं।"

"झूठ मत बोलो ठीक है।"

"अपने पैसों से आज तक नहीं पी मैंने।"

"दूसरों के से पीना तो और भी गलत है।"

"नहीं पिऊंगा।"

"फिर जा क्यों रहे हो?"

"मिला नहीं हूं बहुत दिन से उस से। जाके आता हूं तब आऊंगा तुम्हारे पास खाना बना के रखना।"

"पी के मत आना।"

"नहीं पिऊंगा।"

मैं जल्दी जल्दी खाना बना ने लगी एक घंटे बाद उसकी कॉल आई। मैंने पूछा "कहां हो?"

"तुम्हारे गेट पर।"

(उसको देख कर ही लग गया वो पी कर आया था।)

आते ही बिस्तर पर लेट गया, आँखें बंद करके। पहले बोलने लगा मुझे चक्कर आ रहे हैं। फ़िर हाथों में दर्द हो रहा है सिर में भी। मैं उसका सिर दवा ने लगी।

"ऐसे दवाते हैं क्या सिर! रहने दो।" (थोड़ा अकड़ कर बोला।)

मैं गुस्से में हट गई। वो सो गया।

वो बहुत मासूम लग रहा था बहुत प्यार से उसके चेहरे से पसीना पोंछ रही थी मैं। प्यार आ रहा था उस पर। फिर सोच के गुस्सा आया कि मेरे इतने मना करने पर भी पी के आया है। मैंने बाल पकड़े और एक थप्पड़ मारा धीरे से, "पी के क्यों आए?"

"मैं नहीं पी रहा था, वो पीछे पड़ गया।"

"गए क्यों थे?"

"सिर दर्द कर रहा है यार, चक्कर आ रहे हैं।"

"आराम कर लो थोड़ी देर।"

"पानी।"

मैं पानी लाई "लो पानी पी लो।"

देख के आँखें बंद कर ली। मैं पास बैठी हाथ में पानी का गिलास लिए, उसे प्यार से देखे जा रही थी सोता हुआ अच्छा लग रहा था।

बोलने लगा, "क्या हुआ? क्या हुआ बता क्यों ना रही? दवा ले आओ।"

"मैं कंफ्यूज हुई, मैंने तो कोई प्रॉब्लम नहीं बताई इसे आज, फिर दवा की क्यों बोल रहा है!"

मैं उसे देखे जा रही थी पता नहीं किस को सोच के बोल रहा है।

फिर बिस्तर पर हाथ फिरा के ढूंढते हुए बोला "बाबू कहां है? घर क्यों नहीं आ रही हो?"

मैं समझ गई किस को सोच के बोल रहा है।

"घर आ जाओ?"

"उसकी वाइफ मायके थी ना"।

पानी मांग रहा था बीच बीच में। मैं लेके बैठी थी

"लो पी लो।"

आँखें बंद कर लेता फिर खोलके बोलता, "मैं जा रहा हूं रूम पर।" फिर बन्द करके बड़बड़ाता।

इस बार आँखें खोल के देखा तो सामने मैं थी मैं मुस्कुराने लगी। देखते ही बुरा सा मुँह बनाके बोला "हट्ट्"। तुरंत ही मेरी आंखो में आंसू से आए पर आए नहीं। हर्ट बहुत हुआ। गहरी सांस लेके मैंने इस दर्द को फील किया, बहुत गहरा था। और....।

जिससे अपनापन पाने के लिए मैं बरसों से तड़प रही थी चीख रही थी। चिल्ला रही थी। आज उसका बेगानापन मुझे पहाड़ सा ग़म तो नहीं, मेरे प्यार के रास्ते में पड़ा एक पत्थर लगा। जो इस रास्ते को जिंदगी भर ब्लॉक रखेगा।

अब ये कितना भी अपनेपन का दिखावा करे, अब इस हकीकत को स्वीकार लो व्याख्या ये एक परसेंट भी तुम्हारा नहीं रहा।

मेरा मन करने लगा आज इसको रोक लूं सारा सच सामने आ सकता है आज। इसके दिल में मेरे लिए क्या है क्या नहीं। कहते हैं ना...

"पिया हुआ इंसान एक दम खरा बोलता है।
बरसों से छुपे राज बेझिझक खोलता है"।

उस पर से बियर की बदबू आ रही थी बहुत बुरी। पर मैं उसके लिए बर्दाश्त कर सकती हूं।

"नहीं मुझे नीचे नींद नहीं आएगी और मुझे सुबह ऑफिस जाना है, जाने दो इसको एक मन कह रहा था"।

पर उसके मन की बात भी निकल के सामने आ सकती है आज सारी।

"मेरे दिल में इसके लिए जो फीलिंग्स हैं ख़त्म कर देना चाहती हूं मैं आज सारी की सारी।

बेशर्म प्रेम, अथाह प्रीत, को आज का सच ही मार सकता है हमारी।"

ये आज कड़वा कड़वा सच बोलेगा। शब्दों का ज़हर मेरे कानों से दिल तक जाएगा और दिल कड़वाहट को रूह में घोल देगा। और इसके प्रति मेरे प्रेम, स्नेह को मार गिराएगा।

"आज मैं पूरी तरह रिहा कर देना चाहती हूँ इसे।

रूह से, जहन से दिल से"।।

"मैं जा रहा हूं।"

"खाना तो खा लो।"

"भूख नहीं है अब।"

"थोड़ा बहुत तो खा लो।"

"बिल्कुल भी नहीं खा सकता।"

"जा रहा हूं।"

"जाओ तो फिर।"

"कॉल तो नहीं आई थी कोई मेरे फोन पे?"

"नहीं।"

"फ्लाइट मोड़ पर कर रखा हूं, जा रहा हूं कॉल आई होगी उसकी बोलेगी कहां थे।"

"जाओ।"

मैंने दूसरे दिन मैसेज किया बताऊंगी तुम्हें क्या क्या बोले थे तुम कल।

शाम को उसकी कॉल आई (हंसके बोला) "क्या क्या बोला था मैं।"

"मुझे हर्ट करने ही आए थे ना मेरे पास!"

"क्या बोला था ऐसा यार मैं?"

"याद नहीं है कुछ?"

"नहीं मैं ऐसा तो कुछ नहीं बोला था। क्या क्या बोला था बताओ ना?"

"अपनी वाइफ को मिस कर रहे थे।"

"हां उसे तो मिस करता हूं यार। वो मायके है ना।"

"क्यों नहीं आ रही है?"

"वो ऐसे ही नहीं आ रही बस "अभी मन नहीं है मेरा" बोल देती है। तुम्हें क्या हर्ट किया बताओ तो?"

"कविता को भी मिस कर रहे थे।"

(उसका नाम सुनते ही हंस के बोला) "उसका नाम भी लिया था मैंने? अरे नहीं उस से तो बहुत दिन से बात भी नहीं हुई है। क्या बोला था उसके बारे में?"

"मतलब तुमने जो जो बोला तुम्हें याद है ना?"

"हां थोड़ा थोड़ा।"

"सच में तुमने कविता का नाम नहीं लिया था।"

"तुम्हें क्या बुरा लगा बताओ ना?"

"जाने दो यार बताने से क्या फायदा मुझे समझ जाना चाहिए मैं समझ गई बस।"

"क्या समझ गई?"

"कि तुम्हें मेरी सूरत देख के घिन आती है।"

"ऐसा क्या बोला था मैं?"

"तुम आँखें बंद करके। "आ जाओ, दवा ले लो।" बोल रहे थे, आँखें खोलके देखा सामने मैं दिखी तो तुमने बहुत बुरा मुँह बनाके बोला "हट्ट"। बस वही हर्ट कर गया मुझे, बाकी सब तो बर्दाश्त कर ही रही थी मैं।"

"ऐसा नहीं है यार।"

"अब बस करो मैं सब समझ गई।"

"मैंने तुम्हे देख कर नहीं मुंह बनाया। उसको सोच कर बनाया था।"

"पागल मत बनाओ कोई किसी को मिस कर रहा हो और उसे ही देख के मूंह बनाएगा! बस करो।"

तुम अपने अतीत को नहीं भुला पाते हो। पूर्णतः किसी एक के नहीं हो पाते हो। बीच बीच में तुम्हें याद आती रहती है सबकी। लेकिन तुम्हारा प्रेजेंट कॉम्प्लेटली तुम्हारा है और तुम आधे इधर आधे उधर हो। बहुत हर्ट होता है वर्तमान को। वो जो तकलीफ़ महसूस करता है बयान भी नहीं कर सकता। और ज्यादा प्यार करेगा और भी ज्यादा एफर्ट करेगा। तुम्हें पूर्णतः अपना बनाने का। चाहेगा कि तुम पूरे के पूरे उसके हो जाओ।

जो बंटवारा तुमने मेरे साथ किया था अब किसी और के साथ मत करना।

नहीं मालूम तुम्हारी वाइफ कितना चाहती है तुम्हें। इतना ज़रूर जानती हूं वो फ्लर्टि या फ्रॉड नहीं है।

उसको तो तकलीफ़ मत देना। किसी को तो समेट के रख लो प्लीज़।

हां मुझे इंतज़ार रहेगा कि तुम कॉल करो मैसेज करो पूछो कहां हूं कैसी हूं। मगर तुम नहीं भी करोगे तो बुरा लगेगा मगर हर्ट नहीं होगा। तुम अपनी फैमिली के साथ खुश रहोगे अच्छे से रिश्ता निभाओगे तो खुशी होगी मुझे। किसी के तो पूरे के पूरे हो जाओ। किसी के तो समर्पण का महत्व समझ लो प्लीज़।

अध्याय 16

मैं रोज रोज सोचती वो अब कॉल नहीं करेगा, और मैं तो कभी करूंगी ही नहीं। लेकिन वो एक इंतज़ार भी रहता और वो एक दिन कर ही देता है कॉल।

उस दिन भी उसकी कॉल आई।

"क्या कर रही हो?"

"मार्केट आना चाह रही थी उसी मार्केट में से सेब लेने।"

"अरे हां, आज ऑफ है तुम्हारा। मुझे तो याद ही नहीं था। आ जाओ।"

"अब नहीं।"

"आ जाओ ना, मैं भी ले लूंगा कुछ।"

"ओके आ रही हूँ कुछ देर में।"

मैं जा रही थी एक किलो मीटर सा दूर था वो मार्केट मेरे रूम से। अकेली जा रही थी माइंड में पता नहीं क्या क्या चल रहा था।

(नहीं मिलना चाहिए इस से अब, अब मिलने और ना मिलने से क्या फर्क पड़ता है।)

चलते चलते देखती कहां पहुंची हूं। अभी तो यहीं। एक मोड़ पर लगा कि ये वही रास्ता है! कहीं मैं गलत तो नहीं आ गई! फिर चलते चलते पहुंची कॉल की वो मार्केट में अंदर था। मुझे गुस्सा आ चुका था कि एक तो लेने भी नहीं गया, बाहर वेट भी नहीं किया। और अंदर किसी लड़के से बात बनाने में लगा पड़ा है। मुझे यहीं से गुस्सा आ गया था।

"सूट पसंद करो, तुम्हारे लिए नहीं घर ले जाऊंगा।"

"साड़ी ले जाना कुर्ते से कलर मैच करके।"

"क्यों? किस को?"

"अपनी मिसेज को।"

"सूट दिलवा के आया था अभी पंद्रह सौ का।"

(मुझे कभी ढाई सौ वाला भी नहीं दिलवाया। लाल रंग का लाने को बोली थी। तब भी नहीं लाया। दूसरे दिन पूछ रहा था। "सूट क्यों चाहिए?"

"नहीं चाहिए।"

"अरे लाल रंग का बोली थी ना इसलिए पूछ रहा हूं।"

"कुछ नहीं वो रील थी अच्छी लगी तो सेंड कर दी।")

"साड़ी ले जाना ना, मैं जो कुर्ता लाई थी उस में कलर मैच करके।

"क्यों?"

"बहन की शादी में पहनना दोनों। कपल पोज अच्छे लगेंगे।"

"मैं कुछ नहीं ले जाता। अपनी पसंद से खरीदती है वो। पेमेंट करता हूं मैं बस।"

"इस बार ले जाओ। अपनी पसंद का भी ले जाना चाहिए किसी को कभी कुछ।"

"मैं नहीं ले जाता।"

मैंने गुस्से में दूर जाते हुए बोला 'हट्ट', जाओ।

"ये क्या सीख गई हो हट्ट, हट्ट करना?"

फिर वो दूसरी दुकान पर चला गया। अपना स्वेटर लिया। एक पुराने कपड़े की दुकान पर बोला

"दिखाओ"

"भाई लड़कियों के हैं।" दुकानदार बोला।

"लड़की के लिए ही, ये रही।"

"कहां है दिख नहीं रही।"

मुझे साइड करके बोला "इधर हो जाओ दिख नहीं रही हो दुकान वाले को।"

"कितने के?"

"150।"

"देख लो।"

"नहीं लेना।"

"और दिखाओ, देखो ये देखो।"

"मुझे नहीं लेना।"

"रहने दे भाई नहीं ले रही।"

फिर खाने को बोला कुछ खाना है। मुझे याद आया मेरे पास पैसे नहीं है। इसलिए मना कर दी मैं। फिर सेब के लिए बोला "सेब ले लो।"

"मैं बोली अच्छे नहीं है।"

पिछली बार सेब वो लिया था पे मुझ पर करवाया था। 4 खुद ले लिए तीन मुझे दे दिए।

किसी से फोन पर बोला "मार्केट हूं तुम कहां हो, आ रहा हूं"। बस ये सुन के मैंने ज़िद कर ली अब तो रूम तक ले जाऊंगी ज़रूर। वो वहीं से बोलने लगा चली जाओगी ना, जाऊं मैं, फिर थोड़ा चलके जा रहा हूं मैं सेब जबरजस्ती मेरे हाथ में थमाने लगा। मेरे बैग में टांग दिए मैं बैग छोड़ के आने लगी।

"रूम तक छोड़ के आओ, मुझे चाय पीना है तुम्हारे हाथ का।"

"ठीक है, पालक पकोड़े बनाओगी फिर?"

"हां चलो।"

आ गया चाय भी बनाई, मैंने पकौड़े बनाए, दोबारा पकौड़े देने आई, वो चाय पी के बैठा था।

"मैं जा रहा हूं वो गुस्सा कर रही है वीडियो कॉल कर रही है, सुना दिया मैं गुस्से में।"

उस दिन भी मोड़ पर खड़ा था। मैं गुस्से में थी, बोल दी जाओ तुम चली जाऊंगी मैं। वो तुरंत चला गया मैं भी बढ़ गई, दो क़दम चलके पलट के देखा वो दिखाई भी नहीं दिया।

(मैं ने गुस्से में कॉल की।)

"कितनी जल्दी पड़ गई ना जाने की।"

"तुमने खुद बोला जाओ मैं आ गया।"

"ना कुछ दिलवाया ना खिलाया।"

"बोला था ठीक है बोल दी पानी पीना है, पानी का बोला तो बोली गर्म पीना चाहिए, कपड़े दिलवा रहा था तो बोल दी मुझे नहीं चाहिए, अब मैं क्या करूं इसमें।"

पैसे दे रहा था "सौ रुपए"।

"ये किस लिए?"

"पैसे नहीं है तो! विदा समझ के ले लो।"

"आज से पहले दी है कभी?"

"तो अब तो दे रहा हूं।"

"खुद ही आगे बढ़ गई।"

"मैं इधर बढ़ आया।"

"तो छोड़ने तो आना था। छोड़ने भी नहीं आए ना!"

"मैं आ तो रहा था खुद ही मना कर दी।"

मैंने गुस्से में पता नहीं क्या क्या सुनाया। वो बार बार कॉल काटे जा रहा था। मैं बार बार कर रही थी। मैं पहुंच गई फिर खुद ही वीडियो कॉल की उसने।

"अब घर से कॉल नहीं आएगा?"

"शादी में गई है वो मेरिज होम में। विदाई की आदत नहीं थी मेरी किसी को देने की। मगर अब जब भी आता हूं तो घर देके आता हूं उसको।"

"हां पता है हमको क्यों दोगे।"

"किसी को भी नहीं देता था, आदत भी नहीं थी। अब आदत हो गई है 3 साल से।"

"तीन साल में मुझको कब दी है?"

"अरे वो मांगती है बिना दिए आता हूं तो बोलेगी मेरी विदा कहां है? फिर मैं देके ही आता हूं पहले ही।

यार तुमसे सच कहूं!

तुम साथ होती हो तो अच्छा लगता है। तुम केयर करती हो ना, अच्छा लगता है।

बाकी तो याद बस घर की आती है तुम्हारी याद आती है एक दोस्त की तरह अच्छी दोस्त हो तुम।

सच कहूं तो फीलिंग बस घर के लिए है। सिर्फ उसके लिए उसकी याद आती है। रात को 12:00 भी आ जाती है। कॉल कर लेता हूं मैं। उसको भी नहीं जताता कुछ।

तुम मुझे दोस्त लगती हो, और हम दोस्त रहेंगे।"

"दोस्त दोस्त फक्किंग दिस रिलेशनशिप।"

"क्या चाहती हो यार?"

"चाहती नहीं हूं चाहती थी।"

मैं चाहती थी तुम भी मुझसे प्यार करते।

मैं जहां भी बुलाऊं तुम ज़रूर पहुंचते।।

मैं प्रॉब्लम में हूं, तुम्हें बिना बताए पता चल जाता।

मैं चाहती थी मुझे भी तुम अपना फैमिली मेंबर समझते।

फैमिली की तरह मेरी इज़्ज़त का भी ख़्याल रखते।

मेरे लिए भी कभी किसी से लड़ जाते तुम।

मेरे लिए जितने इंपोर्टेंट तुम हो, तुम्हारे लिए मैं भी उतनी हूं, बताते तुम।

मुझे अपना बनाने से पहले मेरे हो जाते तुम।

पूछते नहीं "क्या चाहिए तुम्हें" समझ जाते तुम।

"क्या बोली?..... देखो मेरी तो लाइफ सेट है, बीवी है, बच्चे हैं तुम भी अपना सेट हो जाओ बाकी तो दोस्त रहेंगे हम।"

"फक्किंग योर फ्रेंडशिप। अगर कोई फीलिंग नहीं है ना मेरे लिए तो आज के बाद कभी कॉल मत करना, ख़त्म करो ये तमाशाई रिश्ता यहीं।"

"तुम ब्लॉक नहीं कर सकती मेरे लिए।"

"करूं ना करूं तुम अब कभी कॉल मत करना।"

"आज दिल समझ गया है। कब से संभाल रही थी इसे। अब संभल रहा है। हमको जिस से प्यार होता है हमें उस से प्यार चाहिए होता प्यार, यारी नहीं।

तुम्हें प्यार नहीं है। तो तू मेरा यार भी नहीं है। जिंदा रहने लिए प्यार को भी प्यार की ज़रूरत होती है। पता है तुमको?"

"यार तुम ही बताओ मैं क्या कर सकता हूं।"

"अपनी फैमिली को देखो। बीवी बच्चों को संभालो। ले आना अपने बीवी बच्चों को साथ रखो अपने। ससुराल नहीं रहना चाहती तो अपने साथ रखो। उनको तो खुश रखना, मेरी तरह ना तरसाना।"

"फिक्र होती है तुम्हारी यार। शादी कर लो ना तुम भी, परमानेंट किसी को अपना बना लो।"

"मेरी फिक्र का दिखावा मत करो। अब इस फिक्र से कुछ नहीं हो सकता। पता है, मैं बीमार होती हूं तो तुम याद आते हो। और लगता है तुम साथ होते तो मैं बीमार ना होती।

तुम साथ होते तो किसी की मजाल नहीं होती कि मुझे कुछ बोलता।

तुम साथ होते तो कोई तुम्हारे नाम से ना चिढ़ाता।

तुम साथ होते तो मैं मंजिल पा गई होती।"

"मैं जानता हूं तुम कुछ भी कर सकती हो, मैंने तुम्हारा सच में बहुत टाइम वेस्ट कराया है।"

"बस करो यार, अब कुछ वापस नहीं आ सकता, ना मेरा टाइम ना फीलिंग्स ना भरोसा। अब किसी पर होता ही नहीं है।"

(मेरा गला रूंध आया, रोने लगी थी मैं।)

उस दिन आखिरी बार रोई उसके लिए उसके सामने मैं।

उसके जाने के बाद ये सोच के बहुत रोना आया कि वो मेरे पास बस इसलिए आता है क्योंकि मैं उसकी केयर करती हूं। उसे वो अच्छी लगती है। बाकी मुझसे उसे कोई मतलब नहीं है। मैंने आज उसका नंबर हमेशा के लिए ब्लॉक कर दिया। आज फाइनली मैं उसे हर जगह से ब्लॉक कर पाई। पहले सिर्फ ये सोच के अनब्लॉक कर देती थी शायद उसे कोई ज़रूरत पड़ जाए।

मैंने उसे सौ, डेढ़ सौ तक कॉल कर रखी थीं। जब वो ब्लॉक कर देता था।

उसके हर नंबर पर कॉल कर करके देखती रहती थी। लेकिन वो खुद के याद आने पर ही अनब्लॉक करता था। भूलूंगी नहीं उसने मुझे कितना तरसाया था।

अब नहीं व्याख्या अब नहीं मिलना उस से कभी। (ज़ार ज़ार रोते हुई मैं खुद को संभाल रही थी)

"कुछ तो मरा था उस दिन मेरे लिए वो या उसके लिए मैं या उसके लिए मेरी फीलिंग्स। कुछ तो मरा था। जो खुद को संभालते हुए भी ज़ार ज़ार रोई थी मैं।

माना कि उसकी आवाज़ उम्र के आख़िरी पड़ाव तक भी पहचानूंगी मैं, उसकी याद जीवन के अंतिम क्षणों में भी आएगी।

मगर उसे पाने की चाहत और मिलने की तड़प अब मर ही जाएगी।

क्या है ना!.....

इश्क़ का मयार अगर संभाल कर ना रखा जाए तो निम्न से निम्न स्तर तक आ कर विलुप्त हो ही जाता है।

उसकी वज़ह से सब से नफ़रत हो गई मगर उससे आज भी नहीं हुई।

गुस्से में कुछ भी बोला मैंने उसे मगर दिल से कभी उसका बुरा नही चाहा। आज भी चाहती हूं कि वो बहुत अमीर हो जाए (बोलते में मेरा गला रूंध आया।)

साधना बोली "पागल अब मत सोचा कर उसके बारे में जाने दे भाड़ में, उसने दो साल से हाल भी नहीं पूछा अभी तक और तू...। उसके अमीर होने से तुझे क्या फायदा होगा?"

"खुशी होगी। जानती हूं उसे मेरी याद नहीं आती ना कभी आएगी।"

उसकी फ्लर्टी फितरत से ही तो नफ़रत है मुझे, स्माइल पे तो उसकी आज भी फ़िदा हूं।

साधना: उसे तुझसे कभी भी प्यार नहीं था।"

"वो तो बार बार कहता रहा, उसको हमसे प्यार नहीं।
हमको ही कमबख्त कभी हुआ ये ऐतबार नहीं।।"

साधना: " कोई नहीं जाने दे उसे भाड़ में। अपनी जिंदगी को जी, एंजॉय कर।

"मर तो मैं पांच साल पहले ही गई। अब बस इतना जीना चाहती हूं बिना बाप के मेरे दो छोटे भाई बहन आर्थिक रूप से मज़बूत हो जाएं बस। उसके बाद ये जिंदा लाश जल्द से जल्द मुर्दा बन जाए।"

साधना: "ऐसी बात नहीं करते पागल।"

"मैं ज़िंदगी की सच्चाई को इतने करीब से देख चुकी हूं कि अब जीवन और मृत्यु में अंतर नजर नहीं आता।"

"वो तो है यार। मगर जब तक जिंदा है खुश हो के जी।"

"अब ना उस से कोई गिला है मुझे, ना खुदा से ही कोई शिकायत। अब मैं खुश हूं या नहीं मगर संतुष्ट हूं।

अब स्वयं के लिए मुझे, मृत्यु के सिवा मोक्ष भी नहीं चाहिए।"

उसके पहले भी गुजरा था जीवन उसके बाद भी गुजरा है।
मरते हैं आशिक़ इश्क़ में कोई अभिभावक कहां मरा है।।